एक जीनियस की प्रेमकथा

एक जीनियस की प्रेमकथा
भैरव प्रसाद गुप्त

एक जीनियस की प्रेमकथा

1

शाम को जो कुछ हुआ था और कुसुम ने जो बात अपने मुह से कह दी थी, उससे राजेश उसी तरह तडप उठा था, जैसे कोई जिन्दा मछली आग म डाल देने पर तडपती है। उसने दोना काना मे उँगलिया ठूस ली थी और पागला की तरह सिर हिलाता हुआ वहाँ से भागकर सोने के कमरे मे जा बिस्तर पर गिर पडा था।

लेकिन कुसुम को यह बिलकुल अहसास न था कि उसन यह कैसी बात अपने मुह से निकाल दी थी। वह राजेश के पीछे पीछे ही धम धम पाँव पटकती हुई उसके कमरे मे पहुच गयी थी और कडककर बोली थी—तुम्हारे ऐसे नाटक मे बहुत देख चुकी हूँ! यह नाटक बन्द करो और साफ साफ मेरे सवाल का जवाब दो!

मर्माहत राजेश दाँत पीसकर बोला था—हट जाओ, कुसुम, हट जाओ तुम इस समय! वर्ना

—वर्ना क्या करोग तुम?—नाक फुलाकर, मुह टढा कर कुसुम ने कहा था—तुम मुझे मारोगे? इतना साहस है तुमम? जरा

ओह! ओह!—अपना सिर दोनो हथेलियो स दबाता हुआ राजेश जस कुछ कहने को होकर भी न कह पाया था। दरअसल वह उठकर कुसुम का लातों और घूसो से मार मारकर फश पर बिछा

देना चाहता था ौर उसे बता देना चाहता था कि वैसी बात मह से निकालने का क्या परिणाम भुगतना पडता है। लेकिन एसा करन का साहस वह मन मे बटोरे इसके पहले ही वह अन्दर से थर थर कापन लगा था।

—ओह ! ओह ! —कुसुम न मुह विचकाकर कहा था—रहन दो रहने दो यह सब ! तुम्हारे इस ओह-उह का मेर ऊपर कोई भी प्रभाव नही पडना है ! तुम मेरे सवाल का जवाब दो !

बडी कोशिश से अपने को कुछ स्थिर कर राजेश ने जमे रोते हुए तब कहा था—कुसुम, मेहरबानी करके तुम इस समय, कम से कम थोडी देर के लिए मुझे अकेला छोड दो ! तुमसे विनती करता हूँ ! वना

—वाह ! —कुटिल मुस्कान हाठो पर लाकर कुसुम बोली थी एक ही साथ विनती भी और धमकी भी ! जरा सुनू तो कि वना तुम क्या करोगे ?

—मैं मैं —दोनो हाथो से अपने सिर के बाल नौंचत और हाफ्त हुए राजेश ने जैसे एक खिजे हुए बच्चे की तरह रिरिया कर कहा था—मैं अपना सिर फोड लूगा !

सुनकर कुसुम अट्टहास कर उठी थी। ऐसा अट्टहास ! बाप रे बाप ! जैसे कोई बम फटा हो और पूरा मकान हिल उठा हो। राजेश को लगा था जसे उसकी चारपाई उलट गयी हो और वह धडाम से फश पर गिर गया हो। एक क्षण के लिए तो जैसे उसके दिमाग की बत्ती भी गुल हो गयी थी और सामने जमे गरजते अन्धकार मे तुत्तियाँ छिटक उठी हा। दूसरे क्षण वह सम्भला था, तो उठकर बैठ गया था और दोनो हाथा से अपना मुह ढँककर सिर झुका लिया था और हथे लियो के पीछे से ही गिडगिडाकर बाला था—तुम लडकी हो, तुम्हे मेरा नही तो कम मे कम माजी का तो खयाल होना चाहिए

—माँजी ! —गुस्से से दात पीसकर कुसुम ने कहा था—फिर तुमने माँजी का नाम लिया ?

उसी तरह गिडगिडाकर राजेश न तब कहा था—मुझे माफ करो

उनका न सही उनका तो खयाल करो, जो मकान के ऊपर रहते हैं

—हूँ !—कुसुम ने ललाट से पलकों पर चूते हुए पसीने को आँचल से एक झटके में पोछकर कहा था—देख लिया ! देख लिया सबका खयाल करके—तुम्हारा, उसका, जिसे तुम माजी कहते हो, उनका, जो ऊपर रहते हैं और समाज का और दुनिया का, सबका-सबका ! एक साल से यह सब देखने के सिवा और मैंने क्या किया है ? लेकिन अब मैं कुछ भी देखना नहीं चाहती हूँ ! अब मैं अपने सवाल का जवाब चाहती हूँ ! बोलो ! बोलो ! मैं तुम्हारी बीवी हूँ, या वह जिसे तुम माजी

—कुसुम ! कुसुम !—राजेश तिलमिलाकर उठते हुए उसके पावों के पास गिरकर जैसे टूटती हुई सासों को समेटकर बोला था—तू तुम तुम कुसुम ! भगवान के लिए अब तो शान्त हाओ !

—तुम्हारी बात पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा है,—एक कदम पीछे हटकर, जैसे पतरा बदला हो, कुसुम ने इस बार सिर हिलाकर वार किया था—तुम यह कैसे साबित कराेगे ? यह आखिरी बार मैं तुमसे पूछ रही हूँ !

—जरा धीमे बोलो, कुसुम,—फर्श पर ही सिर झुकाये बैठकर राजेश ने कहा था—कल सुबह ही उन्हें गाडी पर चढा दूँगा, विश्वास करो, कुसुम विश्वास करो !

कुसुम ने थोडी देर तक उसे घूरकर देखा था। कितने जोर-जोर से वह हाँफ रहा था जैसे किसी कातिल के छुरे से बाल-बाल बचकर अभी अभी आया हो।

कुसुम ने अविश्वास में सिर हिलाते हुए भी एक लापरवाही की मुस्कान होठों पर लाकर कहा था—एक रात और भी विश्वास किये लेती हूँ। लेकिन क्या रात में कोई गाडी नहीं है ?

—गाडी तो है, कुसुम,—राजेश बुदबुदाया था—लेकिन क्या तुम मुझे बिलकुल ही जिबह कर देना चाहती हो ?

—अच्छा, रात भर में मैं मर नहीं जाऊँगी,—कुसुम ने दरवाजे

की ओर मुडते हुए कहा था—तुम अपने बाल ठीक ठाक करो बैठक म चलो।

कुसुम कमरे स बाहर चली गयी थी। राजेश का बाल क्या ठीक करन थ? फिर भी कुसुम की यह आज्ञा थी, जिसका पालन करना आवश्यक था। वह जानता था कि जब वह बैठक म जाकर बैठेगा और कुसुम वहाँ आएगी, तो सबसे पहले उसकी नजर उसक बालो पर ही पडेगी और अगर उसने दख लिया कि बाल ठीक नहीं हैं, तो फिर वह एक तूफान खडा कर दगी। बाबा र, बाबा!

उससे उठकर खडा न हुआ जा रहा था जस इस काण्ड ने उसकी सारी शक्ति ही निचुड गयी हो। लेकिन वह जानता था कि उसे उठना होगा बाल ठीक करन होग और बठक म जाकर बैठना होगा। जल्दी ही। माँजी कोई नमकीन और चाय का पानी तयार कर रसोई म इन्तजार कर रही होगी। कुसुम जाकर चाय बनाएगी और ट्रे म सजाकर बैठक मे लाएगी। उससे पहले ही राजेश को बठक म जाकर कायदे स बैठ जाना होगा। आह उह करता, फर्श पर हथली टेककर वह उठा था। हाथ पाँव और कपडो में धूल लग गयी थी। उसने अपनी हथेलियो को ऐसे दखा था, जैसे उनकी रखाओं म वह अपने भाग्य को पढ रहा हो। उसकी भाग्य रेखाओ पर कितनी गद चढ गयी थी! उसने दोनो हथेलियो को आपस मे रगडकर झाडा था। और फिर उन्ह देखने लगा था। लेकिन नही भाग्य रेखाएँ फिर भी अस्पष्ट ही थी। धूल के कण जैस रेखाओ की नालियो म जम गय हो। इन्हें धोना ही होगा। उसने चारपाई के पास जाकर पावो मे चप्पलें डाली थी। लेकिन कमरे से बाहर जाने के लिए उसके पाव ही नही उठ रहे थे। कमरे के बाहर अन्दर का ओसारा है जिसम एक ओर रसोई है और दूसरी ओर नहाने का कमरा। रसोई से माजी की नजर उस-पर पडगी।

उसने खूटी स तौलिया उतारा था और उसी मे रगड रगडकर मुह सिर हाथ पाव और कपडे जल्दी जल्दी पोछे झाडे थे। देर हो रही थी, कही कुसुम आकर उसकी यह कारस्तानी दख न ले। उसने

जल्दी से तौलिया कोने के गन्दे कपड़ों के डिब्बे में फेंक दिया था और सिंगार मेज की ओर बढ़कर कंघी उठा ली थी।

ये सिर के बाल हैं, यह किसी गिद्ध का खोता? ये अंगुठिया-बाल कभी कितने सुन्दर थे! गोरे चेहरे के ऊपर जैसे रेशम के छल्ले सजे हुए हों। उन पर कितना नाज था उसे लड़कियां उन पर जान देती थीं। कितनी लड़कियां उन छल्लों में फँसी थीं! कहती थीं, अगर आप अनुमति दें तो जरा इनमें उँगलियां फेर लें! और यह कुसुम भी तो कमबख्त इन्हीं पर फिदा हुई थी!

लेकिन अब इनका क्या हाल है! जैसे छल्लों की लचक ही गायब हो गयी हो, चमक ही उड़ गयी हो और बच गये हों काले सफेद काटे। यह-सब कुसुम के कारण ही हुआ है। कितनी बार उसने इन बालों को उँगलियों से पकड़कर खींचा है, जैसे वे बाल न होकर, लगाम हों। घोड़ा को लगाम से वश में रखा जाता है और उसे

उँह! कहती है, कोई अच्छा तेल लगाओ, कोई अच्छा रंग लगाओ! क्या क्या लाकर इस मेज पर सजा रखा है! अच्छा, इस ब्रूश से देखें, शायद

—अभी तक आपकी तैयारी नहीं हुई?—बैठक से कुसुम की जोर से खनखनाती हुई आवाज आयी थी।

राजेश ब्रूश पटककर भागा था और बैठक में घुसते ही सहमे हुए कहा था—ये बाल जल्दी कब्जे में नहीं आते, कुसुम!

—अच्छा, तुम जल्दी बैठो।—कुसुम ने चाय बनाने के लिए केतली उठाते हुए कहा था—इन्हें मैं रात में ठीक कर दूंगी! राजेश अन्दर-ही-अन्दर कांप उठा था। आज रात को भी यह नहीं छोड़ेगी! हे भगवान! सुबह माजी को छोड़ने स्टेशन जाना है। इसने रात को उसे न छोड़ा, तो सुबह नौ-दस बजे से पहले कैसे वह बिस्तर से उठ सकेगा? कैसी हालत हो जाती है। जैसे खोइए (गन्ने से रस निकाल लेने के बाद जो शेष बच जाता उसे गांवों में खोइया कहते हैं।) को कोल्हू में रस निकालने के लिए डाला जा रहा हो, और कोई रस न निकलता हो, तो फिर फिर इस आशा में उसे कोल्हू में डाला जाता

हो कि शायद कुछ रस निकल आए। आप ग आप !

—लो, चाय पिओ,—कुसुम न तेज नजरा म कुछ सोचत हुए पूछा था—क्या सोच रह हो ?

जैसे चोर पकड़ा गया हो। डरकर राजेश ने कहा था—कुछ नही, कुछ नही !

—झूठ बालत हो ?—कुसुम न डाटकर पूछा था। राजेश के हाथ का प्याला काप उठा था। उसन प्याला मेज पर रखकर, पलकें झपकात हुए कहा था—नहीं। मैं सोच रहा था कि सुबह माजी को जाना है, रात मे उनके जाने की तैयारी

—उससे कह दो वह तयारी कर लेगी !—कुसुम ने कहा था—इसमे तुम्हे कुछ सोचन की क्या जरूरत है ?

—कुछ नही, मैं उनस कह दूगा,—राजेश ने चाय की एक चुस्की लेकर कहा था—तुम आराम स चाय पिओ।

वे चाय पीने लग थे और राजेश के दिमाग म रात की सासत स छुटकारा पाने की एक योजना बनने लगी थी। वह बन गयी थी, तो उसने कहा था—लेकिन, कुसुम, माजी के खच के लिए पैसे का तो इन्तजाम करना होगा ?

—उसके पास पसे होगे —लापरवाही से कुसुम ने कह दिया था।

—नही, कुसुम,—राजेश ने कहा था—उन बेचारी के पास तो एक पैसा भी नही है। घर की मालकिन तो तुम हो, पूरी तनख्वाह तो मैं तुम्हारे हाथ म धर दता हूँ।

—मैं तो उसके लिए एक पसा भी न दूगी !—कुसुम न सिर हिलात हुए कहा था।

—वह तो मैं जानता हूँ,—राजेश न मक्खन चुपडी आवाज म कहा था—इसीलिए मैं सोचता था कि अभी कही जाकर थोडे पस का बन्दोबस्त कर लू।

—नहीं तुम कहीं नही जाओग !—कुसुम न कह दिया था।

थाडी दर खामोश रहकर राजेश ने जैस एक जिद्दी बच्चे को समझात हुए कहा था—तब कम काम चलेगा, कुसुम ? सुबह आठ

बजे ही गाडी जाती है। सात बजे ही यहा से चल देना पडेगा। सुबह तो कोई इतजाम करने का समय मिलेगा नही।

—न मिले, मैं क्या करूँ?—बिना किसी लाग लपेट के कुसुम ने कहा था।

—मैं एक दो घट म ही आ जाऊँगा, कुसुम—राजेश ने फिर विनती की थी—विश्वास करो!

—नही,—कुसुम ने सख्ती से कहा था—आज तुम्हारी एक बात पर मैंने विश्वास कर लिया है, आज के लिए इतना ही काफी है।

थोडी देर के लिए राजेश फिर खामोश हो गया था। उसकी आशा अभी टूटी न थी, फिर भी लगातार बोलते जाने का परिणाम क्या होगा यह वह अच्छी तरह समझता था। इसीलिए आग पर राख डालकर वह हवा देना चाहता था ताकि आग भडके नहीं।

उसने जैस हताश होकर कहा था—फिर कैसे काम चलेगा, कुसुम? माजी को तो जाना ही है न!

—सो तो तुम जानो—कुसुम ने उसे घरकर दखत हुए कहा था—कौन जाने, तुम उस न भेजने का कोई बहाना ढूढत होओ!

—नही नही, कुसुम!—जल्दी मे जस अपन को दोष मुक्त करने के लिए राजेश ने कहा था—उह तो जाना ही है लेकिन, तुम्ही बताओ, बिना पैसे के

कुसुम की आखें तब सहसा चमक उठी थी। वे आखें! जैसे मस्त सर्पिणी की आँखें हो। हमशा वसी ही रहती थीं। बोझल-बोझल पलकों के नीचे जैसे दो बडी-बडी सीपो म हमेशा पिघली हुई आग तैरती रहती हो। जिस मद पर वे आख उठ जातीं थी उस झुलसकर रख देती थीं। और जब कभी व चमक उठती थी, तो उनम जैस सर्पिणी की जीभ की तरह कई फाँको म लपटें निकलती दिखाई पडती थी। राजेश दहल उठा था। वह जल्दी मे उठत हुए बोला था—मैं जरा बाथ

—सुना!—कुसुम न भी उठत हुए कहा था—बाथ स आकर तयार हो जाओ! मैं भी तुम्हार साथ रुपय का इतजाम करने

चलूंगी।

राजेश को नहान घर मे क्या करना था। कमीज का दामन उठा कर वह सिर झुकाकर नीचे पायजाम की उस जगह को थोडी दर देखता रहा था जो बैठक मे बैठे बैठे भीग गया था। उसकी योजना असफल हो गयी थी। ऊपर से कुसुम की जालिम आखो की वह कातिल चमक! ह भगवान! रात को क्या गुजरेगी।

जैसे भी हो वह आज की रात वच जाना चाहता था। उस एक भय ने जकड लिया था कि रात को कहीं वह मर ही न जाए। वह मरना हर्गिज न चाहता था, जब तक हो, जैसे भी हो, वह बचना चाहता था। उसका दिल धक धक कर रहा था, फिर भी वह सोच रहा था। सोचने मे, योजनाएँ बनाने म वह माहिर था। बुद्धि स वह बडा ही तज था। हर परीक्षा म वह सबसे ऊपर रहा था। सोने के कई पदक उसने प्राप्त किय थे। कालेज के प्रोफेसरा म उसका नाम था। इसी बुद्धि के वल पर वह कुसुम के बावजूद, आज तक जीवित था।

नहान घर से वह बाहर निकला था, तो एक नयी योजना उसके दिमाग म जन्म ले चुकी थी। या नाडे पर हाथ रखे वह रसोई की बगल से गुजरा था ताकि रसोई की ओर न देखन का उसके पास एक बहाना रहे।

कमरे म आकर उसने देखा था कि बदलने के लिए कुसुम बक्स से कपडे निकाल रही थी। वह चारपाई पर बैठ गया था।

—बैठ क्यो गये?—कुसुम न कहा था—कपडे बदलो न!

—बदलता हूँ,—राजेश न कहा था—कुसुम, तुम कह रही थी न कि क्या न माजी को रात की ही किसी गाडी स रवाना कर दिया जाए?

—तो?—भौह सिकोडकर उसकी ओर देखती हुई कुसुम बोली थी।

—रात को दो बजे एक गाडी ह,—राजेश ने मीठी आवाज म कहा था—उसी पर माजी को क्या न चढा दें?

—चढ़ा दो,— अपनी देह की साड़ी खोलते हुए कुसुम ने कहा था।

—तो तो राजेश ने आखें झुकाकर कहा था—मेरी एक बात पर विश्वास कर लो।

—वह तो कर चुकी हूँ,—पेट्टीकोट बदलते हुए कुसुम ने कहा था।

और भी आखें झुकाकर राजेश ने कहा था—वह बात तो अब रद्द हो गयी न, कुसुम। माजी को तो रात को ही भेज रहा हूँ।

—अच्छा, तो अब दूसरी बात कौन आ गयी ?—कुसुम ने ब्लाउज उतारते हुए कहा था।

राजेश ने थकी हुई आखो को बन्द करते हुए कहा था—मैं बडा थक गया हूँ। माजी को छोड़ने रात मे ही जाना पड़ेगा। लगता है कि जो वक्त ह, उसमे थोडा आराम न कर लिया, तो बीमार पड जाऊँगा। कुसुम, तुम थोडे रुपये द दा। कल जरूर-जरूर तुम्हे कही से लाकर दे दूगा।

—अभी तो तुम रुपये लेने चल रह थे,—शरीर पर की बॉडी का काटा खालते हुए कुसुम ने कहा था—मैं कपडे बदल रही हूँ।

दूसरी ओर मुह फेरकर राजेश ने कहा था—तुम कपडे बदल लो, कुसुम। कही टहल आएँग। लेकिन पमे

—पैसे तुम कल जरूर लौटा दोगे न ?—बॉडी उतारत हुए कुसुम ने पूछा था।

—जरूर जरूर, कुसुम !—राजेश ने कहा था—कम से कम पैसे के मामले मे तो मैंने तुम्ह कभी शिकायत का मौका नही दिया ह न !

—तो ठीक है, मैं पस दे दूगी,—दूसरी बॉडी पहनत हुए कुसुम ने कहा था—उठो, तुम कपडे बदल लो !

—तुम बदल लो, कुसुम,—राजेश न सूखत हुए गले से कहा था—मुझे जरा हाथ मुह धोना ह।

कहकर राजेश औसारे की ओर के दरवाजे स न निकलकर बैठक से होकर औसारे मे निकला था। औसारे की ओर के दरवाजे क पास

ही खडी कुसुम कपडे बदल रही थी। राजेश न नल पूरे जोर पर खोल दिया था। वह जानता था कि कुसुम जल्दी ही कपडे बदलकर औसारे मे रसोइ के पास आ खडी होगी, क्योंकि उसे सन्देह रहगा कि कही बाथ म जाते समय वह रसोइ म जाकर माजी स कोई बात न कर रहा हो।

नल स जोर स पानी गिरने की आवाज के बावजूद रसोई म माजी के जोर जोर स नाक सिनकने की आवाजें बार-बार उसे सुनायी द रही थी। बेचारी खुलकर रो भी नही सकती। यह सोचकर राजेश का दिल भर आया। उन्होने सब अपनी आखो से देखा है और कानो से सुना ह। ह भगवान! उनपर क्या गुजरी होगी! कैसी बात कुसुम न अपने मुह से निकाल दी। कौन मा अपने बेटे की वहू के मुह स ऐसी बात सुन सकती ह? लेकिन बचारी माजी! सब देख लेंगी, सब सुन लेंगी, चुपके चुपके रो लेगी लेकिन मुह से एक बात न कहगी। बिलकुल गऊ की तरह ह! और वह अपने सामने ही उनके गले पर कसाइन से छुरा रेतवा रहा है। सस्कृत साहित्य मे माता को देवता कहा गया ह। उसने उन्ह सदा देवता तुल्य ही माना और उनकी पूजा करता रहा। लेकिन कुसुम जब से आयी है देवता का उसके सामने ही लगातार अपमान हो रहा है और वह कुछ कह नही पाता कुछ कर नही पाता। और आज तो कुसुम न अपने मुह से ऐसी बात भी निकाल दी।

राजेश रोने लगा था। वह रो रहा था और लगातार आखो पर, मुह पर चुल्लू चुल्लू पानी फेंक रहा था। ह भगवान! इस महापाप का प्रायश्चित कैसे होगा?

जब उसके पिता मरे थे, उसकी क्या उम्र थी? उस अच्छी तरह याद था। वह बी० ए० की परीक्षा दकर छुट्टिया म अपन मामा के यहा गया था। मामा सस्कृत के पडित थे। जब कालेज स छुट्टी होती थी पिता उम मामा के यहाँ सस्कृत पढने के लिए भेज देत थे। इसी कारण सम्कृत म वह बहुत अच्छा रहता था। उस एम० ए० सस्कृत से ही करना था। मामाजी कहते—सस्कृत दववाणी है उस जो पढता है,

मिनट में निकलता हूँ।

वह नहाने लगा था। वह जानता था कि देर हुई तो कुसुम दरवाजा पीटने लगगी। वह दरवाजा तोड भी सकती है। वह वहीं भी देर तक सुरक्षित न रह सकता था। लेकिन माँजी के हाल को वह टाल न पाता था। उसका मन उमड-उमड पडता था।

क्रिया-कर्म के बाद मामाजी ने कहा था—बेटा, जब तक मैं जीवित हूँ, तुम्हे कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। मैं तो अभी तुम लोगों को अपने यहा ले चलता। लेकिन यहा जो जर जायदाद है सब चौपट हो जाएगा। यही सोचकर तुम लोगो को यहा छोड रहा हूँ। मैं बराबर आता जाता रहूँगा। तुम घबराना नहीं। दो साल की पढाई है उसे पूरा कर लो। फिर देखेंगे। हा, एक बात का ध्यान रखना। हमारे संस्कृत साहित्य में माता को देवता कहा गया है। तुम अपनी माताजी को देवता तुल्य ही समझना और मानना

राजेश फिर रोने लगा था। हाय, मामाजी! आप अगर जीवित होते और आज माताजी का यह हाल देखते और जानते कि यह सब मेरे कारण हो रहा है तो

रुलाई का वेग रोकने के लिए उसने मुह में कपडा ठूस लिया था।

माताजी सचमुच देवता है, पत्थर की देवता! कभी जो कुछ नहीं कहती लेकिन वह वह क्या है? हे भगवान! उसने कुसुम से ब्याह क्या किया? उसके व्याह के पहले वह माजी को क्या देवता की ही तरह नहीं मानता जानता और पूजता था? पहले उन्हें वह केवल मा कहता था लेकिन मामाजी के उस आदेश के बाद वह उन्हें माजी कहने लगा था उसे याद आया।

—अभी तुम्हारा दो मिनिट नहीं हुआ?—दरवाजे पर से कुसुम ने डाटकर पूछा था।

—हो गया कभी का हो गया कुसुम—राजेश ने तुरन्त जवाब दिया था—मैं दस पाच रहा हूँ।

राजेश को आश्चर्य हो रहा था कि कुसुम की आवाज सुनते ही उसकी रुलाई भी सहसा कहा सटक जाती है!

—बोलो न !—निमल ने और भी उत्सुक होकर कहा।

—अगर तुम ऐसा समझती हो, निमल, तो क्या न राजेश और मैं अपनी अपनी बीबी की अदला बदली कर लें ?

निमल ने तुरन्त जवाब दिया—मैं बिलकुल तैयार हूँ ! तुम अभी कुसुम के पास जा सकते हो !

—लेकिन मेरा दोस्त तो इजाजत दे। —रमन ने राजेश की ओर मुस्कराते हुए कहा।

राजेश ने पहले ही की तरह अपना सिर झुका लिया और निमल का हाथ उसकी पीठ पर से उठकर फिर उसके सिर पर चला गया।

राजेश न बोला, तो रमन ने ही फिर कहा—मैंने पूरी गम्भीरता से यह प्रस्ताव रखा है राज ! निमल तैयार भी हो गयी है

—मैं तो बिलकुल तैयार हूँ और फिर कह रही हूँ !—निमला ने जोर देकर कहा—तुम भी इनका प्रस्ताव मान लो राज ! बड़े शेर बने फिरते हो, जरा देख लिया जाए !

तब गमगीन राजेश अचानक गम्भीर भी हो उठा। उसने धीरे-धीरे अपना सिर इस तरह उठाया और इतना ही उठाया कि निमला का हाथ उसके गालों पर से हट न जाए और उसने सामने एक गहन चिन्ता में खोये हुए दार्शनिक की तरह एकटक देखते हुए बुझे हुए गले से, धीरे धीरे एक एक शब्द पर रुकते हुए और आह सा भरते हुए कहा—रमन काश तुम मेरे दोस्त न होते और यह प्रस्ताव मेरे सामने रखते !

—वाह !—रमन ने तुरन्त कहा—तुम यह क्या नहीं समझते कि अगर मैं तुम्हारा दोस्त न होता तो यह प्रस्ताव तुम्हारे सामने रखता ही नहीं ? दरअसल मैं कुसुम से तुम्हें मुक्त कराना चाहता हूँ !

—और मुझे अपने से नहीं ? —मुस्कराते हुए निमल ने कहा।

—तुम चुप रहो निमल !—रमन ने उसे डाँटते हुए कहा—यहाँ दो दोस्तों के बीच एक बड़ी ही गम्भीर समस्या पर बात हो रही है। मैं इस समय बिलकुल गम्भीर हूँ ! तुम बोलो, राज !

सिर इधर उधर जरा जरा हिलाते हुए उसी मुद्रा में राजेश ने

कहा—तुम उसे नहीं जानते, नहीं समझते ! कोई भी उसे नहीं जान सकता, नहीं समझ सकता ! मैं बताऊँ तो भी कोई मेरी बात पर भी विश्वास नहीं कर सकता। वह कह निमल, जरा तुम यहाँ से हट तो जाओ !

— क्या ? मेरे सामने तुम्हे सवाल करने की क्या जरूरत है ?—तुनककर निमला ने कहा —मैं तो नहीं हटूंगी !

उसी मुद्रा में राजेश ने कहा —नहीं निमल मैं सकोच या शर्म के लिए नहीं कहता। तुम लोगों से भला मुझे क्या सकोच और क्या शर्म ?

—फिर क्या बात है ?—निमल के होठों से मुस्कराहट जा ही नहीं रही थी। वह बोली—दरअसल इस शेर के सामने तुम जैसे भेड़ को अकेले छोड़कर मैं जा ही नहीं सकती।

—यह तो तुम्हे कम्बल बनाकर ओढ़ेगी, राज !—उठता हुआ रमन बोला—चलो, हमी उधर चलें।

—नहीं, तुम बैठो,—राजेश ने उसी मुद्रा में निमला से कहा—निमल दरअसल बात यह है कि तुम इतनी कोमल, मधुर, सहृदय, निरीह और सुशील हो कि जो बात मैं रमन से कहने जा रहा हूँ, उसे सुनते ही तुम गश खाकर गिर जाओगी।

—वाह ! इतना कमजोर तुम समझते हो मुझे ?—निमला ने तुरत कहा—एक शेर के साथ रहनेवाली मैं

—निमल !—रमन ने बीच में ही उसे रोककर पुचकारते हुए कहा—तुम हट तो जाओ जरा !

फिर भी निमला न हटी और राजेश के बालों में और भी तत्परता से अपनी उँगलियाँ फिराने लगी, तो रमन ने कहा—निमल, इन बालों को मुड़वाकर मैं तुम्हारे बटुए में रखवा दूंगा ! अब चलो तो, देखो, नाश्ता में क्या देर है।

—अच्छा, मैं जाती हूँ,—निमला उठकर जाती हुई बोली—लेकिन तुम इसे सचमुच कहीं मूड मत देना !

वह चली गयी, तो रमन ने अपनी कुर्सी राजेश के थोड़ा और

पास खींचकर धीरे से कहा—अब कहो, दोस्त ?

राजेश ने दरवाजे की ओर देखा तो रमन ने कहा—उधर क्या देख रहे हो ? इस संसार में मर्दों ने सारी ही अश्लीलता और सारी ही बेहूदगियाँ औरतों को लेकर पैदा की हैं। तुम एक औरत से क्यों घबराते हो ?

—आह ! निर्मल कितनी निरीह है जैसे मेमना ?

—हाँ हाँ, सियार महाराज !

—क्या ?

—कुछ नहीं कुछ नहीं !—रमन ने तुरंत बात बदलकर कहा—तुम जल्दी अपनी बात कहो वर्ना वह ममनी यहाँ आकर फिर मैं मैं करने लगेगी !

—अच्छा सुनो !—फुसफुसाते हुए राजेश ने बताया—तुम कुसुम के साथ रहना चाहते हो। तुम नहीं जानते कि कुसुम के साथ एक दजन निग्रो रात दिन एक साथ रहें तो भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते और उल्टे वे ही टें बोल जाएँगे।

—दुत ! रमन ने अविश्वास और आश्चर्य मे सिर हिलाते हुए कहा—मैं हर्गिज नहीं मान सकता ! तुम बकते हो !

—यह तो मैं पहले ही कह चुका हूँ कि कोई भी मेरी बात पर विश्वास नहीं कर सकता,—राजेश ने अपनी फुसफुसाहट और भी धीमी करके कहा—कुसुम के लिए मर्द, जानते हो, क्या है ?

—बोलो !

—लोह की एक मोटी, लम्बी सलाख और कुछ नहीं कुछ नहीं, समझे ?

चुप !—रमन ने उसे डाँटते हुए कहा—ये क्या बेहूदा बातें मुँह से निकाल रहे हो ? जस मैं न किसी औरत को जानता हूँ, न कुसुम को।

—तुम कुसुम को तो हर्गिज नहीं जानते इतना मैं जोर देकर कह सकता हूँ !—सामने की मेज पर मुक्का मारकर राजेश ने कहा।

—देखो, बेटा ! तुम्हारे मेज पर इस तरह मुक्का मारने से मैं

नही मान लूगा कि तुम म वडा जार है ! —रमन न राजेश मे आखें मिलाकर कहा—तुम यह जानत हो कि एक वार कुसुम से मरी शादी की वात चली थी। मैं उसे वहुत अच्छी तरह जानता हूँ ! साथ ही मैं तुम्हे भी वहुत अच्छी तरह जानता हूँ, यह तो तुम्हे मालूम ही है ! मैं तुमस यह पूछता हूँ कि तुमन नीला से पिंड छुडाने के वाद फिर कुसुम स शादी क्या की ? मैंन रोका था न तुम्हे ?

राजेश का चेहरा फक पड गया। उसने सिर गाड लिया।

—कृष्ण की तरह गोपियो के बीच रमना एक वात ह और किसी दूसरी लडकी के साथ शादी करना विल्कुल दूसरी वात ह। नीला ने शादी करन के वाद भी तुम्हारी समझ म नही आया था कि

सहसा राजेश कुर्सी से उठकर खडा हो गया और जीभ निकाल कर, दोनो कान पकडकर, पलकें झपकाता हुआ वाला—फिर कभी जिन्दगी म मैं किसी लडकी का नाम नही लूगा, रमन ! तुम्हार सामन प्रतिज्ञा करता हूँ। लेकिन कुसुम मे मेरा पिंड कैसे छूटेगा ?

—नाश्ता तैयार है ! —निमला न दरवाजे के पर्दे के पीछे से ऐसे पुकारा, जसे कचहरी मे चपरासी पुकार लगाता है।

—आने दो, निमल,—रमन ने कह दिया।

—नाश्ता ही आने दू या अपने को भी ?—निमला ने पर्दा हटा कर, झाकते हुए, होठो की मुस्कान को दबाते हुए पूछा।

—वाह ! तुम्हारे विना राज को नाश्ता कौन कराएगा ?—रमन ने कह दिया।

पर्दा छोडकर निमला चली गयी। थोडा परेशान सा होकर राजेश ने पूछा—निमल ने तो मुझे कान पकडे हुए नही दखा न ?

रमन को जोर की हँसी आ आ गयी। उसने हँसी दबात हुए कहा—उसने तुम्हारी प्रतिज्ञा भी शायद सुन ली हो !

—यह तो वहुत वुरा हुआ,—और भी परेशान होकर राजेश ने कहा।

—आदमी को प्रतिज्ञाएँ मत म ही करनी चाहिएँ, जिनका पालन वह न कर सके—रमन ने कहा—तुमने नीला को छोडते समय भी

यही प्रतिज्ञा की थी मुये अच्छी तरह याद ह !

—यार मैं क्या वताऊँ ?

—तुम मुये क्या वताओगे ? म तुम्ह बहुत अच्छी तरह जानता हूँ ! नीला को छोडकर तुमन कुसुम स शादी कर ली और अव कुसुम का छोडकर किसी और लडकी स

—नही ! नही ! नही !—राजेश न फिर काना की ओर हाथ वढाय ही थ कि पदा हटा और नाश्ता की ट्रे लिय हुए लडका और उसके पीछे पीछे निमला कमरे म आ गयी।

—यह किस बात म वार वार इनकार किया जा रहा ह ?—निमला ने पूछा।

वैठो व ठो !—रमन न कहा—बताते ह !—लडका चला गया था, तो रमन न कहा—राज कुसुम का छाडन जा रहा ह।

—अच्छा !—निमला न आँखें चमकाकर कहा—अगर मैं क्वाँरी होती, तो मेरे लिए यह खुशखबरी होती ! अव किस लडकी की किस्मत खुलने वाली है, राज ?

राज सिर झुकाये सैंडविच खा रहा था। वह कुछ न वोला, तो रमन ने ही कहा—अव यह किसी लडकी का नाम न लेगा, कान पकड कर इसने प्रतिज्ञा की है।

निमला जार से हँस पडी, ता रमन ने भी उसका साथ दिया। राजेश का सिर और झुक गया, उसके मुह का सैंडविच का टुकडा किसी और अटक गया था।

आँचल से आखें पाछकर निमला ने कहा—भाई, इसम राज का काई दोप नही है। यह क्या करे ? लडकिया ही इसे प्रतिज्ञा का पालन नही करने दती। काश, यह जीनियस न होता, इसके बाल इतने सुन्दर न होते, इसका चेहरा इतना चिकना न होता !

—अव इसम मेरा क्या दोप है निमल —सिर उठाकर राजेश ने कहा—भगवान ने मुझे ये गुण दिये ह ता मैं इनका क्या करूँ ?

—क्या इन गुणा के साथ तुम भगवान से एक और गुण नही माँग सकते थे ?—रमन ने उसकी आर कनखिया से देखते हुए कहा।

राजेश ने अस्थिर हो जल्दी से पानी का गिलास उठा लिया। लेकिन निमला ने जैसे कुछ न समझकर रमन से पूछा—कौन सा गुण ?

—राज जानता है, तुम्हे जानने की कोई जरूरत नही,—कलाई की घडी देखते हुए रमन ने कहा—नौ बज गये। जल्दी नाश्ता खत्म करो। मैं आफिस जाने की तैयारी करूँ।

—आज आफिस न जाओ, तो कैसा ?—निमला ने कहा।

—क्या ?—रमन ने पूछा।

—राज आया है। बेचारा कितना परेशान है, तुम

—उसके लिए तुम तो हो ही, मेरी कोई खास जरूरत नही है

—नही, रमन,—राजेश ने तब जैसे कुछ घबराकर कहा—आज तो तुम मेरे साथ रहो! मुझे डर लगता है कि कहीं कुसुम यहा आ न धमके!

—मेरी इस नयी जगह का उसे पता है क्या ?

—नही, उसे पता नही है यही सोचकर तो मैं यहा आया था। लेकिन, रमन, मेरी बात को सच मानो, जाने कैसे उसे मेरा पता चल जाता है। मैंने कई बार कई जगह छिपकर देख लिया है, वह हमेशा मुझे ढूढ निकालती है।

—बिलकुल बकवास है!

—नही रमन, मेरी बात मानो! मेरा दिल कहता है कि वह किसी भी क्षण यहा पहुच सकती है!

—तुम कोई सकेत यहा छोड आये होगे ?

—नही, यहा आने के बाद तुमने मुझे सिर्फ एक पत्र कालेज के पते पर लिखा था। उसे मैंने कालेज मे पढकर फाड दिया था।

—तो फिर यह हो सकता है कि पहले वह मेरी पुरानी जगह पर जाए

—उसे जाने की क्या जरूरत है ? वह फोन से भी

—वहां से तुम कब चले थे ?

—राज!—निमला उसके जवाब देने के पहले ही बोल पडी

—मैं यह जानने के लिए मर रही हूँ कि आखिर कुसुम की वसी तज आँखों म धूल झाक्कर तुम यहाँ स भाग कस निकले ?

—तो ! अब तुम इसे अपनी जासूसी कहानी सुनाओ, मैं तो चलता हूँ !—उठते हुए रमन न कहा।

—नहीं-नहीं, रमन !—उसका हाथ पकडते हुए राजेश न विनती की—आज तुम मेरे साथ ही रहो ! प्लीज !

—अजीब आदमी हो !—रमन न बठते हुए कहा—अरे भाई, उसे आना ही होगा तो वह दो चार दिन म यहाँ आयगी। कोइ अचानक उसे इलहाम नही हो जाएगा कि तुम यही होगे और वह बेतार के तार की तरह यहाँ आनन फानन मे आ धमकेगी।

—मैं कोई भी चास नहीं देना चाहता, रमन !—गिडगिडाकर राजेश न कहा।

—लेकिन मेरी समझ म यह बात नहीं आती कि कि मान लो, वह यहाँ आ ही जाती है तो मेरे यहाँ रहने या न रहन से क्या फक पडेगा ?

—वडा फक पडेगा बडा फक पडेगा, रमन !—राजेश एस बोला, जैसे अब वह रोने ही वाला हो—तुम्ह शायद एक बात नहीं मालूम। जब मेरे साथ मेरा कोई तगडा दोस्त रहता है, तो मैं अपन मे एक बडी ताकत महसूस करता हूँ और और तब, सच मानो, रमन, तब तो मैं कुसुम को भी डाट दता हूँ

सुनकर रमन जोर स हँस पडा। निमला कुछ न समझकर उसका मुह ताकने लगी और राजेश

राजेश कटकर रह गया था कि लामुहाला ऐसी बातें उसके मुह से क्या निकल जाती हैं कि रमन को उसे नगा करन का मौका मिल जाता है ! इस साले मे मुझसे थोडी कम बुद्धि होती, तो कितना अच्छा होता !

—देखो, भाइ राज —रमन ने जसे अन्तिम बात कही- अब मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ बिलकुल गम्भीर होकर कह रहा हूँ। मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, यह बात सही है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं

है कि मैं संसार की सभी लडकियों का दुश्मन हूँ। नीला के खिलाफ मैंने तुम्हारी मदद की थी, क्योंकि, एक, तुमने वचन दिया था कि नीला के बाद तुम जिन्दगी में फिर कभी किसी लडकी का नाम न लोगे, और दो, नीला एक स्वतन्त्र, स्वावलम्बी और बडी ही समझदार लडकी थी। तुम जानते हो आजकल वह बहुत सुखी है। लेकिन अब मैं कुसुम के खिलाफ तुम्हारी कोई भी मदद नहीं कर सकता क्योंकि, एक, तुम्हारे बाद का कोई भरोसा नहीं, और दो, कुसुम एक परतन्त्र, परावलम्बी और बेवकूफ लडकी है। तुम्हारे छोडने के बाद उसकी जिन्दगी बरबाद हो जाएगी।

कहकर रमन उठा और तेजी से कमरे के बाहर हो गया, तो जैसे राजेश पर बिजली गिर पडी हो। वह सिर झुकाये, हाथों से मुंह ढक कर निर्जीव सा बैठा रह गया और निमला हतबुद्धि की तरह कुछ समझ ही न पा रही थी कि रमन यह क्या कह गया था और वह इस तरह अचानक चिढकर, ऐसी ऐसी बातें कहकर क्या चला गया। इन दो गहरे दोस्तों के बीच ऐसी कौन-सी बात आ गयी थी कि एक न दूसरे की मदद करने से इन्कार कर दिया था। वह जाकर रमन को समझाए या राज के पास बैठी रहे और उसे सान्त्वना दे ?

वह अभी सोच रही रही थी कि राजेश ने अपने हाथ मुंह पर से हटाये और सिर थोडा झुकाये हुए ही जैसे निढाल सा कहा—निमल, अब मुझे कोई दूसरी जगह देखनी होगी। मैं यहां रमन के भरोसे ही आया था। लेकिन वह तो मेरी मदद करेगा नहीं।

—लेकिन मैं जो हूँ!—निमला ने कहा—उसे जाने दो, मैं तो तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हारी मदद करूँगी।

—तुम्हारे रहने न रहने से कोई फर्क नहीं पडेगा निमल,—राजेश ने कहा था—मेरे साथ तो एक तगडा मर्द होना चाहिए।

—वाह!—कुछ न समझकर निमला ने कहा था—हम दो रहेंगे और वह अकेली। वह क्या कर लेगी भला ?

—वह जो कर सकती है, उसकी कल्पना तुम नहीं कर सकती निमल,—राजेश ने अकेले में निमला से बता देने का साहस किया—

वह तुम्हार सामन ही मुझे पटक सक्ती ह और आर —अचानक राजेश न अपन होठा पर हाथ रख लिया।

—तुम्ह वह पटक दगी, राज ? मेरे सामन ही ?—आश्चय से आखें फाडकर उसकी ओर देखते हुए निमला ने पूछा।

—हा हाँ, तुम्हारे सामने ही !—राज ने बताया—जब वह मा जी के सामने ही मुझे पटक देती है, तो तुम किस खेत की मूली हो ? इतना ही क्या, वह सडक पर भी मुझे अकेला पा जाए तो बिना पटके न छोडे। उस दिन शाम को जो कुछ हुआ था, मैं तुम लोगा को बता चुका हूँ। उस मन स्थिति म भी विवश होकर ज़रा टहलन मैं उसके साथ निकल गया था। पास ही एक पाक है। मैंन कहा था कि मुझसे चला नही जाता। चलो, पाक मे बैठ्ट हैं। पाक म कई लाग टहल रहे थे, कुछ लडके खेल रहे थे। मैंने एक बच पर बैठकर उसम कहा था कि तुम चाहो तो थोडा टहल लो। जानती हो, तब उसन क्या किया था ? वह सीधे मेरी जाघा पर धच से बैठ गयी थी और

—नही, यह असम्भव ह !—निमला ने सिर हिलात हुए कहा —मैं हर्गिज़ नही मान सकती !

—यही तो मुश्किल है ! कोई भी मेरी बात सच नही मानता, —परेशानी जाहिर करत हुए राजेश ने कहा—भला मैं तुम लोगा से क्या झूठ बोलूगा निमल ?

—बाबा रे बाबा !—निमला के मुह मे निकल गया।

—हा निमल—रानी सी आवाज मे राजेश न कहा—उसने मेरी क्या हालत बना रखी ह, बयान नही कर सकता ! कई बार तो मेर मन मे आया कि आत्महत्या कर लू। लेकिन सोचता हूँ, माजी का क्या हागा मेरी महत्वाकाक्षाआ का क्या होगा। तुमने मुझसे पूछा था कि मै वहा से कैसे भाग निकला ? रमन के लिए वह एक जासूसी कहानी हो सकती है क्योंकि वह मरी यातना को नही समझता। जब कुसुम ने माजी को लेकर यह बात अपने मुह से निकाल दी थी, तभी मैंने तय कर लिया था कि अब इस लडकी के साथ नही रहना है चाहे जो हो ! लेकिन साथ ही मैं यह भी जानता था कि मेरे तय कर लेने

से ही कुछ नहीं हो जाएगा। कुसुम मुझे नीला की तरह यों ही नहीं छोड़ देगी। ओ हो हो! फिर मैं कैसे भागा!

सिर हिलाकर अपनी कनपटियों को हाथों से दबाता हुआ राजेश चुप हो गया, तो निमला ने दुखी कम और उत्सुक अधिक होकर कहा था—कहो, राज, कहो, मैं सब सुनना चाहती हूँ!

—अपनी घोर यातना की कहानी किसी को सुनाना अच्छा नहीं लगता, निमल,—कनपटियों से हाथ हटाकर, जैसे बहुत ही दुख में आँखें सिकोड़कर राजेश ने कहा—और सुनाने से लाभ भी क्या, जब उसे कोई सच नहीं मानता, किसी को मेरे प्रति सहानुभूति नहीं होती, उलटे लोग मुझे ही दोषी ठहराते हैं कि मैं एक लड़की को वश में नहीं रख सकता कैसा मर्द हूँ! रमन को ही देखो

—वह शायद किसी बात पर गुस्सा हो गया है,—उसे बहलाने के के लिए निमला ने कह दिया—वह ठीक हो जाएगा, तुम देख लेना। और जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है तुम तो जानते हो

—लड़कियों की सहानुभूति मेरे साथ है,—राजेश ने कहा—यह मैं जानता हूँ, लेकिन मुझे तो मर्दों की सहानुभूति चाहिए, निमल, उसके बिना तो मैं कुछ कर ही नहीं सकता!

—खैर,—उसकी बात को टालकर निमला अपनी ही बात पर आ गयी—बताओ, कैसे तुम भागे थे वहाँ से?

—तुम जिद ही कर रही हो, तो लो, सुनो!—एक सिगरेट जलाकर, कई कश जल्दी-जल्दी लेकर राजेश ने कहना शुरू किया—उस समय मेरे लिए सोचने की जो सबसे बड़ी बात थी, वह यह थी कि जब माजी की उपस्थिति में भी कुसुम मेरी यह गति बना देती है तो उनके चले जाने पर, मुझे बिलकुल अकेला पाकर वह मेरी क्या गति बना देगी! उस घोर यातना की कल्पना मात्र से ही मेरी आत्मा काँप-काँप उठती थी। मुझे लगता था कि अगर मैं भागा नहीं, तो मेरी मृत्यु निश्चित है, एक भयंकर मृत्यु, जिसकी असह्य पीड़ा की कल्पना नहीं की जा सकती। मैं कँटीले तारों से घिरे हुए एक बाड़े में पड़े जानवर की तरह सोच रहा था कि उससे बाहर कैसे निकलूँ। माजी का जाना

अब टल नहीं सकता था। पहले कई बार माजी का भेजन का बात करके भी कोई-न कोई बहाना बनाकर मैं टाल गया था। लेकिन अबकी मेरा कोई भी बहाना चल नहीं सकता था। फिर माँजी को उसने उस तरह अपमानित कर दिया था, उसके बाद उन्हें रोकना उन्हें सीधे नरक कुंड में डाल देना था। उनकी घोर मूक यातना का मुझे अहसास था। अब मैं उन्हें कुसुम से दूर करके ही उनकी चुपचाप रोती आत्मा को थोड़ा आराम पहुंचा सकता था।

—बीबीजी, पर्दे के पीछे से तभी लड़के की आवाज सुनायी दी—साहब जा रहे हैं।

सुनकर झट से उठकर निमला ने राजेश से कहा—जरा रुको, मैं अभी आती हूँ।

वह चली गयी, तो राजेश ने एक और सिगरेट जलाया और सिर झुकाकर बार बार उस उगलियों में उलट पुलटकर राखदानी पर पटक-पटक कर राख झाड़ने लगा। वह गहरी गहरी सांसें ले रहा था और सोच रहा था कि अब कहां जाया जाए? यहाँ रुकना तो बिलकुल सुरक्षित नहीं है। रमन कह चुका है कि उसका साथ नहीं देगा। उसे अपने कई पुराने दोस्त याद आये। उसके जीवन में जैसे लड़कियों की कभी कमी नहीं रही थी वैसे ही दोस्तों की भी कभी कमी नहीं रही थी। लेकिन वह जानता था कि लड़कियों में जो समर्पण की भावना थी वह दोस्तों में न थी। उसे तो हमेशा यह लगता रहा था कि लड़कियों के ही कारण यार लोग उससे दोस्ती गांठते थे। इस रमन का भी तो निमल पहले पहल उसके पास ही मिली थी। लेकिन यह मानना होगा कि निमल को प्राप्त कर लेने के बाद भी रमन ने उसके साथ अपनी दोस्ती बरकरार रखी थी। कई बार लोगों ने तो किसी न किसी लड़की का उड़ाकर उसे बिलकुल भुला ही दिया था। कौन जाने रमन निमल के कारण ही आज भी उससे सम्बन्ध बनाये रखने को मजबूर हो। निमल उसे कितना चाहती थी और अब भी लेकिन यह तो मानना ही होगा कि रमन उदार है और फिर जो बात राजेश के मन में अचानक ही उठी थी उससे वह शरमा गया था। उसे बड़ा

अफसोस हुआ था कि नीला का मामला लेकर वह रमन के पास क्यों गया था। नीला ने ही रमन को बात बता दी होगी। छोडो इन बातो को। असल बात तो यह है कि अब कहाँ जाया जाए? वह याद करने लगा। एक एक चेहरा उसके सामने उभरता था और गायब हो जाता था। काश, जगत कही दूर किसी शहर मे होता! वह कितना भावुक और भावुक होने के कारण ही कितना मूर्ख है! वह कुसुम पर चुपके चुपके जान देता है और इसी कारण वह राजेश का हर हुक्म एक गुलाम की तरह बजाता रहता है। वह जो भी कह देता है, उसे आख मूदकर कर देता है। वह न होता तो क्या वह कुसुम का पिंड छुडाकर वहाँ से भाग सकता था?

उसने सोच लिया था कि रात मे, जैसे भी हो कुसुम से अपने को बचा लेना था और दूसरे दिन सुबह ही भाग निकलना था। पार्क से लौटने के बाद अपने मकान के औसार पर चढते ही अचानक उसने ऊपर की सीढियो पर चढते हुए कहा था—कुसुम, तुम जरा रुको मैं टैक्सी के लिए फोन कर दू।

कुसुम ऊपर नही जाती थी। वह औसारे मे ही टहलती रही थी और राजेश ने ऊपर जाकर टैक्सी के बदले जगत को फोन किया था, —हलो! तुम अपनी गाडी लेकर तुरत आ जाओ, एक बहुत ही जरूरी काम है।

जगत को फोन कर वह नीचे उतरा था, तो जैसे वह एकदम बदला हुआ आदमी था। कितनी राहत उसे मिल गयी थी। लम्बा तगडा, गोरा चिट्टा जगत! उसके होठ कितने पुष्ट है और उसकी काली-काली घनी बरौनिया! उनके साये मे तो कोई भी आश्वस्त रह सकता है! वह पुलिस के अफसरो की तरह अपने हाथ मे एक रूल रखता है।

लेकिन राजेश अपने मन की खुशी को अन्दर ही दबाये रहा था। वह कुसुम के पास आया था, तो वही टागे घसीट घसीटकर चलने वाला आदमी था।

—तुम कही नही जाओगे, राज!—तभी कमरे मे घुसती हुई निर्मला ने कहा—रमन कह गया है। अब जल्दी उठकर नहा-धो लो।

बहुत थके हुए हो।

कुर्सी से उठते हुए राजेश ने घबराकर पूछा—बाहर का दरवाजा बन्द कर दिया है न, निर्मल ?

—नहीं तो, क्या ?—मुस्कराते हुए निर्मला ने पूछा।

—बन्द करवा दो, निर्मल, बन्द करवा दो ! कम से कम इतनी तो सुरक्षा रहे !

निर्मला हँस पड़ी। हँसते हुए ही उसने कहा—इतना नहीं डरते, राज, इतना नहीं डरते !

—नहीं नहीं, तुम बन्द करवा दो !—राजेश ने उसकी पीठ पर अपना हाथ रखकर उसे ढकेलते हुए सा कहा—तुम उसे नहीं जानती, कुछ नहीं जानती !

निर्मला आँचल का कोना अपने मुँह में ठूँसती हुई बाहर चली गयी। राजेश ने कान लगाकर दरवाजा बन्द होने की आवाज सुनी।

3

—सुना, निमल,—राजेश ने रमन के कार्यालय चले जाने के बाद कहा—यही सब समझाने के लिए उसने मुझे रोक लिया है! आफ!

कहकर उसने अपनी आदत के अनुसार दोनों हाथों से सिर थामकर झुका लिया।

—उसका सुझाव तो मुझे कोई गलत मालूम नहीं देता,—निमला ने कहा—आखिर तुम कितनी लडकियां को छोडोगे?

—कोई नहीं समझता, कोई नहीं समझता!—अपना माथा दोनों हाथों से पीटता राजेश बोला।

—अरे, रे! यह क्या कर रहे हो?—उसके हाथ उसके सिर से हटाते हुए निमला ने डांटते हुए कहा—इस तरह कोई पागलपन करता है!

राजेश थोडी देर अपनी गर्दन खुजलाकर अचानक जैसे तैश में आकर बोला—कहो तो मैं लिखकर दे दूं? कुसुम आएँ, तो रमन उसे समझा ले और स्वयं जहां चाहे उसे कालेज में भर्ती करा दे। उसका खर्चा भी मैं रमन के पास ही भेज दिया करूँगा।

—वह आफिस से आ जाए तो उसी से यह बात कहना,—निमला ने कहा—मेरा खयाल है कि इतनी जिम्मेदारी वह ले लेगा।

—हूं!—राजेश ने नथुने फुलाकर कहा—यह उसकी खाम-

खयाली है! उसे कालेज में नहीं पागलखाने में भर्ती कराना चाहिए समझी?

निमला को हँसी आ गयी। लेकिन तुरन्त ही मुह पर आँचल रखकर वह बोली—राज जरा तुम धीरज से काम लो। इस तरह अपना दिमाग गरम कराग तो कम काम चलेगा? तुम बुद्धिमान आदमी हो। एक समस्या आन पड़ी है, तो

राजेश ने हाथ उठाकर उसे चुप रहने को कहा। फिर वह कुर्सी पर ही पाव समेटकर उठग सा गया और एक सिगरेट जलाकर मुह बिगाड़ बिगाड़कर धुआ छोड़ने लगा। फिर अचानक ही जैसे चौंककर बोला—मुझे यहाँ से जाने दो निमल!

तभी बाहर का दरवाजा खटखटाने की आवाज आयी और राजेश पागलो की तरह कुर्सी से कूदकर अपने चारो ओर ऐसे देखने लगा, जैसे वह चारो ओर से घिर गया हो। वह सूखे गले से हकलाते हुए बोला—निमल, देखो कहीं लडका दरवाजा खोल न दे।

—वह नहीं खोलेगा मैं ताकीद कर चुकी हूँ, लेकिन तुम

दरवाजा खटखटाने की आवाज लगातार आती जा रही थी।

—यह वही है, वही है!—दहशत के मारे कापते हुए राजेश ने कहा—अब मैं क्या करूँ? तुम लोगो ने क्या रोका मुझे? हे भगवान!

उसकी वह हालत देखकर निमला भी हतबुद्धि सी हो गयी। दरवाजा खटखटाने की आवाज लगातार आती जा रही थी। राजेश भागकर सोने के कमरे में घुस गया और अन्दर से फटाफट सारे दरवाजे और खिडकियाँ बन्द कर लीं तो एक हड़बड़ाहट में ही निमला ने लडके को पुकारकर कहा—कह दे साहब नहीं है!

लडका दरवाजे की ओर बढ़ा तो निमला भी उसके पीछे पीछे हो ली। लडके ने जब उसका आदेश सुनाया तो बाहर से आवाज आयी—साहब नहीं है तो क्या हुआ? मेम साहब तो है। उनसे बोल कि उनकी सुशी आयी है!

लडके ने पलटकर निमला की ओर देखा ही था कि निमला के मुह से निकल गया—सुशी! सुशी! तुम आयी हो?—और उसने

दरवाजा चट खोल दिया।

सामने जो आकृति थी, उसे देखत ही निमला चौंककर दो कदम पीछे हट गयी।

वह मोटी फ्रेमवाला काला चश्मा पहने हुए थी। उसके सिर पर एक बडी, लाल रग की शोख, छीटदार रूमाल बँधी थी, जो ललाट पर चश्मे तक लटकी हुई थी। उसके गले मे बडे-बडे मूगा की माला थी। शरीर पर लाल छीट का ब्लाउज और लाल रग की ही साडी थी जो नीचे उसके पावा का ढँकती हुइ जमीन को छू रही थी। कलाइयो म चार-चार सोने की चूडिया थी, दोना हाथो की दो दो उँगलिया म अँगूठिया थी और बायें हाथ म लाल रग का ही शान्ति-निकेतनी बटुआ था।

अन्दर आकर, लाल लाल होठा म मुस्कराते हुए, दोना हाथ जोड-कर उसन कहा—नमस्त, निमला बहन! तुमने मुझे पहचाना नही? मैं भी तो तुम्हारी सुशी ही की तरह हूँ!

—हा हाँ आओ!—अपन पर काबू पाकर निमला न आगे बढकर हाथ पकडते हुए कहा—किस गाडी म तुम आयी हो? तुम्हारा सामान कहा है?

—सामान वेटिंग रूम म ह, सुबह की गाडी से आयी थी,—उसके साथ चलते हुए उसने बताया।

बैठक मे उसे बैठाकर निमला ने कहा—मैं चाय के लिए कह दू।

रसोई मे जाकर निमला ने फुसफुसाकर लडके स कहा—तू भागकर आफिस चला जा। साहब से कहना, कुसुम आ गयी है। जल्दी आ जाएँ।

बडी कोशिशा के बावजूद निमला हडबडाहट पर काबू न पा रही थी। राजेश ने अपने को उनके मोन के कमर मे बन्द कर उस इस तरह दोषी बना दिया था कि अन्दर ही अन्दर उसकी रूह काप रही थी। उसकी समझ मे ही न आ रहा था कि वह आनेवाले तूफान का मुकाबला कैसे करेगी।

वह रसोई म ही काफी देर तक रुकी रही और चाय बगैरह

बनाने मे अपने को व्यस्त किये रही। वह सोचती थी कि रमन जल्दी आ जाए तो उसे राहत मिले।

काफी दर हो गयी, तो कुसुम उठी और ढढत-ढाढते रसोई मे पहुच गयी। निमला को व्यस्त देखकर उसन कहा—लडका कहाँ चला गया, जो तुम मुझे बैठाकर यहा यह सब कर रही हो ?

—उसे सब्जी लाने क लिए बाजार भेजा है,—टोस्ट मे मक्खन लगाते हुए निमला ने सिर झुकाये हुए ही कहा—तुम आराम से बठो।

—लाओ, लाओ, बहन ! तुम तो खामखाह के लिए तकल्लुफ करने लगी,—टे म चायदानी रखत हुए कुसुम न कहा—मैंने तो स्टेशन पर ही नाश्ता कर लिया था।

—तुम्हें सीधे हमारे यहाँ आना चाहिए था,—निमला न टोस्ट की तश्तरी ट्रे म रखत हुए कहा—तुमने अपना सामान स्टेशन पर क्यो छोड दिया ?

कुसुम ट्रे उठाने लगी, तो निमला ने उसे रोकत हुए कहा—नही मैं चलती हू न ? तुमने मेरे सवाल का जवाब नही दिया ?

निमला के पीछे पीछे चलत हुए कुसुम न बताया—सामान लेकर तुम लोगो का मकान कहा-कहाँ ढूढती फिरती ? फिर मुझे शाम की ही गाडी म चले जाना है।

निमला न बैठक म प्रवश किया ही था कि उसकी निगाह दरवाजे के पर्दे पर पडी थी। उसे उठाकर एक पल्ले के ऊपर डाल दिया गया था। टे मेज पर रखकर निमला पदा गिराने गयी तो कुसुम न उसे रोकत हुए कहा—रहने दो, बहन, मुझे गर्मी लग रही है।

निमला न लौटकर दखा, कुसुम टोस्ट खा रही थी और उसकी निगाह दरवाजे पर थी। दरवाजे से होकर गलियारा बाहर को गया था। निमला को यह समझन म दर न लगी कि कुसुम गलियारे मे जान आन वाला पर निगाह रखना चाहती थी।

—और क्या हाल चाल है, कुसुम ?—कोई बात शुरू करने क लिए निमला न पूछा था।

—सब ठीक है,—कुसुम ने कह दिया।

वह कितनी जल्दी-जल्दी टोस्ट खा रही थी और चाय पी रही थी! चश्मा भी नहीं उतार रही थी। उतार देती, तो उसकी आंखों से शायद उसके मन के किसी भाव का पता चलता।

—और चाय लो, कुसुम,—निर्मला ने कहा। उसकी समझ में न आ रहा था कि और वह क्या कहे?

—राज कहीं बाहर गया है क्या?—कुसुम ने बिलकुल सहज ढंग से ही पूछा।

हे भगवान! रमन नहीं आया और तूफान का संकेत पहुंच गया। अब क्या करे वह? क्या जवाब दे कुसुम को? सोचने का समय नहीं है और न सोचकर जवाब देने लायक यह सवाल ही है और उसने कुल साहस बटोरकर सच ही कह देना ठीक समझा। आये तूफान आते हुए तूफान को कौन रोक सकता है? उसे तो, चाहे जैसे भी हो झेलना ही पड़ता है। उसने यों ही लापरवाही के भाव से कह दिया था—वह अभी सो रहा है

—सो रहा है? इस समय तक वह सो रहा है?—चश्मा उतारते हुए कुसुम ने निर्मला की ओर घूरकर देखते हुए पूछा—वह क्या सारी रात तुम्हारे साथ जगा रहा था?

यह कैसा सवाल है? इस सवाल का क्या अर्थ है? निर्मला तिलमिला उठी। उसने आंखें झुका ली। वह क्या जवाब देती?

—शर्म आ रही है?—कुसुम के नथुने फड़कने लगे। उसकी आंखों में एक कातिलाना चमक उभर आयी। वह मटककर बोली,—दूसरी के मर्द के साथ सोने में शर्म नहीं आती और बात करने में शर्म आती है?

—क्या कह रही हो?—निर्मला ने यों ही टालने के लिए कह दिया। वह इस समय कुसुम से बिलकुल ही उलझना न चाहती थी। पता नहीं रमन अभी तक क्यों नहीं आया? कहीं वह न आया तो? नहीं, वह ऐसा नहीं करेगा। लेकिन जब तक वह न आये

—वाह! तुम्हारी समझ में नहीं आ रहा है न?—उसकी ओर

तरफ घर देखते हुए कुसुम ने कहा—तुम्हारी जैसी छिनाला के कारण ही तो वह मेरे पास से भागता फिरता है !

उन नजरों को देखते ही निर्मला की जान निकल गयी थी। वह भय और अपमान से कांपती हुई बोली—मेरे साथ ऐसी वैसी बातें मत करो कुसुम। जो करना हो उसी के साथ करो। वर्ना

—वर्ना तुम क्या कर लोगी ?—कुसुम खड़ी होकर चीख उठी—चोरी और ऊपर से सीनाजोरी ?

—राज !—भय और गुस्से से और कुछ न सूझा, तो निर्मला सहसा पुकार उठी—राज ! देखो, अपनी इस कुसुम को !—और वह सोने के कमरे की ओर भागी।

उसके पीछे-पीछे कुसुम भी दौड़ी।

राज के कानों में पहले कुसुम की चीख और फिर निर्मला की पुकार सुनाई पड़ी थी तो उसकी हवा सरक गयी थी। वह क्या करे, उसकी समझ में न आया था। वह कमरे के एक कोने में खड़ा खड़ा कांप रहा था। तभी कुसुम ने कमरे का दरवाजा पीटते हुए चिल्लाकर कहा—खोलो, खोलो दरवाजा !

—खोलो राज !—निर्मला ने भी कहा—यह मुझे गाली दे रही है और तुम

सुन रहे हो !—कुसुम ने उसकी बात पूरी करते हुए कहा—हां हां ! आओ, राज, और अपनी चहेती की ओर से मुझसे लड़ो !

राजेश की बुद्धि इस हड़बड़ाहट में भी काम कर गयी थी। कोई चारा न देख कर उसने अपने को संभालकर दरवाजा खोला और मुंह पर हाथ रखे ऐसे खड़ा हो गया, जैसे जंभाई ले रहा हो !

—हूं !— कुसुम क्रुद्ध बिल्ली की तरह गुर्रायी—नींद अभी पूरी नहीं हुई है न ! जरा देखूं वह बिस्तर, जिसपर रात तुम दोनों सोये थे !

कुसुम अन्दर जाकर एक बिस्तर को इधर उधर झुककर सूंघने लगी। फिर उसने मुंह ऊपर उठाकर कहा—इसपर तो तुम लोग नहीं सोये थे। फिर वह दूसरे बिस्तर को एक बार ही सूंघकर निर्मला

की ओर एस देखती हुई बोली थी, जैसे झपट्टा मारकर उस नाच लेगी —यह रहा वह बिस्तर ! और तुम मेरे सामन सतवंती बन रही थी ?

—राज !—निमला दांत पीसकर बोली—इससे कहो कि यह चुप रह

—क्या बात ह ? क्या बात ह ?—तभी दरवाजे के बाहर स सहसा रमन की आवाज सुनायी दी ।

निमला रोती हुइ उसके पास जा उसकी छाती मे अपना मुह गाड दिया ।

—क्या हुआ ? तुम क्या रो रही हो ?—उसकी पीठ सहलाते हुए रमन न कहा—चलो, तुम लोग बैठक म चलो ! यहा इस तरह क्यों खडे हो ?

—मैं कहना था न कि यह महाकाली—जैस सहसा शेर होकर राजेश बोल पडा ।

कुसुम ने सिर से बधी हुई रुमाल को ललाट पर जरा और नीचे खीच कर कहा—रमन भैया ! तुम्हारे सामने ही यह सब होता रहा और तुम

—चलो, चलो, बठक म चलो —रमन न अपनी छाती मे निमला को उसी तरह चिपकाये बठक की ओर पाव बढाते हुए कहा—इस समय तुम लोग कोई बात नही करोग !

राजेश और कुसुम कुर्सियो पर बठ गये। निमला बैठ ही नहीं रही थी। उसकी रुलाई और बढ गयी थी ।

तब रमन न कहा—तुमलोग बैठो, मैं आ रहा हू ।—और वह निमला को लेकर सोन क कमरे मे आ गया था।

निमला की रुलाई थम ही न रही थी । रमन उसे समझा रहा था—उसकी तो किसी भी बात को बुरा मानना ही नहीं चाहिए, निमला । वह पागल नही हुई है, यही आश्चय की बात है

—तुम नही जानत उसने मुझे क्या-क्या कहा है !—रोती हुई ही निमला ने कहा ।

उसके आसू रूमाल म पाछकर उसके गाल थपथपात हुए रमन ने कहा—मैं सब समझ सकता हूँ, निमल। लेकिन उसके दिल दिमाग की जो हालत है वह भी मैं समझता हूँ। उस तुम माफ कर दो। मैं तुम्हे सब बता द गा तब तुम्ह खुद उसपर बडा अफसोस होगा और रहम आएगा। तुम यही लेटी रहो, मैं जरा उस दखता हू। अच्छा?

निमला चुप हा गई ता उस छोडकर रमन बैठक म आ गया, जहा राजेश और कुसुम ऐस बठे थ, जैस मातम मना रह हा।

बैठक मे घुसते ही रमन ने राजेश स कहा—राज, तुम जल्दी नहा धोकर खाने के लिए तैयार हो जाओ।

राजेश सिर झुकाय ही उठा और नीचे देखत हुए ही एक डाट खाय हुए बच्चे की तरह कमरे से बाहर चला गया।

तब रमन ने कोच पर अपने पास थपथपाकर कहा—कुसुम आओ मेरे पास बैठो!

सिर की रूमाल को ललाट पर जरा और नीचे खीचती हुई कुसुम उसके पास जाकर बैठी और सहसा ही सुबकने लगी।

—नहीं कुसुम, रोओ मत,—उसकी पीठ सहलाते हुए रमन न कहा—तुम्हार लिए मुझे कितना अफसोस और सहानुभूति ह तुम कल्पना भी नही कर सकती!

—राज को मेरे साथ भेज दो,—सुबकत हुए कुसुम न कहा—तुम जानते हो, उसके बिना मैं नही रह सकती! वह मुझे धोखा देकर भाग आया है। उसने एक गुडे का मेरे पीछे लगा दिया था।

—गुडा?—चकित होकर रमन ने पूछा—राज न सचमुच तुम्हारे पीछे गुडा लगा दिया था।

—हा भया!—आखे पाछकर कुसुम न कहा—वह जगत है न तुम उसे जानते हो

—हाँ हाँ! कहा?

—जिस दिन राज भागा था, उसके एक दिन पहले शाम का उसने जगत को बुला लिया था। वह अपनी गाडी लेकर आया था।

उसी की गाडी मे हम लोग माजी को छोडने रात को एक बजे स्टेशन गये थे। मेरा ख्याल था कि जगत स्टेशन से हमारे मकान पर छोडकर चला जाएगा। लेकिन वह नही गया। सुबह तक बैठक मे बैठकर वह राज से बातें करता रहा और दोनो शराब पीते रहे। वे बातें इतने धीमे धीमे कर रहे थे कि मैं कुछ सुन समझ न सकती थी। मैं इन्तजार करती रही, लेकिन राज सोने के कमरे म न आया। अब मेरा ख्याल था कि जगत सुबह चला जाएगा। लेकिन वह सुबह भी नहीं गया। उसी न उठकर चाय बनायी। फिर उन दोना ने चाय पी और मुझे भी पिलायी। मन ही मन मैं कुढ रही थी। लेकिन कुछ कर न पा रही थी। राज एक मिनट के लिए भी उससे अलग न हुआ कि उसी म कुछ कहू। राज न नहा धोकर कपडे बदले और जगत उसके पीछे पीछे लगा रहा। वह तो साथ भी न गया। फिर दोनो मेरे पास आये और राज बोला, 'कुसुम जल्दी तयार हो जाओ। हम नाश्ता किसी होटल म करेंगे,, जगत कह रहा है। वही से मैं कालेज चला जाऊगा और यह तुम्हे यहा छोड देगा।" मैं नहीं जाना चाहती थी, लेकिन इनकार न कर सकी।

कालेज के फाटक पर जगत न गाडी धीमी की, तो राज झट दरवाजा खोलकर उतर गया और जगत ने झट गाडी की रफ्तार तज कर दी। मैंन उसमे गाडी रोकने के लिए कहा, तो उसन कहा, "आप यहा उतर कर क्या करेंगी? चलिए, आपको छोडकर मैं चला जाऊगा। मुझे जो सन्देह था, वह पक्का हो गया। वह गाडी बहुत तेज चला रहा था, मैं कूद न सकती थी। लेकिन मैंन तय कर लिया था कि किसी भी चौराह पर वह गाडी रोकेगा या धीमी करेगा तो उतर जाऊगी, फिर दखूगी वह क्या करता है। लेकिन सयोग ऐसा कि हर चौराहे पर उसे हरी बत्तिया मिलती गयी और वह उसी रफ्तार म गाडी चलाता रहा। हमारे पास के मकान के चौराह पर उसने गाडी रोककर कहा, "अब आप चले जाइये। खामखाह के लिए परेशान हो रही थी।

इतना कहकर सास लेने के लिए कुसुम रुकी, तो रमन ने जैसे

राहत की सास लेकर कहा—फिर तुमने उस गुण्डा क्यो कहा ?

—बताती हू,—कुसुम ने फिर कहना शुरू किया—मैं अपने मकान का दरवाजा खोलकर अन्दर गयी ही थी कि पीछे से आवाज आयी "माफ कीजिएगा मेरा रूल यही कही छूट गया है" और वह बैठक म घुसकर इधर-उधर ढूढने लगा। एक कुर्सी के नीचे रूल पडा था। उसे उठाकर हथेली पर ठोकते हुए वह मेरे पास आया और मुस्कराकर कहा "राज ने कहा है हम लच भी साथ ही लेंगे। क्या आपलोग लच लेते है ?" मैं उसकी के रग और होठो की मुस्कान को एक नजर देखते ही ताड गयी कि उसके मन म क्या था। मैंने कह दिया, "राज तो वही कही लच ले लेता है और मेरा मन अब आज और कुछ खाने को नही है।

— क्यो ? ऐसा आप क्या कह रही है ?" उसने पास की कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "राज कह रहा था कि आपको खाना बनाना नही आता, आप दिन म भूखी ही रह जाएगी। इसलिए यह सोचा गया कि 'नही, मुझे कुछ भी नही खाना है" मैंने कह दिया।

— 'आप शायद कुछ नाराज मालूम देती है', उसने कहा, 'जरा दो मिनट मेरे पास बैठिए न! राज कह रहा था कि आप उससे सन्तुष्ट नही है बैठ जाइए, बैठ जाइए ? मुझसे घबराने की कतई जरूरत नही है। आप जानती है, मैं राज के गहरे दोस्तो म हू और आपको आप आप बैठ जाइए तभी मैं कुछ कहूगा।"

—मैं अब उसका पूरा नाटक देखने के लिए तैयार थी। तुम तो जानते हो रमन भया, मैं नही जानती कि डर क्या होता है। मैं तो यह जानती हू कि कोई मेरी जान ले सकता है लेकिन जोर-जबर-दस्ती करके कोई मुझसे कुछ नही पा सकता। मैं उसके सामने एक कुर्सी पर चुपचाप बैठ गयी तो वह बोला, 'राज कहता था, आप उससे सन्तुष्ट नही है। क्या यह ठीक है ?

— बिलकुल ठीक है,' मैंने सहज ढग से ही कह दिया।

— बात यह है कि वह जरा कमजोर है, उसने कहा, लेकिन वह आपको हर तरह से सन्तुष्ट और प्रसन्न देखना चाहता है। इसलिए

कुसुमजी, राज बड़ा ही कोमल आदमी है। उसका दिल मक्खन की तरह है, दिमाग माइक की तरह और वह नाजुक ख्यालों का चाहक है। लेकिन आप आप आप वह कहता था, उसके बिलकुल उलटी हैं। आपको हर चीज में सख्ती, ताकत और जंगलीपन पसन्द है। माफ कीजिएगा, इन गुणों को मैं कोई बुराई नहीं समझता और राज भी नहीं समझता। लेकिन वह क्या करे, अपने स्वभाव से वह विवश है और इसका उसे बड़ा दुख है, मेरे कारण कुसुम को परेशानी क्या हो? देखिए कुसुमजी, आदमी के पास जो चीज नहीं होती वह किसी को कहां से दे सकता है? लेकिन वह चीज किसी दूसरे से तो दिलवा तो सकता है न, जिसके पास हो?'

—कहकर वह जरा देर के लिए रुका और मेरी ओर पलक झुकाकर देखा। मैंने कुछ न कहा, तो वह आगे बोला, राज आपको हर तरह से सन्तुष्ट और प्रसन्न देखना चाहता है। उसका ख्याल है कि जो चीज आपको सन्तुष्ट और प्रसन्न कर सकती है, वह उसके पास तो नहीं है, लेकिन मेरे पास है। राज कितना उदार और समझदार है, आप तो जानती हैं। वह मुझसे कहता था कि आप सहर्ष स्वीकार करें तो वह चीज मैं आपको दूं। आप तो जानती हैं वह मेरा गहरा दोस्त है और आप इजाजत दें तो मैं कहूं कि आपको आपको मैं भी बहुत चाहता हूं।"

—"लेकिन मैं तो इस दुनिया में राज के सिवा और किसी को भी नहीं चाहती।" मैंने भी उसी की तरह नरम और तरल स्वर में कह दिया।

—"वह मुझे मालूम है"—उसने फिर मुझे समझाते हुए कहा "तभी तो आज तक इस विषय में मैंने आपसे कोई बात नहीं की थी लेकिन मैं चाहता हूं कि आप राज के इस प्रस्ताव पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें।" कहते हुए वह अपनी कुर्सी से उठकर मेरी कुर्सी के पास की एक कुर्सी पर आ गया और आगे बोला—प्रेम प्रेम है और शरीर की मांग शरीर की मांग है। आप केवल प्रेम चाहती हैं, तो वह राज आपको जितना चाहे दे सकता है। लेकिन आपकी शरीर की

माग की पूर्ति करने म वह असमर्थ है। फिर वह क्या कर बेचारा, आप ही बताइए ? माफ कीजिएगा, राज की इजाजत लेकर ही मैं यह सवाल बिलकुल साफ साफ आपक सामने रख रहा हु । उसकी उम्र काफी हो चुकी ह । मेरा ख्याल ह कि अब आप उस उम्र का पार कर चुकी ह, ज सा कि राज भी कर चुका ह और मैं भी पार कर चुका हू, जब प्रेम एक दीवानगी होता ह और शरीर की माग उसके मात हत । अब तो आपकी, राज की और हमारी वह उम्र हैं, जब प्रेम शरीर की माग क मातहत होता ह, बल्कि सच पूछिये तो प्रेम कुछ होता ही नही, वह शरीर की माग का पर्याय बन जाता ह ।"

—"यह आप क स कह सकत है ?" मैंन पूछा ।

—' दखिए ' उसन फिर समझाते हुए कहा, ' सच बताइए अगर ऐसा न होता तो आप राज स प्रम करने, उसकी पूजा करने के बदले उस नोच नोचकर क्यों खाना चाहती हैं ?'

— 'यह आपस किसने कहा कि '

—' राज न ही मुझे यह बताया है, जगत न मेरी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा, "आप नाराज न हो, आदमी का सच्चाई से आँख नहीं चुरानी चाहिएँ, उससे सीधे आँखें मिलानी चाहिएँ ।"

— 'यह झूठ है, बिलकुल झूठ ह ! मैंने बिगडकर कहा, ' मैं ता राज रोज उसे ज्यादा और ज्यादा चाहती हूँ !

—' अभी आपन यह स्वीकार किया था कि आप उससे असन्तुष्ट है ?" उसन कहा ।

—' सो तो दूसरे के कारणा स हू," मैंने बताया ।

—"जरा बतान की मेहरबानी कीजिएगा ?' उसने कनखियो स मुझे देखते हुए कहा ।

— 'मैं तो इस कारण असन्तुष्ट हू कि वह और भी कितनी ही लडकियो पर और सबके ऊपर माजी पर जान देता है ।'

— 'वह ठहाका मारकर हँस पडा । फिर बोला, —आप कितनी बडी गलतफहमी की शिकार है ! राज तो किसी भी लडकी को नही चाहता ! वह किसी लडकी को चाह ही नही सकता ! वह आपको भी

नही चाहता !"

—"क्या कहते ह आप ?" मैंने बिगडकर कहा।

—"मैं बिलकुल ठीक कहता हू।" उसने कहा, "मैं राज की ही एक बार नही, सैंकडा बार बतायी हुई बात कहता हू। वह कहता है, लडकिया मेरी ओर आकर्षित हो जाती हैं, मेरे ऊपर जान देने लगती है, लेकिन मैं तो एक भी लडकी के प्रति कोई लगाव महसूस नही करता।"

—"आप झूठ कहते ह। बिलकुल झूठ।" मैंने कहा, "अगर ऐसी बात होती, तो वह मुझसे हर्गिज शादी नही करता। आपको मालूम है, मैंने पूरे आठ वर्ष तक उसका इन्तजार किया था। इस बीच उसने नीला से शादी भी कर ली थी। लकिन मुझे अपने प्रेम पर पूरा विश्वास था। मुझे मालूम था कि एक न एक दिन वह नीला को छोडकर मेरे पास आएगा। मेरे बराबर कोई और लडकी उसे प्यार कर ही नहीं सकती थी। आपको क्या मालूम कि नीला को छोडने के बाद जब हमारी मुलाकात हुई थी, तो इसने क्या कहा था ?"

—'कहिए ?'

—"उसने कहा था—'अब तुम्हारे प्रेम पर मुझे पक्का विश्वास हो गया ह। तुम्हारे प्रेम की परीक्षा लेने के लिए ही मैंने नीला से शादी की थी। उस बीच तुमने किसी स शादी कर ली होती, तो मैं समझ लेता कि तुम्हारा प्रेम झूठा था। लेकिन नही, तुम तो बिलकुल पार्वती की तरह हो। तुमने मेरे लिए जो तपस्या की ह, वह इस ससार मे कोई लडकी नहीं कर सकती।'"

—'और आपने उसे शिव समझ लिया।' हँसकर उसने कहा,—'आप बेहद भोली ह कुसुम जी। आप इतने वर्षों तक राज मे प्रेम करके भी उसे नहीं समझ पायी। वह लडकियों को फाँसने की कला म माहिर है। दरअसल, उसके अन्दर जो एक हीन भावना की ग्रथि है, उसे ही ढकने के लिए वह यह दिलचस्प खल खेलता रहता ह

—'लेकिन वह शादी तो'

—'अपनी जिन्दगी मे वह कितनी लडकियो के साथ शादी करेगा

भौर कितनी लडकियो को छोडेगा, आपको क्या मालूम ?"

—"मुझे वह नही छोड सकता, नही छोड सकता !"

—'मेरी वात सुनकर वह हँसा और अपनी कलाई घडी देखी। फिर मेरी पीठ पर हाथ रखकर उसने राजदाराना ढँग से कहा था, एक वात आप सच सच वताएँगी ?"

—"क्या ?" मैंने उसका हाथ हटाते हुए कहा।

—"उसके साथ शादी करने के वाद आपको एक दिन के लिए भी वह सुख मिला है, जो एक लडकी का अपने पति से मिलता है !"

—"मैं ऐसी बातें आपसे नही करना चाहती !" मैं उठती हुई वोली।

—"तव उसने मेरा हाथ पकड लिया और वोला—आप चाह तो उस सुख का एहसास मैं अभी आपको करा सकता हू। तव आप समझेंगी कि '

—"मेरा हाथ छोडिए। मैं अपना हाथ खीचती हुई चीखकर वोल उठी।

—'उसने मेरे मुह पर दूसरा हाथ रखते हुए कहा—इस तरह क्या चीखती ह ? आपको जा चाहिए "

—"तभी ऊपर स मकान मालकिन की आवाज सुनायी दी "क्या बात है, कुसुम ? तुम क्यो चीखी हो ? '

—"तव जगत न मेरा हाथ छोडते हुए कहा, "अच्छा, मैं जा रहा हूँ। यह मेरा काड है, इसमे मेरा फोन नम्बर भी है। आपको कोई जरूरत पडे तो याद कीजिएगा। या भी मैं आपकी खवर लेता रहूँ, राज एसा कह गया है। आपका यह जानकर अफसास होगा कि राज इस समय यहाँ स कम स-कम वीस पच्चीस मील दूर जा चुका होगा। वह आपको छोड रहा है।'

4

खाने की मेज पर चारों बैठे थे। एक ओर रमन और निर्मला और दूसरी ओर राजेश और कुसुम। कुसुम की वह रूमाल अब भी उसी तरह उसके सिर पर बँधी थी। उस सादा, छींटदार रूमाल से सिर पर उसके चेहरे पर एक अजीब सुन्दरता, पवित्रता और गरिमा आ जाती थी, जैसे चर्च में सिर पर रूमाल बाँधे लड़कियों में आ जाती है। यह बात कुसुम जानती थी और इसीलिए ऐसे अवसरों पर वह यह रूमाल अवश्य बाँधे रखती थी। वह सिर झुकाए हुए थी और चुपके चुपके रो रही थी। उसका इस तरह रोना निर्मला को बड़ा ही अजीब लग रहा था। वह सोच ही नहीं पा रही थी कि ऐसी लड़की कभी रो भी सकती है। उसे लग रहा था कि वह नाटक [illegible] कर रही है, रमन की सहानुभूति पाने के लिए। वह [illegible] या चिढ़ाती नजर से उसे देख रही थी और उसे बड़ा बुरा लग रहा था कि वह उनके खाने का मजा किरकिरा कर रही थी।

थोड़ी देर तक तीनों खाते रहे थे। राजेश और निर्मला को कुसुम के न खाने की कोई चिन्ता नहीं थी। लेकिन रमन [illegible] नजरों से देख रहा था कि कुसुम [illegible] नहीं है। आखिर उसने कहा—खाओ, कुसुम, खाओ!

—कुसुम ने डबडबाई आँखों से रमन की ओर [illegible]

भूख नहीं ह, भैया !

—निमला ने यह 'भैया' शब्द कुसुम के मुह से दूसरी बार सुना था। पहली बार जब सोने के कमरे के सामने उसने सुना था, तब ता उस पर ध्यान दने का उस होश-हवास ही नहीं था। लेकिन इस बार उसका पूरा ध्यान गया। उसने लक्ष किया कि इस अवसर पर इस शब्द का उच्चारण करते समय कुसुम के लहजे मे एक अजीब स्निग्धता, स्नेह और दयनीयता आ गयी थी। इससे वह और भी चिढ गयी। खसमखानी अपने भैया की बीबी को अभी छिनाल कह रही थी और इस समय कैसे बुलके चुला चुलाकर भैया भैया कर रही थी !

—कुछ तो खाओ, कुसुम ! रमन न फिर कहा।

—बिलकुल भूख नहीं ह भैया,—उसी लहजे म कुसुम न फिर कह दिया।

—बिलकुल भूख नहीं है !—तब अचानक मटककर राजेश न कहा और रमन और निमला का चकित कर दिया। लेकिन कुसुम बिलकुल अप्रभावित सी पूववत सिर झुकाये रही थी। फिर राजेश ने एक साहसपूर्ण दृष्टि निमला और रमन पर डाली और कुसुम को डाटते हुए सा कहा—खाओ ! खाओ ! यही सब तो तुम्हारी आदत है, जिनकी वजह स

अपने मिट्टी के शेर क साहस का देखकर रमन मन ही मन मुस्करा रहा था। वह जानता था कि इस समय हजरत काफी आश्वस्त हैं कि कुसुम उनक डांटने पर भी कुछ नहीं करेगी कुछ नहीं कहेगी। कुसुम न रमन की ओर अपनी उसी नजर से देखा, तो उसने अपने होठों पर आती मुस्कराहट को रोककर कहा था—खाओ कुसुम सब ठीक हो जाएगा। आंसू पोछ लो।

कुसुम हथेली म ही अपने आंसू पोछने लगी ता राजेश न फिर जैसे बिगड़कर कहा—क्या तुम लोगो न इसका फहडपन ! इसकी ऐसी ही आदतो क कारण तो

निमला के आश्चय का ठिकाना ही नहीं था। राजेश कुसुम को डांट भी सकता है, यह वह कभी सोच ही न सकती थी। उसके सामने

ही तो कुसुम ने उस बेइज्जत किया था, तब ता उसके मुह मे एक बात न निकली थी। और उसके पहले कुसुम के डर से ही हजरत सान के कमर म जा छुप थे। अब इस समय क्या हो गया था कि लगातार वह कुसुम को डाटे जा रहा था।

रमन सिर झुकाकर अपनी हँसी रोकने की कोशिश कर रहा था। कुसुम खान लगी ता निमला का आश्चय गुस्से म बदल गया। उस चुडैल ने कैसे इस समय राजेश की डाट सह ली थी ? अजीब गोरख-धधा है यह सब ! किस की बात पर क्या विश्वास किया जाए।

राजेश के चेहरे पर विजय की खुशी की चमक आ गयी थी। जब रमन न उसे नहाने धोने के लिए भेजा, वह नहान घर म काफी दर तक रह गया था। उसने सिगरेट की पूरी डिब्बी फूक दी थी। उसे अपनी भावी योजना बनाने के लिए काफी समय और इतमीनान चाहिए था। साथ ही वह यह भी चाहता कि रमन अकेले म कुसुम से काफी समय तक बात कर ले। वह बडा खुश था कि कुसुम न इस घर मे प्रवेश करते ही अपना रूप रग दिखा दिया था। इन लोगो को तो मेरी बात पर विश्वास ही न हो रहा था।

अपनी योजना के मातहत ही राजेश न रमन की उपस्थिति म कुसुम को डाटा था और उस अपनी इस पहली सफलता पर बेहद खुशी हुई। उस अब विश्वास हो चला था कि उसकी योजना सफल हो जाएगी।

खाना हो चुकने के बाद रमन न निमला को आराम करन के लिए सोने के कमरे म भेज दिया था। फिर तीनो जने बैठक म आ बैठे थे। राजेश इस समय बडे उत्साह मे था। उसम तरुणो की तरह चुस्ती आ गयी थी और उसका अग अग फडक रहा था। सिगरेट का धुआ छोडकर उसी न बात शुरू की। जब वह मैदान मे किसी दूसरे के हाथ म नहा छोडना चाहता था। जब कोई योजना राजेश के दिमाग म पक जाती थी तो वह बिलकुल शैतान की तरह काम करता था, बशर्ते कि उसके पुटठे पर किसी ताडे आदमी का हाथ हो ?

—हाँ, भाई रमन राजेश ने कहा—ता तुमने अपना प्रस्ताव

ही तो कुसुम ने उसे बेइज्जत किया था, तब तो उसके मुंह में एक बात न निकली थी। और उसके पहले कुसुम के डर में ही हजरत सोन के कमरे में जा छुप थे। अब इस समय क्या हो गया था कि लगातार वह कुसुम को डांट जा रहा था।

रमन सिर झुकाकर अपनी हँसी रोकने की कोशिश कर रहा था। कुसुम खाने लगी तो निमला का आश्चर्य गुस्से में बदल गया। इस चुड़ैल ने कैसे इस समय राजेश की डांट सह ली थी? अजीब गोरख-धंधा है यह सब! किस की बात पर क्या विश्वास किया जाए।

राजेश के चेहरे पर विजय की खुशी की चमक आ गयी थी। जब रमन ने उसे नहाने जाने के लिए भेजा वह नहाने घर में काफी देर तक रह गया था। उसने सिगरेट की पूरी डिब्बी फूंक दी थी। उसे अपनी भावी योजना बनाने के लिए काफी समय और इतमीनान चाहिए था। साथ ही वह यह भी चाहता कि रमन अकेले में कुसुम से काफी समय तक बात कर ले। वह बड़ा खुश था कि कुसुम ने इस घर में प्रवेश करते ही अपना रूप रंग दिखा दिया था। इन लोगों को तो मेरी बात पर विश्वास ही न हो रहा था।

अपनी योजना के मातहत ही राजेश ने रमन की उपस्थिति में कुसुम को डाँटा था और उसे अपनी इस पहली सफलता पर बेहद खुशी हुई। उसे अब विश्वास हो चला था कि उसकी योजना सफल हो जाएगी।

खाना हो चुकने के बाद रमन ने निमला को आराम करने के लिए सोने के कमरे में भेज दिया था। फिर तीनों जने बैठक में आ बैठे थे। राजेश इस समय बड़े उत्साह में था। उसमें तरुणों की तरह चुस्ती आ गयी थी और उसका अंग अंग फड़क रहा था। सिगरेट का धुआँ छोड़कर उसी ने बात शुरू की। अब वह मैदान को किसी दूसरे के हाथ में नहीं छोड़ना चाहता था। जब कोई योजना राजेश के दिमाग में पक जाती थी तो वह बिलकुल शैतान की तरह काम करता था, बशर्ते कि उसके पुट्ठे पर किसी तगड़े आदमी का हाथ हो?

—हाँ, भाई रमन, राजेश ने कहा—तो तुमने अपना प्रस्ताव

मरे सामने रख दिया है ?

—अभी नहीं —रमन ने लापरवाही से कह दिया।

—तो अब रख दो,—राजेश ने कहा—जो बात होनी है, चटपट हो जानी चाहिए। समय बिलकुल बरबाद नहीं होना चाहिए।

— तो तुम अपने ही मुंह से रख दो,—उसी लापरवाही से, सोच पर उठगते हुए सा रमन बोला।

दरअसल कुसुम के मुंह से वे सब बातें सुनकर रमन जिन परिणामों पर पहुंचा था, उनमें वह मन ही मन बड़ा परेशान था। उसे लगा था कि जब राजेश ने कुसुम को छोड़ने की तैयारी कर ली है और यह निश्चय है कि बेचारी कुसुम मारी जाएगी। वह कुसुम को किसी तरह फिलहाल बचा लेना चाहता था, लेकिन उसे लगता था कि कुसुम उसकी बात मानेगी नहीं। राजेश अपनी ग्रंथि से विवश है तो कुसुम भी अपनी ग्रंथि से विवश है। इन दोनों का कोई इलाज नहीं है। लेकिन वह देख रहा था कि राजेश बच जाएगा और कुसुम मारी जाएगी। हमारे समाज में यही होता है, मर्द बच जाता है और औरत मारी जाती है। यह मर्दों का समाज है यहां घर में और बाहर मर्दों की हुकूमत चलती है। मर्द मर्द का साथ देते हैं। जगत अपनी तरह का कोई अकेला मर्द नहीं है। सभी मर्द कमोबेश जगत की ही तरह हैं। वे सभी राजेश का साथ देंगे। लेकिन कुसुम का साथ कौन देगा ? आश्चर्य है, यहां औरत भी औरत का साथ नहीं देती। निर्मला भी कोई अपनी तरह की अकेली औरत नहीं है। सभी औरतें कमोबेश निर्मला की ही तरह हैं। वे सभी भी मर्दों का ही साथ देती हैं, वे जानती हैं मर्दों का विरोध कर वे कहीं की न रहेंगी। फिर भी वह कुसुम को बचा लेना चाहता था, जैसे कि उसने नीला को बचा लिया था। ओह ! नीला को भी राजेश ने कितना बदनाम कर दिया था ! ठीक वही बातें जो अब यह कुसुम के बारे में कहता फिरता है नीला बारे में भी प्रचारित कर रहा था। लेकिन नीला कुसुम की तरह नहीं थी। उसमें एक चेतना थी। वह मर्दों से मर्दों के समाज से सब तक लीफों को सहकर भी लड़ने के लिए तैयार थी। किस तेवर से उसने

उस समय कहा था, "रमन भाई, आप चलने दीजिए, जैसे चलता है। इस मद के नामद बच्चे को मैं नाको चने चबवा दूंगी, आप दखिएगा! इस जनखे न आखिर मेर साथ शादी करने की हिम्मत कैसे की ? मैं इसे उसी तरह मारूँगी जैसे दुसाध सूअर को जिदा मारते हैं एक कच्ची डाल म बाधकर उलटे लटकाकर, नीचे आग जलाकर चारा ओर से सूअर की देह को बर्छो मे खोम खामकर! आपन कभी वह दश्य देखा है रमन भाई ? कभी सूअर का चीखना सुना ? मैं इस सूअर के बच्चे को उसी तरह जिदा मारना चाहती हूँ और उसी तरह इसका चीखना सुनना चाहती हूँ! और यह कुसुम क्या कहती ह 'मै तो इस कारण उससे असतुष्ट हूँ कि पुरुष! वाह री सती पावती! मैंने उसे प्राप्त करने के लिए पूरे आठ वर्ष तपस्या की ह! की ह तो पहनो न अपने इस शिव को गले म, इस तरह हाय तौबा क्यो मचा रखी ह ? रमन को गुस्सा आता था फिर पछतावा भी। ऐसी मूख लडकी पर गुस्सा क्या करना! वह कुसुम का भविष्य देख रहा था उस वह बचा लेना चाहता था लेकिन वह कुछ समझेगी कम ? नीला तो समझदार थी। उसने उसम एक ही बात तो कह दी थी "नीला इस एक व्यक्ति निहायत बेहदा व्यक्ति को सबक सिखाने क लिए तुम अपना जीवन शक्ति और भविष्य क्या नष्ट करोगी ? तुम्हार लिए काम करने के लिए और अपनी शक्तियो के उपयोग के लिए कितना व्यापक क्षेत्र पडा हुआ ह। छोडो इस जहन्नुम के कीडे को! ऐसी ही बात इस पावती की बच्ची स इसके शिव क बच्चे के बारे मे कोई कह तो ? जाने दो जान दा! तुम्हारा काम कोशिश करना है। कोशिश से बाज आना ठीक नही होगा। कौन जाने कही कोई बात ही बन जाए। वह कोशिश कर गुजरना चाहता था, इसीलिए वह अपना प्रस्ताव सीधे कुसुम के सामने रखना चाहता था। लेकिन राजेश न जब आप ही बात शुरू कर दी थी तो वह क्या करता! अपनी उपस्थिति म राजेश मे उत्पन्न साहस को ता वह समझता था लेकिन इस तरह अचानक ही उत्साहित हो उठना उसकी समझ मे नही आ रहा था। वह इसे भी समझ लेना चाहता था।

राजेश कुछ कहे, इसके पहले ही रमन फिर जँभाई लेता बोल उठा था—भाई, मुझे तो नींद नहीं आ रही है। खैर तुम लोग बातें करो।

— नहीं रमन भैया —कुसुम बोल उठी—इसकी बात का मुझे कोई भी एतबार नहीं रह गया है। आप नहीं सुनेंगे तो मैं भी नहीं सुनूँगी!

यह सुनकर राजेश ने चौंककर कुसुम की ओर देखा। तब रमन ने कहा—तुम लोग भी थोड़ा आराम कर लो, तो कैसा?—फिर वह सहसा उठकर खड़ा हो गया था और बोला था—मैं सोने के कमरे में जाता हूँ। तुम लोग यहीं कोच पर

—नहीं नहीं! राजेश ने इनकार करते हुए कहा—मुझे तो दिन में सोने की आदत ही नहीं है!

रमन मन ही मन मुस्कराया था। फिर बोला—अच्छा तो मैं कुसुम को भी अपने साथ ले जाता हूँ। तुम यहाँ बैठकर कुछ पढ़ो।

—भैया!—कुसुम बोल उठी।

लेकिन उसे हाथ उठाकर चुप कराते हुए रमन ने कहा—घबराओ नहीं कुसुम! राज यहाँ से कहीं नहीं जाएगा। फिर भी तुम्हें विश्वास न हो तो बैठक का दरवाजा बाहर से बन्द कर सकती हो। राज को कोई उज्र नहीं होगा। आओ चलो।

वे बाहर आए तो कुसुम ने अपने हाथ से दरवाजे में कुंडी लगाई और रमन से कहा—भैया एक ताला दो!

—चलो चलो!—रमन ने कहा—चौपाए को बाँधकर रखा जा सकता है, दोपाए को नहीं। तुम कैसी खामख्याली में पड़ी हुई हो।

सोने के कमरे में निर्मला बिस्तर पर जागी हुई पड़ी थी। उसकी ओर देखकर रमन ने कहा—तुम पड़ी रहो, निर्मल, मैं कुसुम को यहाँ कुछ बातें करने के लिए लाया हूँ। आओ कुसुम, तुम इस बिस्तर पर बैठो।

वह बैठ गई तो उसके सामने निर्मला के पास बैठते हुए रमन ने कहा—सुनो कुसुम मैं अकेले में बातें करने के लिए ही तुम्हें यहाँ

लाया हूँ। तुम नहीं जानती कि राज कितना चालाक, धूर्त और तेज आदमी है। मुझे लगता है कि उसने तुम्हें छोड़ने का पक्का निर्णय कर लिया है

—तुम भी यही कहते हो, रमन भइया ?—व्याकुल होकर मुधा ने कहा—वह मुझे हर्गिज नहीं छोड़ सकता ! तुम जानते हो, मैंने उसे कैसे पाया है ! तुमको नहीं मालूम होगा, ये कि एक बात मेरे भाइयों के सिवा और किसी को भी नहीं मालूम है। जिस दिन हमारी शादी की तारीख पक्की करने राजेश आया था हमारी माताजी की तबीयत बहुत खराब थी। भाइयों ने ऐसे अवसर पर बात टाल देनी चाही थी। लेकिन मैं अपनी जिद्द पर अड़ गई थी। मैंने साफ साफ कह दिया था कि अभी तारीख पक्की करो, वर्ना मैं अभी राज के साथ चली जाऊँगी। मजबूर होकर उन लोगों ने तारीख पक्की की थी। शादी के दो दिन पहले माताजी की हालत बड़ी गम्भीर हो गई थी, तो भाइयों ने कहा,— 'राज को शादी की तारीख मुल्तवी करने का तार दे देते हैं। लगता है, माता जी एक दो दिन की ही मेहमान हैं।' लेकिन मैंने किसी की नहीं सुनी थी। तब भाई लोग माथा पीटकर रह गए थे। बारात आयी थी। मैंने अपने ही हाथों से [illegible] किया था और बारात जब दरवाजे पर लगी थी, [illegible] हार लेकर मैं द्वार पर गयी थी और घोड़ी पर [illegible] पहनाया था। आपको मालूम नहीं, मेरे उस [illegible], [illegible] ने कितनी प्रशंसा की थी। खैर। हमारी शादी [illegible] एक घंटे के अंदर ही रात में ही हमारी [illegible]। [illegible] जैसे ही हम राज के मकान पर गाड़ी से [illegible], [illegible] था, जिसमें माताजी की मृत्यु का समाचार [illegible] रो पड़ी। फिर बोली—और आज [illegible], [illegible]! नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता ! [illegible] ने दोनों हाथों से अपना मुँह [illegible]।

रमन दंग था। [illegible] में ऐसी भी याद रहती है, [illegible]

[illegible]

रमन का यह नहीं मालूम था। वह जान-बूझकर राज की बारात म नही गया था। उसन राज का कुसम क साथ शादी करन म मना किया था और वह न माना था ता बिगड गया था।

रमन अवाक सा थोडी दर तक कुसुम की ओर दखता रह गया। फिर बोला—कुसुम, तुम्ह अदभुत भी कहन का जी करता है और और लेकिन अब क्या कहूँ। तुम केवल मूख नही हा, तुम मूर्खो म भी अदभत हा! तुमन जो किया, सो किया, लकिन आज यह बात अच्छी तरह समझ ला कि राज तुम्ह उसी तरह छोडन जा रहा है, जैस उसन नीला का छाड दिया था। उसक दिल म तुम्हारे लिए न कभी रत्ती भर मुहब्बत रही न है और न होगी। जगत की नीयत भले ही खराब हो लकिन तुम यह बात मरे मुह से सुन लो कि उसन तुमसे राज के बारे म जो जा बातें बतायी थी, उनम एक एक बात बिलकुल सही है। राज किसी लडकी के योग्य है ही नही। नीला भी मुझे बता चुकी है कि राज बिलकुल नपुसक है। इसका अनुभव तुम्ह भी अच्छी तरह हा चुका है, भले ही तुम स्वीकार न करो।

—नही नही! कुसुम की रुलाई उबल पडी। वह बिस्तर पर सिर पटककर फूट फूटकर रोन लगी।

निमला रमन का मुह ऐसे मुह बनाकर ताक रही थी, जैस कि उसन काइ बहुत ही झठ और गन्दी बात मुह स निकाल दी हो।

—अब रोन पीटन से क्या हागा, कुसुम?—रमन न कहा—तुम अब भी अपन का सँभालो, राज को ठीक ठीक समझो, अपनी गैरइन्सानी मुहब्बत की बेहूदगी को जानो और अपने भविष्य की चिन्ता करो। वर्ना एक दिन एसा आएगा कि तुम पागल होकर सडका पर नगी डोलोगी और लडके तुम्ह ढेला मारेंगे।

निमला और कुसुम न अपन कानो पर हाथ धर लिये थे। रमन जान बूझकर इन कडे और नगे शब्दा का प्रयोग कर रहा था। उसन समझ लिया था कि मामूली और नम शब्दा का इस मूख और भावुक लडकी पर कोई भी असर नही पडन का। इस आसमानी पावती को जमीन की एक मामूली औरत की सतह पर लान के लिए आवश्यक है

कि इसे चोटी पकडकर पत्थर पर पटक दिया जाए। नर्मी से पेश आने पर तो वह कोई-न कोई देवी कहानी लेकर अपना चमत्कार दिखाने लगेगी। उसने उसी लहजे में आगे कहा—बालों से हाथ हटाओ, मैं जगन नहीं, रमन हूँ, जिसने तुम्हारे मुँह से राज के प्रति तुम्हारे प्रेम की बात सुनकर अपने को पीछे हटा लिया था। मैं मर्द हूँ, मैं चाहता तो तुम से जबरदस्ती भी शादी कर सकता था। लेकिन मैं राज या जगत जैसे मर्दों में से नहीं हूँ जो औरत के प्रेम और स्थिति का नाजायज फायदा उठाते हैं। मैं उन इने गिने मर्दों में से एक हूँ, जो औरत को अपने बराबर समझते हैं, उनकी भावनाओं की कद्र करते हैं, उनके हक के लिए लडते हैं और उन्हें बेदार करते हैं। आज नीला को देखो, किस मर्द की हिम्मत है कि उसकी ओर उँगली उठा सके। और अपने को देखो! तुम जगत-जैसे लोगों से कब तक बच सकोगी? राज एक नहीं, सैकडों जगतों को इकट्ठा कर सकता है, अपने घर को चकला बना सकता है और तुम्हें कुत्तों से नुचवा सकता है। तुम क्या समझती हो अपने को? तुम पार्वती बनकर, प्रेम की दीवानी बनकर बचा लोगी अपने को?

—बस करो, बस करो, रमन भैया! —अन्दर ही-अन्दर फलती साँस से कांपती हुई कुसुम चीख पडी। उसका दिमाग जैसे उडा जा रहा था और दिल जैसे बैठा जा रहा था।

लेकिन रमन रुका न था। गरम लोहे पर चोट करना आवश्यक था। उसने आगे कहा—नीला पर भी उसने पहले इसी तरह एक कुत्ता छोडा था। राज का अपना एक ढंग है। तुम नहीं जानतीं, लेकिन मैं अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन नीला सम्भल गयी थी और उसने अपने को बचा लिया था। तुमसे राज ने कहा था कि उसने तुम्हारे प्रेम की परीक्षा लेने के लिए नीला से शादी की थी। मैं उसे यहाँ बुलाकर पूछूँ? बोलो! बोलो!

कुसुम कुछ भी न बोली थी, तो उसी लहजे में रमन आगे बोला—झूठा! मक्कार! वह मेरा दोस्त है, तो इसका क्या यह मतलब है कि अगर वह झूठा है तो मैं उसे झूठा न कह सकूँ, मक्कार

है तो मक्कार न कह सकू ! तुम छुडाओ अपने को उस मक्कार के जाल म कुसुम, वर्ना

—नही नही, रमन भैया ! तुम ऐसा न कहो, ऐसा न कहो ! —रुलाई के वग म हिचकी लेते हुए कुसुम ने कहा था—मैं उसके बिना जिन्दा नही रह सकती नही रह सकती !

—उसके बिना जिसने तुम्हें अपने मीत के फन्दे म फँसा रखा है ? अब भी तुम्हारी आखें नही खुली, कुसुम ?

—नही नही, उसे मैंने बडी लम्बी तपस्या करके पाया है अपना सब कुछ गवाकर पाया है

—चुप रहो !—रमन अपने को सँभाल न पाकर उसे डाटते हुए बोला—तो जाओ जहन्नुम म । जाओ, उसके पास जाओ ! अब मैं तुमसे कोइ भी बात नही कर सकता !

कुसुम मुह आख हाथो से ढँक हुए उठी थी और कमरे से बाहर हो गई थी ।

नाखून से दात कुरेदते हुए रमन की ओर आकुल दृष्टि से देखते हुए निमला न पूछा—तुमने इस तरह जाने के लिए कह दिया ?

—हा,-जैसे मन के दद को दबाते हुए रमन ने कह दिया—कुसुम के लिए मुझे अफमोस है, लेकिन राज के लिए लानत, सिफ लानत !

5

बैठक का दरवाजा खुला तो राजेश न अपने माथे से हाथ हटाकर दरवाजे की ओर दखा। अकेली कुसुम को देखकर वह कापकर कोच से उठकर खडा हो गया। लेकिन कुसुम झपट्टा मारकर उस पर कूदी नही। वह बडी उदास और गम्भीर थी। इससे वह थोडा आश्वस्त हुआ।

कुसुम न मेज पर से अपना बटुआ उठाया और उसम से उसन रुमाल निकालकर अपनी आँखें पाछी। फिर मेज पर स चश्मा उठाया और राजेश की ओर देखत हुए कहा—चलो, हम चलें, रमन भैया ने इजाजत दे दी है।

कोने म पडी छोटी अटची को उठात हुए राजेश न कहा—चलो।

वे कमरे मे बाहर आए तो राजेश न कहा—मैं जरा उनसे मिल लू।

—नही,—आगे पाव बढात हुए कुसुम न कह दिया—चलो। उन्होन विदा दे दी है। व सो रह है।

अब वे सडक पर चल रह थे। कुसुम भली लडकियो की तरह चल रही थी, उसन राजेश मन ही मन बडा प्रसन्न हो रहा था। वह यह सोचने की कतई जरूरत न समझता था कि आखिर एमा क्या हुआ,

कि रमन ने उन्हें इस तरह अनौपचारिक ढंग से जाने के लिए कह दिया और उससे चलते समय मिला भी नहीं। वह यह भी सोचने की कतई जरूरत न समझता था कि अचानक कुसुम एकदम से एक भली लड़की कैसे बन गई ? वह सिर्फ अपनी भावी योजना के बारे में सोच रहा था, जिसकी सफलता में अब उसे कोई सन्देह न रह गया था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि उसकी योजना इतनी आसानी से सफल होने जा रही है, जिसके शुरू होते ही एक जबरदस्त धक्का लगा था और वह कुछ नाउम्मीद हो चुका था। लेकिन अब तो उसकी योजना या फर्राटे के साथ जा रही थी, वह देख रहा था।

कुसुम के कानों में रमन की एक-एक बात गूंज रही थी और जैसे उसके मन पर हथौड़े की तरह चोटें कर रही थी। वह अन्दर ही-अन्दर बहुत तिलमिलायी हुई थी और कुछ भी सोच न पा रही थी। उसके सामने रह रहकर जैसे बड़ा ही अन्धकार छा जाता था। वह कोशिश कर उस अन्धकार से निकलती थी, तो भी उसे न तो राजेश दिखाई देता था और न खुद अपने ही अस्तित्व का बोध होता था। उसे लगता था कि वह पत्थर का टुकड़ा है, जो अन्धकार में लुढ़क रहा है और उसे रमन की बातें लगातार ठोकर लगाती जा रही हों।

रास्ते में दवा की एक दुकान दिखायी पड़ी थी, तो राजेश ने उधर बढ़ते हुए कहा—मेरे सिर में बड़ा दर्द है, यहां से 'कोडोपायरिन' ले लेता हूँ। तुम जरा यहीं रुको।

कुसुम अपनी आदत के खिलाफ सड़क के किनारे ही रुक गयी। पहले की तरह वह राजेश का पल्ला पकड़े न रही थी।

यह देखकर राजेश की प्रसन्नता और बढ़ गयी। उसने अपने अन्दर वैसी ही खुशी महसूस की, जैसी एक शिकारी तब महसूस करता है, जब वह अपने शिकार को आप ही अपनी हद में आते हुए देखता है। उसने चार टिकियां 'कोडोपायरिन' की खरीदीं और चार टिकिया 'मैंड्रीन्टान' की। चार काफी रहेंगी, उसने सोचा था।

के स्टेशन पर पहुंचे तो मालूम हुआ था कि गाड़ी पांच बजे मिलेगी। राजेश ने पहले दर्जे के दो टिकट खरीदे और उन्हें कुसुम

की आर बढा दिया। कुसुम न उन्ह अपन बटुए म रख लिया और वे वेटिंग रूम म जाकर एक बैंच पर बैठ गय।

कुसुम इस बीच न ता एक शब्द बोली थी और न कोई एसी-वैसी हरकत ही की थी। इसस राजेश को अब कुछ और सोचन का अवसर मिल गया। क्योंकि अब उस अपनी योजना के विषय मे कुछ सोचना ही नहीं था। इस समय अचानक ही वह यह जानने के लिए व्याकुल हा उठा कि आखिर रमन के साथ कुसुम की क्या बातें हुइ कि कुसुम का यह हाल हा गया। उसे लगा कि यह जानना तो उसके लिए बडा ही आवश्यक है। कही ऐसा न हो कि रमन न कुसुम को कोई योजना दी हो। कोई गम्भीर बात तो होनी चाहिए थी। वर्ना यह कुसुम इसकी शकल कसी दिखायी पड रही ह जैस सौ जूत पडे हा। कुसुम की ऐसी शक्ल पहले उसन कभी देखी हो उस याद न था। यह अचानक क्या हो गया इस। यह एसी बनी रह ता क्या बात है। तब वह क्यो इसे छोडन की सोचता? ऐसा तो सम्भव हो ही नहीं सकता। नागिन क्या मछली बन सकती है? यह बिलकुल दूसरी बात है कि नागिन किसी नाग के वश म होकर कुछ दर क लिए अपन को भूल गयी हो।

उसने सीधे बात शुरू कर पूछा—कुसुम, तुम्हारा सामान?

कुसुम ने एक कोने की ओर मुह फेर लिया था। वहा एक छोटी अटैची पडी थी। राजेश लपककर उसे उठा लाया आर बगल मे अपनी अटैची पर रख दिया।

अपनी कलाई घडी देखकर राजेश न कहा—अभी ता दो घट की देर है। चाय के लिए कहूँ, कुसुम?

कुसुम ने सिर हिला दिया।

राजेश ऐसे धीरे स उठा जैसे कि उस डर हो कि कहीं कुसुम सोच से जाग न जाए। लेकिन नहीं कुसुम की सोच बहुत गहरी थी। उसके तो किसी अग म भी कोई हरकत न हुई। राजेश एक झटके से बाहर निकल गया। कितनी अजीब बात ह। जैस अगारा फूल बन गया हो। कुसुम के बारे मे उसकी किसी भी बात पर कोई विश्वास न करता

था। कुसुम के बारे में यह बात भी किसी का बताए तो क्या
विश्वास करेगा ? कुसुम ने रमन के साथ बैठक से जाते समय दरः
में कुंडी लगा दी थी और इस समय उसी कुसुम ने राजेश को चाः
लिए अकेले जाने दिया था। राजेश चाहे तो इस समय आसानी
भाग सकता है। कौन जाने कुसुम कैसी गहरी सोच में डूबी थी
उसे किसी बात का होश ही न था।

राजेश गहरी चिंता में पड गया। उसका एक मन हुआ कि
ही जाए। लेकिन अभी यही भागना उसकी योजना में न था,
गडबड न हो जाए उसे भय लगा कि यहा रमन भी था। जाने
साले ने कौन सा जादू कुसुम पर कर दिया था। कितना अच्छा ह
कि वह इसे रख लेता और निर्मला को उसे दे देता ! राम राम
राजेश ने कान पकड लिए थे। अब नही, कभी नहीं ! उसने तख्ते
चिपके टाइम टेबिल को देखा। उस समय कोई भी गाडी न थी।
चार बजकर बारह मिनट पर थी। जो उलटी दिशा में जाती थी
ठीक है। उसने अपनी घडी को पौन घटा आगे कर दिया। कु
अपनी घडी देखेगी क्या ? हु। उसकी नींद तो तब तक सचमुच ज
कितनी गहरी हो जाएगी।

एक रमन वाली बात न होती तो इस समय राजेश राजा थ
इस काटे को कैसे निकाला जाए ? कुसुम तो कुछ बोलती ही नहीं

सोचते हुए ही उसने बैरे को दो, दो दो कप वाली चायदानि
बनाने का आर्डर दिया। वह सोचता जा रहा था कि अचानक ः
उसके दिमाग में एक बत्ती भक से जल उठी कहीं साले ने उस व
तो नहीं दिया कि वह उसकी पलकों ने भौंह छू ली। नहीं, वह ऐः
न करेगा। किसी से उसने आज तक यह रहस्य न बताया था। नीः
ने भी किसी को नहीं बताया था। फिर और क्या बात हो सकती है
कोई मामूली बात तो हो नहीं सकती ! मामूली क्या, किसी गैः
मामूली बात से भी क्या यह गैर मामूली लडकी प्रभावित होनेवाः
है ? उसे प्रभावित करने के लिए तो एटम नहीं हायड्रोजन बम होः
चाहिए।

—चलिए साहब,—बेयरा ने ट्रे उठाते हुए कहा था।

—सुनो ! कुछ पेस्ट्री भी रख लो। ट्रे यहीं रख दो। चाय की पत्ती ठीक लगायी है न?

—जी साहब ?—ट्रे उसके सामने रख कर बेयरा चला गया, तो राजेश ने जल्दी में मैंप्री-ड्रान की गोलियां निकाली और एक चाय-दानी में डाल दी।

राजेश बेयरे के साथ लौटा, तो कुसुम वैसे ही बैठी थी।

—लो कुसुम चाय आ गयी,—उसके और अपने बीच ट्रे रखवाते हुए कहा।

फिर उसने जोर-जोर से चम्मच एक एक कर दोनों चायदानियों में चलाया और फिर चाय बनाने लगा।

अपने हाथ से प्याला उसे देते हुए कहा—लो, कुसुम ! यह पेस्ट्री भी लो।

कुसुम चाय लेकर पीने लगी। उसने पेस्ट्री नहीं ली। एक केक उठाकर उसकी ओर बढ़ाते हुए राजेश ने कहा—इसे खाओ, यह अच्छा मालूम देता है।

कुसुम केक लेकर खाने लगी।

—कुसुम ! उसकी ओर जरा और खिसकते हुए राजेश ने कहा—मैं तुम्हारे साथ चल रहा हूं, कुसुम ! बात यह हुई थी, कुसुम, कि उस शाम मैं बहुत परेशान हो गया था। तुम्हें माजी को लेकर वैसी बात अपने मुंह से नहीं निकालनी चाहिए थी। जैसे वह मेरी मां है, वैसे ही तुम्हारी भी मां है—अचानक अपनी जीभ काट कर उसने बात बदली—लाओ, दूसरा प्याला बना दूं।

वह प्याला बनाने लगा। बाप रे ! यह कैसी बात उसके मुंह से निकल गयी थी ! कुसुम ने जैसे अपनी मां के शव पर खड़ी होकर उससे शादी की थी। कहीं इसे वह बात याद आ जाती तो ?

जल्दी-जल्दी चाय बनाकर उसने उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—मुझे माफ कर दो कुसुम ! मैंने तुम्हें बड़ा सताया है।

वह फिर चाय पीने लगी। कहीं कुछ नहीं। जिन बातों का वह

हमेशा फेंटा करती थी, उन्हें भी जब यह भूल चुकी थी। हे भगवान!
ऐसा भी अचानक का परिवर्तन क्या किसी ने कभी देखा-सुना होगा!

दोनों प्याले वह पी गयी। एक बार यह भी न कहा कि चाय का स्वाद कैसा था।

तब राजेश की भावुकता बिलकुल न चाहते हुए भी अचानक जाग उठी। जिसके लिए वह पत्थर हो गया था उसी के लिए इस समय वह हिल उठा। नशे में धुत आदमी को नशा क्या पिलाना? ओह, यह तुम्हें क्या हो रहा है, क्या?

बेयरा आकर ट्रे उठा ले गया। राजेश ने पहले ही ट्रे में बख्शीश के साथ पैसे रख दिये थे। फिर उसने घड़ी देखी थी।

—अभी कुछ समय है कुसुम,—राजेश अटैची उसके सिर के नीचे रख कर खुद उसके पेट के पास बैठ गया।

उसे याद आ रहा था। बहुत बहुत पहले जब कुसुम आठ या नौ में पढ़ रही थी और वह बी० ए० में, कभी-कभी दोपहर को कुसुम अपने स्कूल से और वह अपने कालेज से भागकर पार्क में पहुंच जाया करते थे। उस बड़े पार्क के एक एकान्त कोने में एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था, जिसकी डालें जमीन तक फैली हुई थीं। उन डालों पर आराम कुर्सी की तरह उठंगा जा सकता था। और कुसुम उसके पेट के पास बैठ जाती और कभी कुसुम उठंग जाती और वह उसके पेट के पास बैठ जाता। वे स्कूल के खत्म होने के समय तक जाने क्या क्या बातें करते रहते थे।

राजेश के जी में आया था कि कुसुम को उसकी याद दिलाये। लेकिन वह सहमा ही पूछ बैठा—कुसुम, यह तो बताओ कि रमन ने तुम्हें अपने उस प्रस्ताव के बारे में बताया था?

कुसुम कुछ भी न बोली। उसने ही फिर कहा—कुसुम, वह प्रस्ताव मुझे स्वीकार है। कितना अच्छा होगा, तुम कालेज जाओगी। पढ़ोगी। एम० ए० पास करोगी। अरे, तुम्हें नींद आ रही है क्या, कुसुम?

नहीं भाई,—घड़ी देखते हुए उसने कहा—अब समय ज्यादा नहीं है। आंखें खोलो। गाड़ी में आराम से सोना। उठकर बैठो तो। यह चश्मा

अच्छा रहने दो, रहने दो, बडा अच्छा लगता है ।

कुसुम को उठकर बैठने मे शायद थोडा कष्ट हुआ । राजेश सोच रहा था । कुसुम उसके सवाल का जवाब हा मे दे देती, तो क्या वह उस पर विश्वास कर लेता और अपनी योजना बदल देता ? नही ! यह तो असम्भव है ! उसने तो यह सवाल इसलिए किया था कि कुसुम जवाब दे दे, तो उससे कोई बात निकले और वह समझ सके कि कुसुम का यह हाल क्या हो गया था ।

गाडी आने की आवाज आयी थी, तो उसने कहा—उठो, कुसुम, गाडी आ गयी । कुसुम को उठकर खडे होने म भी शायद कुछ कष्ट हुआ । नही, वह अपनी घडी नही देखेगी । राजेश ने एक ही हाथ से दोनो अटैचिया उठा ली और एक हाथ से कुसुम की बाह पकड ली ।

राजेश को याद आ रहा था, ठीक इसी तरह बरगद की डाल पर से कुसुम को उसकी बाह पकडकर उठाता था ।

ओह ! ऊसर मे भी जैसे एक अकुर फूट पडा था । काश, वह सचमुच मद होता और कुसुम को स तुष्ट और सुखी रख पाता । पहला प्यार कुसुम जब कोई एहसास न था और आज आखिरी प्यार कुसुम जब एहसास तो न था लेकिन खाली एहसास और कुछ नही कुछ नही ओह ! इस तरह अपनी प्रेमिका का हाथ पकडकर एक प्रेमी को चलने मे कौन मजा आता होगा !

चुप रहो, चुप रहो, जीनियस महाराज, चुप रहो । अब कुसुम वह लडकी नही रही, जिसे तुम्हारा सचमुच कोई अनुभव न रहा हो । इसके लिए तुम्हारे इन शब्दा का अब कोई अथ नही । अब तो सिर्फ तुम्हारा कचूमर निकालन म ही इसे काई अथ दिखायी देता है बिलकुल नीला की ही तरह

गाडी आ गयी । पहले दर्जे के एक खाली कूपे म राजेश ने सहारा देकर कुसुम को चढा दिया । फिर उसने अपनी अटैची खोल कर, उसम से तौलिया निकालकर एक सीट पर बिछाकर उस पर कुसुम को सहारा देकर लेटाकर अपनी अटैची उसके सिरहाने लगा दी । और

उसका चश्मा उतारकर सिरहाने एक ओर रख दिया।

कुसुम एक दुबल बीमार की तरह लेटी थी। उसकी आखें बन्द थी। इस तरह लेटी हुई कुसुम को उसने कब देखा था, उसे कोई याद न थी। बाबा रे बाबा! यह तो जिस दिन उसके घर आयी थी, उसी रात में उसे याद आ रहा था, उसने कुसुम को कितना समझाया था, कुसुम आज सो रहो तुम्हारी माताजी का आज देहान्त हुआ है न, लेकिन कुसुम कहा मानने वाली थी? उसने कहा था, "आज नहीं, मां तो कल ही रात में मर गयी थी। मेरी शादी हो रही थी न, इसीलिए उस खबर को छिपा दिया गया था।'

कुसुम गहरी गहरी सासें लेने लगी थी। इतनी जल्दी यह सो गयी! राजेश सोच रहा था, क्या इसके पहले भी कभी यह इस तरह सोयी थी? एक बार की उसे याद थी। वह नींद वाली टिकिया लाया था और चाय में घोल दी थी। कुसुम ने एक घूट लेने के बाद ही प्याला जमीन पर पटक दिया था। राजेश ने कहा था, "कुसुम, तुमने चाय क्या फेंक दी?' उसमें दवा थी। डाक्टर ने कहा है रोज शाम को दे दिया करें। वह आराम से सो जाएगी। उनका सोना बहुत जरूरी है। वर्ना जल्दी ही उनका दिमाग खराब हो जाएगा।' और कुसुम ने क्या कहा था बाबा रे बाबा!

कुसुम की नाक बजने लगी, तो राजेश ने वैसे ही हाथ झाड दिये जैसे लोग किसी की मिट्टी देने के बाद अपने हाथ झाड लेते हैं। उसने अपनी घड़ी ठीक की थी, एक सिगरेट जलाया था और फिर डिब्बे में वह इस ओर से उस ओर टहलने लगा था। उसे बस एक ही चीज थोड़ा परेशान कर रही थी कि आखिर रमन ने कुसुम से क्या कहा था कि यह अचानक इस तरह बदल गयी थी। अगर कुसुम इसी तरह रह गयी तो क्या होगा? पहले ही लोग उसके बारे में उसकी बातों पर विश्वास नहीं करते जब उसे इस हालत में देखेंगे तब वे क्या करेंगे? उसे तो लोगों की अपने लिए सहानुभूति प्राप्त करनी है ढेर सारी सहानुभूति। तब यह कैसे होगा।

अगले स्टेशन पर उतर कर उसे जाने वाली ट्रेन पकड़नी थी।

उसके जी म आया था कि क्या न वह रमन से मिलकर पूछ ले कि कुसुम स उसकी क्या बातें हुई थीं ? वह सोचता रहा था और टहलता रहा था। कुसुम बसुध सो रही थी। उसकी नाक जोर जोर से बज रही थी। राजेश रह रह कर उसकी ओर देख लेता था। कुसुम वसी होकर इस तरह बेसुध न पडी होती आर अपनी तरह रहकर उसकी गोलिया से ही बसुध होकर पडी हाती ता स अवसर पर राजेश खुशी के मारे अट्टहास उठता !

अचानक ही उसकी नजर कुसुम के बग परपडी तो हरत हुई कि इस हाल म भी बैग कुसुम के हाथ मे कैसे पटा था। इसे तो कहीं गिर जाना चाहिए था, वेटिंग रूम म या प्लेटफाम पर या इस डिब्बे मे ही। वह कुसुम के पास जा सास रोककर खडा हो गया। उसन बैग की ओर हाथ बढाया, तो सहम उठा। कहीं यह जाग जाए तो ? वह उसक पट के पास बैठ गया था और धीरे धीरे बग के पास अपना हाथ बढाया। उसन धीरे स बैग को पकडा, फिर धीरे धीरे ही उस खिसकाने लगा। नहीं, कुसुम को कोई होश नहीं था। वह बग लेकर खडा हो गया आर जरा दूर हटकर उस खालकर दखन लगा। रूमाल,पाउडर, और लिप-स्टिक के साथ ऊपर के खान म नोटा की एक गडडी दो टिकटऔर एक तस्वीर थी। उसन एक टिकट निकालकर अपनी जेब म रखा और वह तस्वीर दखने लगा। वह राजेश की ही तस्वीरथी गाउन मे। राजेश को याद आया था यह तस्वीर उसन एम०ए० की डिग्री लेन के बाद खिचवायी थी आर कुसुम को दिखायी थी तो फिर उसन वापस न की थी। कितने वष हो गय थे ! तब स कुसुम न उस सभालकर रखा था, राजेश न उस उलटकर देखा। उसपर लिखा था 'राजेश एम०ए०' और बट की लकीर की तरह उसके नीचे एक लकीर खींचकर लिखा था, 'कुसुम एच० एच०। उस याद आया था। एक दिन कुसुम न यह तस्वीर उसके हाथ मे रखकर कहा था, इसपर तुम कुछ लिख दो। वह तस्वीर उलटकर कुछ लिखन ही वाला था उसकी नजर कुसुम की लिखावट पर पडी थी। कुछ न समझकर उसने पूछा था—कुसुम, यह 'एच०एच० की डिग्री कौन-सी होती है ? कुसुम लजाकर दाता स

उगली काटने लगी थी और उसी तरह मुस्कराकर, कनखियों से उसकी ओर देखकर कहा था 'तुम एम० ए० कर चुके, इतना भी नहीं जानते ?' राजेश ने सोचकर कहा "कुसुम तुम पड़ी थी। फिर बोली थी, इतनी ही बुद्धि है ? फिर पूछा।' और राजेश खुश होकर कह उठा था 'समझ गया लेकिन बताऊंगा नहीं !" और उसने एच० एच० के आगे टिक लगाकर अपने दस्तखत कर दिये थे।

राजेश ने वह तस्वीर अपनी जेब में रख ली। कुसुम यहां दिल कहा है। यहां तो दिल के वहम ही खेल है, जैसे जादूगर के हाथ हैं। वहां कुछ भी सच नहीं होता लेकिन सब कुछ सच दिखायी देता है। यह दिल का हुनर है।

वह बैग रखने लगा तो अचानक ही खयाल आया कि इस कहीं कोई ले न ले। इसमें नोट है। चले जाएंगे तो बेचारी बड़ी परेशानी में पड़ जाएगी। नहीं नहीं वह ऐसा कमीना नहीं कि इसे इस हालत में छोड़ भी दे और नोट भी ले ले। और उसे उस बैग को छिपाने की एक अजीब जगह सूझ गयी थी।

कुसुम चित सोयी हुई थी। वह उसके पांवों के पास बैठ गया और धीरे धीरे उसकी साड़ी उठाकर उसने बैग को ऊपर सरका दिया। इतने ही में उसकी सांस फूल गयी और वह तुरन्त वहां से हट गया था।

उसकी यह क्या हालत हो जाती है ? लोग कहते हैं फलां कहानी अश्लील है फलां उपन्यास अश्लील है। लेकिन वह पढ़ता है तो उसकी *एक अजीब कैफियत हो जाती है। जैसे उसकी समझ में कुछ आ ही न* रहा हो लेकिन लगता हो कि कोई बात जरूर है जो उसकी समझ में नहीं आती। जैसे एक बच्चे के लिए कोई सवाल हो जिसे हल करना उसे नहीं सिखाया गया हो।

पहियों की खड़खड़ की आवाज आयी थी तो उसने समझ लिया कि स्टेशन आ गया। वह दरवाजे के पास जा खड़ा हो गया और शीशे के सामने देखने लगा कि अचानक चौंक कर पीछे हट गया। उसे सकता-सा हो गया। वह तुरन्त कुसुम के पास जा बैठ गया।

शीशे के पार यह कौन खडा दिखायी पडा था ? पायदान पर खडा खडा कोई आ रहा था क्या ? हे भगवान ! जाने उसने उसकी कौन-कौन सी हरकतें दखी हा। जान उसकी मशा क्या ह ?

वह बार बार कुसुम की ओर देखन लगा ! यह खयाल कि वह उसका पति है, उसे ढाढस वधा रहा था। बैग रखने की उसे याद आयी तो वह झेंप सा गया था। लेकिन फिर तुरत उसमे एक साहस आ गया था, पति अपनी पत्नी के साथ क्या नही करता ?

गाडी रुक गयी। राजेश बडी ही सामान्य और आश्वस्त मुद्रा बनाये थोडी देर तक चुपचाप बैठा रहा आर इन्तजार करता रहा कि दरवाजा खुले। लेकिन दरवाजा न खुला, तो वह उठा और गुनगुनाते हुए सा दरवाजे की ओर वढा। दरवाजे पर शीशे के पार फिर उसे एक शक्ल दिखायी दी। लेकिन इस वार न ता वह चौंका और न पीछे हटा। उसन उस शक्ल से आखें मिलाते हुए दरवाजा खोला। वह उसी की शक्ल थी।

उसने नीचे उतर कर सिगरेट जलाया। बडे आराम मे दो तीन कश लेकर उसने गाड के डिब्बे की ओर देखा। फिर अपन डिब्बे मे जाकर उसन अटैची उठायी और मुह से सीटी वजात हुए, हाथ म अटैची झुलाते हुए उतर गया।

वह खडे खडे सिगरेट पीता रहा और गाडी की सीटी का इतजार करता रहा था। कही भी कोई सन्देह की वात थी ही नहीं। गाड ने सीटी दी। इजिन ने सीटी दी। राजेश न दरवाजा धीरे से बन्द कर दिया। गाडी रवाना हो गयी। राजेश न हाथ उठाकर ऐसे हिला दिया, जग वह हवा म उडती जाती एक लाश को विदायी दे रहा हो।

उगली काटने लगी थी और उसी तरह मुस्कराकर, कनखियों से उसकी ओर देखकर कहा था, "तुम एम० ए० कर चुके, इतना भी नहीं जानते ?' राजेश ने सोचकर कहा 'कुसुम हँस पड़ी थी। फिर बोली थी, 'इतनी ही बुद्धि है ? फिर बूझो।' और राजेश खुश होकर कह उठा था 'समझ गया लेकिन बताऊंगा नहीं।" और उसने एच० एच० के आगे टिक लगाकर अपने दस्तखत कर दिये थे।

राजेश ने वह तस्वीर अपनी जेब में रख ली। कुसुम यहां दिल कहा है। यहां तो दिल के बस ही खेल हैं, जैसे जादूगर के हाथ हैं। वहां कुछ भी सच नहीं होता लेकिन सब कुछ सच दिखायी देता है। यह दिल का हुनर है।

वह बैग रखने लगा तो अचानक ही खयाल आया कि इसे कहीं कोई ले न ले। इसमें नोट है। चले जाएंगे तो बेचारी बड़ी परेशानी में पड़ जाएगी। नहीं नहीं, वह ऐसा कमीना नहीं कि इसे इस हालत में छोड़ भी दे और नोट भी न ले। और उसे उस बैग को छिपाने की एक अजीब जगह सूझ गयी थी।

कुसुम चित सोयी हुई थी। वह उसके पावों के पास बैठ गया और और धीरे उसकी साड़ी उठाकर उसने बैग को ऊपर सरका दिया। इतने ही में उसकी सांस फूल गयी और वह तुरन्त वहां से हट गया था।

उसकी यह क्या हालत हो जाती है ? लोग कहते हैं, फलां कहानी अश्लील है फलां उपन्यास अश्लील है। लेकिन वह पढ़ता है तो उसको एक अजीब कैफियत हो जाती है। जैसे उसकी समझ में कुछ आ ही न रहा हो लेकिन लगता हो कि कोई बात जरूर है जो उसकी समझ में नहीं आती। जैसे एक बच्चे के लिए कोई सवाल हो जिसे हल करना उसे नहीं सिखाया गया हो।

पहिया की खटर-खटर की आवाज आयी थी तो उसने समझ लिया कि स्टेशन आ गया। वह दरवाजे के पास जा खड़ा हो गया और शीशे के सामने देखने लगा कि अचानक चौंक कर पीछे हट गया। उसे मनका-सा हो गया। वह तुरन्त कुसुम के पास जा बैठ गया।

शीशे के पार यह कौन खडा दिखायी पडा था ? पायदान पर खडा खडा कोई आ रहा था क्या ? हे भगवान ! जाने उसने उसकी कान कौन सी हरकतें देखी हों। जाने उसकी मंशा क्या है ?

वह बार-बार कुसुम की ओर देखने लगा ! यह खयाल कि वह उसका पति है, उसे ढाढस बधा रहा था। बैग रखने की उसे याद आयी तो वह झेंप सा गया था। लेकिन फिर तुरत उसमें एक साहस आ गया था, पति अपनी पत्नी के साथ क्या नहीं करता ?

गाडी रुक गयी। राजेश बडी ही सामान्य और आश्वस्त मुद्रा बनाये थोडी देर तक चुपचाप बैठा रहा और इन्तजार करता रहा कि दरवाजा खुले। लेकिन दरवाजा न खुला, तो वह उठा और गुनगुनाते हुए सा दरवाजे की ओर बढा। दरवाजे पर शीशे के पार फिर उसे एक शक्ल दिखायी दी। लेकिन इस बार न तो वह चौंका और न पीछे हटा। उसने उस शक्ल में आँखें मिलाते हुए दरवाजा खोला। वह उमा की शक्ल थी।

उसने नीचे उतर कर सिगरेट जलाया। बडे आराम से दो-तीन कश लेकर उसने गाडी के डिब्बे की ओर देखा। फिर अपने डिब्बे में जाकर उसने अटैची उठायी और मुह से सीटी बजाते हुए, हाथ में अटैची झुलाते हुए उतर गया।

वह खडे-खडे सिगरेट पीता रहा और गाडी की सीटी का इन्तजार करता रहा था। कहीं भी कोई सन्देह की बात थी ही नहीं। गाडी ने सीटी दी। इंजिन ने सीटी दी। राजेश ने दरवाजा धीरे से बन्द कर दिया। गाडी रवाना हो गयी। राजेश ने हाथ उठाकर ऐसे हिला दिया, जैसे वह हवा में उडती जाती एक लाश को विदायी दे रहा हो।

6

स्टशन पास आया, ता राजेश न दरवाजे से याका। प्लेटफाम की भीड मे भी जगत का पहचानने म दर न लगी। उसक सिर का शाला हैट भीड के ऊपर ऊपर दिखायी पट रहा था।

और पास आन पर राजेश न अपना हाथ उठाकर हिलाया, तो जगत न भी हाथ उठाकर हिलाया। राजेश न दखा कि जगत के पुष्ट हाठा पर वटी ही चाडी मुस्कान थी और तब उस अचानक ही एक बात याद आ गयी थी और उसे लगा था कि जगत न शायद कुसुम को पा लिया हो। लेकिन दूसरे क्षण ही उसे लगा था कि, नही, एसा नही हो सकता। जगत न कुसुम को पा लिया हाता ता रमन के यहा कुसुम के व तेवर हर्गिज दखने का न मिले हात। उस उसका अनुभव था कि लडकिया जब

—हल्लो! हेलो, राजेश! गाडी रुक्त ही हाथ बढात हुए, सीना आगे और सिर पीछे कर जगत चिल्लाया।

अटची लटकाय जगत का हाथ पकडकर राजेश मेंक की तरह फुदककर नीचे उतरा या जगत के हाथ म टगकर उतरा, कुछ कहा नहीं जा सकता था। जगत या जगत जैस युवका के सामन राजेश का यही हाल हो जाता था। इस हाल म उबरन के लिए वह तुरत अपनी चमत्कारपूर्ण बुद्धि का सहारा लेता था। वह थोडी दर के लिए

अपनी मुद्रा इस तरह गम्भीर और तटस्थ बना लेता था कि जैसे सामने के आदमी की उसे कोई परवाह ही न हो। उसका खयाल था कि उसके ऐसा करने से सामने का आदमी तुरन्त अपने को उसके सामने छोटा महसूस करने लगता है। अपने से छोटे आदमी पर रोब गालिब करना कितना आसान होता है!

राजेश तेजी से आगे बढ़ा, तो जगत ने उसके साथ चलते हुए कहा—हल्लो बास! तुम बड़े गम्भीर मालूम देते हो!

—चलो,—सामने देखते हुए ही राजेश ने कह दिया—बाहर बात करेंगे। बात गम्भीर ही है।

—वह मिली थी, बास?—जगत ने फिर भी पूछा।

सिर हिलाकर राजेश ने फिर कह दिया—बाहर चलो। गाडी लाये हो न!

—हां हां।

—और रुपये?

—रुपये का इन्तजाम तो न हो सका।

—सोम से मिले थे?

—हां।

—क्या कहा उसने?

—उसने एक दो दिन में एक हजार देने के लिए कहा है।

—सिर्फ एक हजार?

—हां। वह कहता था, तुम्हारी रायल्टी का हिसाब चुकता हो गया है। लेकिन जरूरत पड़ गयी है, तो एक हजार का इन्तजाम हो जाएगा।

—हूं!

—तुम अभी कितने रुपये का इन्तजाम कर सकते हो?

—तुम तो जानते हो, मेरा एक ही बैंक है। तुम्हारा फोन मिलते ही मैंने पूछा था, तो भाभी ने बतलाया था कि उसके पास इस समय सौ पचास से ज्यादा न होंगे।

—ऊंह! मुझे इसी समय कम से कम,—राजेश ने उंगलियों पर

गिनकर वताया—वारह   पन्द्रह सा रुपय चाहिए।

—इतने रुपयो का इसी समय क्या कराग, वास ?—अपनी गाडी के आगे का दरवाजा खोलत हुए जगत न पूछा।

राजेश न उरो कोई जवाव न दिया। दोना सामन की सीटा पर वैठ गय। गाडी चलात हुए जगत न कहा—कुछ उसकी वातें करो। उसके बारे मे जानन के लिए मैं मर रहा हूँ। तुम्ह कालेज छाडन के वाद मैं उसके पीछे पीछे, तुम्हारी ताकीद क मुताबिक साय की तरह लगा रहा था। साढे बारह वजे तक तो मैं उसक साथ ही रहा था। उसके वाद शाम तक उसके पीछे पीछे लगा रहा था। वह तुम्हारे सभी दोस्ता, कालेज के प्राफेसरा आर प्रकाशका क पास गयी थी। फिर शाम को वह 'पब्लिक टलिफोन काल आफिस' मे घुसी थी आर वहा से एक वजे रात मे निकली थी

—पहले सोम के यहा चलो,—राजेश ऐसे बोल पडा, जस उसने जगत की कोई वात सुनी ही न हा—सबस पहले रुपया, उसके बाद और कुछ। मेर पास समय बिलकुल नही है और मुझे इसी समय रुपया चाहिए इसी समय!

—सोम दे देगा,—जगत ने कहा—जब वह एक हजार द सकता है तो डेढ हजार भी द सकता है। तुम कोई चिन्ता मत करा। कुछ उसकी वात करो।

—करेंगे उसकी वहुत सारी वातें करनी है। लेकिन अभी नही—राजेश न कहा—तुम शिवजी के यहा भी गय थे ?

—उसके यहा दा वार गया, लेकिन उससे भेंट नही हुई।

फिर उनम कोई बात न हुई थी। जगत हाठ चबाता रहा था। राजेश कभी कभी उसकी ओर दख लेता था। शायद होठ चवा चवा कर ही जगत न उन्ह उतना मोटा कर लिया है राजेश ने एक वार सोचा। लेकिन इस समय उस रुपया की वडी चिन्ता हो गयी थी, इसलिए और किसी विषय मे अधिक न सोच सकता था। उस अचानक खयाल आया, कुसुम के वैग के रुपया का। रुपय उसे ले लन चाहिए थे। उस अफसास हा रहा था कि उस समय उस अपनी

कमीनगी की उतनी चिन्ता क्या हो गयी थी ? आखिर वे रुपये उसी के तो थे। साली तनख्वाह का एक-एक पैसा रखवा लेती थी और मागने पर पूछती थी, "क्या होगा ?" दस मांगत थे तो पांच देती थी। आह, क्या उसके बैग म रुपये छोड दिये ? जाने कितने थे। जितने भी हो, इस समय पास होते, तो काम आते। वह जाती जहन्नुम मे

तभी गाडी रुक गयी। दोनो उतरे। राजेश अन्दर जाने लगा, तो जगत न कहा—मैं यहीं हूँ।

—नहीं, मेरे साथ चलो—उसका हाथ पकडकर राजेश न कहा—तुम हमेशा मेरे साथ रहोगे। अपना रूल ले लो।

सोम न अपनी कुर्सी से उठकर पहले राजेश से हाथ मिलाया, फिर जगत से। फिर पूछा—क्या मगवाएँ, ठडा कि गम ? सिगरेट लीजिए।

—इस समय कुछ भी नहीं,—सिगरेट जलाते हुए राजेश न कहा—इस समय मैं बडी परेशानी म हूँ।

मेज पर घटी का बटन दबाते हुए सोम ने कहा—जगत जी ने आपकी परेशानी के बारे मे मुझे कुछ बताया था। क्या बताए, बडा अफसोस होता है। आप जैसे जीनियस को एक लडकी बरबाद कर रही है। आप उसे तलाक क्यो नही दे देते ?

—वही सोच रहा हूँ,—राजेश न बताया—लेकिन इस समय मुझे रुपयो की सख्त जरूरत है।

—मैंने जगत जी से कह तो दिया था, कल

—कल और आज नही, मुझे इसी समय, इसी क्षण चाहिए, वर्ना मेरी सारी योजना व्यर्थ हो जाएगी। मुझे एक हजार नही, कम से-कम तीन हजार चाहिए।

आफिस का लडका आकर खडा हुआ, तो सोम न उससे कहा—तीन ठडा लाओ।

लडका चला गया, तो सोम न कहा—मैंने आपसे कितनी बार कहा कि हाई स्कूल के लिए कोई 'सस्कृत प्रवेशिका' या 'सस्कृत

सुबोध' की तरह चीज दीजिए, लेकिन आप

—मैं आपको बता चुका हूँ,—उस स्थिति म भी राजेश बात कर सकता था—मै लोअर कोर्ट मे प्रैक्टिस नही करता

—तब आपको इतना पैसा कहा से मिलेगा ?—सोम न कहा—कम स कम एक दीजिए फिर देखिए मैं आपको एक साल के अन्दर ही लखपती बना देता हूँ कि नहीं।

—देखिए सोम जी।—राजेश ने कहा—मेरे लिए रुपया का क्या मूल्य ह, आप जानते ह। मुझे जो तनखाह मिलती है वह इतनी ज्यादा ह कि मैं बडे आराम स जिन्दगी बसर कर सकता हूँ। मुये तो सिर्फ किताबें चाहिएँ और उन्ह पढने का समय। और कुछ नहीं कुछ नही। वह तो इस लडकी क कारण

—उसन तो आपको बरबाद ही कर दिया, राजेश जी,—सोम ने कहा था—पिछले वष आपन कुछ भी नही लिखा।

—आप लिखन की बात करत हैं मैं जिन्दा कस बच गया हूँ, इसी का आश्चय ह। खैर आप रुपये दिलवा दें, इस वष मैं जरूर लिखूगा और आपको ही दूगा।

बडी कृपा है आपकी,—सोम न कहा—लेकिन इतन रुपये कहा हैं।

—तो फिर मैं चलू —उठते हुए राजेश न कहा—चलो भाई जगत, और कही देखें।

—अरे, बठिए—लपककर उसका हाथ पकडत हुए सोम ने कहा—लडका जा रहा है। आपका इसी समय आखिर इतन रुपया की क्या जरूरत पड गयी है। कुछ आज ले जाइए कुछ

—मुझे अभी चाहिए,—राजेश न बैठत हुए कहा—इसी समय मुझे मकान का दूध का बनिये का, सबका हिसाब करके मकान छोड देना है।

—मकान आप

—हा, कुसुम को छोडन के लिए सबसे पहला और सबस जरूरी काम यह है कि मैं मकान छोड दू अभी छोड दू। अभी न छोड सका

और कुसुम यहा पहुच गयी, तो सारा मामला चौपट हो जाएगा। वह किसी समय भी यहा पहुच सकती है। आप इतना समय ले लेंगे, इसकी मुझे उम्मीद न थी! कहते कहते राजेश बेचैन सा हो गया।

—फिर आप रहेंगे कहा ?—कुछ न समझकर सोम ने पूछा।

—जहा कुसुम नही रहेगी,—राजेश ने बताया—मेरा खयाल है कि मकान न रहने पर कुसुम अपने भाइयो के यहा या कही भी चली जाएगी। बिना मकान के वह यहा कैसे रह सकती है? यह मेरा पहला कदम है। उसके बाद क्या होता है, आप देखिये। मैंने पक्का निणय कर लिया है कि अब इस लडकी के साथ नही रहना है।

—आपने बहुत अच्छा निणय लिया है—सोम ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा—मुझसे जो सहायता होगी, करूगा। कई मेरे दोस्त अच्छे वकील है।

—धन्यवाद!—राजेश ने कहा—लेकिन इस समय तो

लडका ट्रे में बोतल लेकर आ गया। सोम ने अपनी बोतल सामने रखकर उठते हुए कहा—आप लोग पीजिए। मैं देखता हू कि क्या हो सकता है।

एक ही सास में बोतल खाली करके राजेश खडा हो गया। उसे खडे देखकर जगत ने भी जल्दी जल्दी बोतल खाली की और उठ खडा हुआ। तब राजेश ने कहा—चलो, तुम जल्दी गाडी चालू करो। हमारे पास समय बिलकुल नही है।

जगत के जाते ही सोम एक हाथ में रुपये और दूसरे हाथ में वाउचर लेकर आ गया। बिना देखे ही वाउचर पर दस्तखत करते हुए राजेश ने पूछा—कितना है?

—यह रखिये, दो है—उनको जेब में नोटो को ठूसते हुए सोम ने कहा—फिर देखेंगे।

राजेश अब वहा से भागने को हुआ तो उसका हाथ पकडकर सोम ने कहा—आज शाम को हमारे यहा बीयर पीजिए।

जल्दी में राजेश ने कहा—किसी के घर पर कुछ नही! वह मेरे सभी दोस्तो के घर जानती है।

—आह ! तो फिर किसी होटल में

भागते हुए राजेश ने कहा—मैं फोन करूंगा, नमस्ते !

गाडी में बैठकर उसने सिगरेट जलाया। इस समय उसका चूतड सीट पर ठहर ही न रहा था। वह उछल-उछलकर कह रहा था—जगत रास्ते में किसी ताला तोडने वाले को ले लो ! और यह बताओ, सामान कहा रखवाया जाएगा ? तुम्हारे यहा

—भाभी से पूछना पडेगा,—जगत कुछ खिचा हुआ था।

—किसी से पूछने का समय कहा है, यार—वह बोला—वह किसी समय भी यहा आ सकती है। अच्छा, किसी टेलीफोन वाले आफिस पर गाडी रोको तो मैं किसी को फोन कर तय कर लू। पहले खयाल नही आया, वर्ना सोम से ही तय कर लिया होता।

गाडी रोककर जगत ने कहा—जाओ जल्दी फोन कर आओ मेरा गला खुश्क हो रहा है।

—तुम पहले जाकर देख आओ कि वहा

—तुमने उसे कहा छोडा था ?

—ओ हो !—उसके कधे पर हाथ रख कर राजेश ने कहा—मैं तुम्हें बतलाऊगा, भाई। थोडा धीरज रखो। बस, मकान का काम पूरा करके हम कही बैठेंगे, पीएगे और बातें करेंगे।

—लेकिन वह अभी यहा कैसे हो सकती है ? तुम खामखाह

उसे पुचकारते हुए राजेश ने कहा—जाओ देख तो आओ, तुम लोग उसे नही जानते मैं जानता हू ! वह कहीं भी हो सकती है। जाओ जरा देख आओ !

जगत चला गया। उसके लौटने में थोडी देर लगी तो राजेश घबराने लगा। उसने खिसककर हाथ बढाकर दाहिनी ओर का दरवाजा खोल लिया और उसे खोले हुए पकडे रहा।

बडी तेजी से जगत आया। उसकी चाल देखते ही राजेश का कलेजा धक धक करने लगा। जगत ने फुसफुसाकर कहा—वह तो बैंच पर बैठी है

—जल्दी गाडी चलाओ !—सीट से उछल कर, नीचे बैठ कर

अपने को छिपाते हुए राजेश ने कहा।

गाडी तेज चलाते हुए जगत ने कहा—ठीक से बैठो।

—बाप रे!—सीट पर वापस हुए बैठकर राजेश ने कहा—मैं तो मारा ही गया था।—और उसने जगत का हाथ पकड कर अपनी छाती पर रख लिया था।

—यार, जेब तो तुम्हारी भारी मालूम पडती है,—जगत ने उसकी जेब का हाथ में दबाते हुए पूछा—कितना दिया है?

—तुमको उसी की सूझ रही है और यहा

—यार, मेरी समझ में यह आज तक नहीं आया कि तुम उसमे क्यों इतना डरते हो,—जगत ने कहा—अब चलो, कहीं बैठकर थोडा पिओ, नहीं तो तुम्हारा दिल बैठ जाएगा। मकान पर अब जाओगे कि नहीं?

—नहीं, वहा जाकर अब क्या होगा?—राजेश ने कहा—तुम जहा चाहे चलो। मुझे स्थिर होकर कुछ सोचने का समय चाहिए। मेरी तो सारी योजना ही चौपट हो गयी।

—नहीं,—हँसकर जगत ने कहा—जिसकी जेब में इतने रुपये हो, उसकी कोई भी योजना असफल नहीं हो सकती। तुम घबराओ नहीं। मैं जो तुम्हारे साथ हू। मकान खाली हो जाएगा, यह मेरा जिम्मा। लेकिन उसके पहले

—चलो।

गाडी चलती रही और राजेश सोचता जा रहा था कुसुम कैसे इसी समय यहा पहुच गयी? उसे जल्दी से जल्दी कल या परसो पहुचना चाहिए था। वह सबसे कहता फिरता है कि वह इससे समझता है, लेकिन कभी कभी लगता है कि वह भी इसे नहीं समझता। यह कहती है, 'मैं देवी हू' क्या सचमुच इसमे कोई चमत्कारी शक्ति है? जैसे यह सूघकर समय और दूरी को नाप लेती हो। उसे सहसा ही यह सन्देह हो आया कि डिब्बे मे कहीं वह बनकर ही तो वैसे नहीं पड गयी थी और जान बूझकर ही तो उसने वह चाय नहीं पीली थी?

लेकिन उसे बारह घटे के पहले तो होश में आना ही नहीं था।

चार चार गोलिया गोलिया के आगे तो, लाग कहते ह, मौत का खतरा शुरु हो जाता ह। उसे अफसा सहुआ कि उसन उसे आठ या दस गोलिया क्यो न दे दी थी ? बाप रे ! तब तो रमन गवाही दता क्या

उसन जगत न पूछा—जगत, तुमने ठीक स देखा था, वही थी न ?

—लो,—जगत न कहा—तुम तो ऐम पूछते हा जैम मैंन उसे पहले कभी दखा ही न हो। वह लाल कपडे पहन थी सिर पर छीट-दार लाल रुमाल बाधे थी और बेंच पर बैठी सिर थुकाय हुए कुछ पढ रही थी। इसी कारण उमे पहचानन म मुझे देर लगी।

—शायद कोई काल बुक कर इतजार कर रही हो

—और कौन-सा काम वहा हो सकता ह ?

—तब तक क्या हम मकान का काम नही निवटा सकते ?

—अब इस समय कुछ नही, पहले

—तुम कहा चल रहे हो ?

—सरन के पास।

—इस समय तो वह अपन आफिस मे होगा।

—उससे चाभी लेकर उसके होटल के कमरे मे चलेंगे।

—यार, सरन के साथ ही मैं दो चार दिन रह सकता हू क्या ?

—तुम जाना, कुसुम वहा पहुच सकती है कि नही।

—तुम तो मेरे माथ रहाग ?

—शाम को गाडी छोडन घर जाऊगा। तब तक तुम सरन के ही कमरे म रहना। पाच बजे तो वह आफिस स आ ही जाएगा।

—शाम को सोम न पीने की दावत दी है। तुम्हे भी चलना है। तुम याद दिलाना, उसे फोन करना ह।

—बहुत अच्छे ! सरन के हाटल म ही फोन कर लेंगे।

—मुझे कुछ कपडे भी खरीदन है, मेरे पास कोई कपडा नही है। मकान गया होता तो

—सब्र रखो, उन कपडा का कुसुम क्या करेगी ?

—तुम्हारा खयाल ह कि कुसुम अकेली वहा रहेगी ?

—वह अकेली रह तो मैं वहा जाऊगा।

—उस दिन तुमन कुसुम को पाया था ?—यह सवाल पूछते ममय राजेश का मुह ऐंठकर कुछ टेढा हो गया।

'कुसुम कहती थी, वह मेरे ऊपर बलात्कार करने का मुकदमा चलाएगी।

—अच्छा ? तुम मुझे एक पत्र लिखकर दे देना कि कुसुम का तुम्हारे साथ अवैध सम्बन्ध है।

—यह अवैध सम्बन्ध क्या होता ह, यार ?

—मेरा मतलब है खैर, वकील स मजमून लिखवा लेंगे। अगर तुम्हारे ऊपर मुकदमा चलाया, तो चिट्ठी काम आएगी। मैं भी गवाही दूगा कि जगत का कुसुम के साथ अवैध सम्बन्ध था।

—यार, जो लौंडिया बडी जारदार है। एक दिन मौका पाकर मैं बाकायद उसक साथ अखाडे म उतरना चाहता था। लेकिन तुम तो उसे छाड रह हो।

—वह तैयार हो, ता तुम उसके साथ शादी कर लो।

—शादी ? तुम अपनी ही तरह सबको वेवकूफ समझत हो ? सुनो यार एक काम करोग ?

—कहो ?

—आखिर तो तुम उसे छाड ही रह हो। मेरी राय है कि फिल-हाल तुम उससे समझौता कर लो और एक दिन घुमान के बहाने उसे जगल ले चलो और उसके साथ वहा मेरा दगल दखो ! और तुम चाहो तो वहीं—कहकर जगत ने अपनी गदन पर तलवार की तरह हथेली फेर दी थी।

राजेश कापकर रह गया।

—इस तरह तुम्हारा गीदडा की तरह भागत फिरना मुझे अच्छा नहीं लगता। वह साली आखिर कोई लडकी ह कि बाघ ?

—नहीं,—राजेश न कहा था—न तो मुझम इतना साहस है

और न मैं इतना बडा खतरा ही मोल ले सकता हू। मुझ अपनी जिन्दगी बहुत प्यारी है। कोई भी काम करने का मेरा ढग है। आज तक मैं कभी असफल हुआ नही। आगे की भगवान जाने

—यह कसी टक्सी ह राज ?—जगत न कहा—दर स दख रहा हू, कभी यह हमारे आगे हो जाती ह आर कभी पीछे। तुम्हारा ध्यान उसकी आर गया ह ?

डरकर राजेश सीट से उछला आर फिर नीचे बैठ गया और सिर नीचे किये ही कापती आवाज म उसन पूछा—कौन आफिस म उसन तुम्ह देख लिया था क्या ?

—मेरा तो ऐसा खयाल नही ह,—जगत ने कहा—रुको, मैं अभी उससे अपनी गाडी टकराता हूँ

—नही नही !—राजेश ने घबराकर कहा—तुम उसे चकमा देकर किसी मोड से अपनी गाडी निकाल लो। हे भगवान !

—मैं तुम्हारे साथ हूँ, फिर भी तुम इस तरह घबराते हो

—टैक्सी म वह अकेली ही है कि

—यह मैंने कहा दखा है अभी। अभी ता मुझे सन्देह है

—तुम भले आदमी की तरह सीट पर बैठो !—जगत न कहा—इस तरह तुम्हें बैठे कोई देख लेगा, तो समझेगा कि मैं किसी को भगा कर ले जा रहा हूँ। तुम ता कहते थे कि जब मैं तुम्हारे साथ रहता हूँ, तुम्ह कोई डर नही लगता।

यह बात सही थी। इसके विरुद्ध व्यवहार ने स्वय राजेश को अचरज मे डाल दिया था। उसने अपने अन्दर साहस बटोरने की कोशिश की थी। लेकिन उसमे साहस न आया था। वह वही गुटमुटा कर बैठा रहा था। उसका कुसुम के साथ स्टेशन पर जा किया था और जिस हालत म उस डिब्बे म छोड आया था वही-सब उसके दिमाग म इस समय चक्कर लगा रहे थे। वह सोच रहा था कि कुसुम का मामला कही पुलिस के पास न पहुच गया हो क्या कुसुम न सब कुछ बता दिया होगा लेकिन वह इतनी जल्दी यहाँ कैसे पहुच गयी ?

बडी तजी म जगत न एक जगह गाडी मोडी। राजेश लुढक सा

गया। गाडी सीधी चलने लगी तो सम्भलकर राजेश ने पूछा—टैक्सी आगे है कि पीछे ?

—लो !—जगत ने कहा—वह पीछे होती, तो गाडी माडने से क्या फायदा होता ? तुम ठीक से सीट पर बैठो। कही चोट तो नही आयी ?

—यह 'लिबर्टी' वाली मोड थी वह ?—अपनी घडी देखते हुए राजेश ने पूछा।

—हा।

—तो 'लिबर्टी' के पास एक मिनट के लिए अपनी गाडी धीमी करा,—सीट पर बैठकर राजेश ने कहा—साढे पाच बजे तुम यही टैक्सी स आना। तुम गाडी छोडकर एक चक्कर हमारे मकान का भी लगा आना।

—कुछ रुपये मुझे दे दा,—जगत ने कहा—सब प्रोग्राम ही चौपट हो गया।

जेब से कुछ नोट निकालकर राजेश ने दे दिये। 'लिबर्टी' के सामने जगत ने गाडी धीमी की। राजेश उतरकर, सिर झुकाये भीड मे से आगे बढा और सामने क दरवाजे पर खडे गेट कीपर के हाथ मे एक दस रुपय का नोट थमाकर यह कहते हुए अन्दर घुस गया—मेरे लिए एक फस्ट क्लास का टिकट खरीद लेना। इटरवल मे मिलूगा।

7

उसे पिक्चर क्या देखनी थी ? कुसुम को डिब्बे म छोड़ते समय वह जितना खुश था, इस समय वह उसस भी कहीं ज्यादा दुखी और बेचैन था। उसकी योजना बिलकुल उलट पुलट गयी थी। इस समय वह कहीं शांति म बैठकर सोचना चाहता था और उसे इस जगह की सूझ गयी थी। वह आँखें मुँदे हुए था और सोच रहा था।

खूब सोचने के बाद वह इस परिणाम पर पहुचा कि उसे कल और आज का अखबार देखना चाहिए और हवाई अड्डे को फोन करना चाहिए। यह तय है कि कुसुम यहा ट्रेन मे आज इस समय हर्गिज नहीं पहुच सकती थी। दूसरी बात यह थी कि अब जगत के साथ भी वह अपने को उतना सुरक्षित महसूस नहीं कर पा रहा था। इसका एक कारण यह था कि वह कानून के सामने अपराधी हो सकता था। एक और बात यह थी कि लगता था, जगत कुसुम के साथ जोर आजमाइ कर चुका था और हार गया था। ऐसा न होता, तो वह कुसुम के साथ अखाड़े मे या जगल मे दगल करने की बात न करता। अब उस जल्दी से जल्दी किसी एसी जगह पर चले जाना चाहिए, जहा न उसका कोइ दोस्त हो और न सम्बधी। यहाँ अब वह बिल्कुल ही सुरक्षित नहा था।

इण्टरवल म जब ओसारे म भीड़ जमा हो गयी राजेश धीरे स निकलकर गेट कीपर स पास लेकर खट खट सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर

चला गया और मैनेजर के कमरे के सामने स्टूल पर बैठे चपरासी स पूछा—मैनजर साहब ह ?

चपरासी ने खडे होकर बताया—जी, नही ।

राजेश ने एक एक रुपये का नोट निकालकर उसकी ओर बढात हुए कहा—जरा फान कर लू ?

नोट जेब म रखत हुए चपरासी ने दरवाजे का पदा उठाकर कहा—कर लीजिए ।

—हलो, एरोड्रोम। जरा यह बताइए पटना स जहाज आ गया ? बहुत अच्छा । अब मेहरबानी करके एक बात और बता दें। मरी बहन श्रीमती कुसुम राजेश उस जहाज से आन वाली थी। वह अभी तक घर नही पहुची है। क्या साढे दस बजे आनवाले जहाज के यात्रियो की सूची मे उसका नाम है ? ठीक ह, आप देखकर बताइए। मैं फान लिय हुए हूँ। उसका नाम ह ? अजीब बात है, इस समय डेढ बजने वाले ह और वह अभी तक घर नहीं पहुची। हा हा, धयवाद !

चागा रखकर वह बाहर आया, तो उसके दिल की धडकन तज हा गयी । लेकिन वह तजी म ही सीढिया उतरा और ओसार की न्यूज स्टाल मे कल और आज के पटना म प्रकाशित होने वाले दो अखबार लेकर जल्दी से हाल के अन्दर चला गया ।

हाल म रोशनी अभी जल रही थी । वह जल्दी जल्दी सुखिया पटने लगा । रोशनी गुल होन क पहले ही वह सभी सुखिया देख लेना चाहता था । कल क अखबार के पहले ही पृष्ठ पर उसे वह सुर्खी मिल गयी—

'रेल के डिब्बे म एक बेहोश युवती पायी' आगे वह पटन ही लगा था कि रोशनी गुल हो गयी। अब क्या करे ? बिना पढे एक मिनट भी चैन स बठे रहना असम्भव था। तभी उसकी तेज बुद्धि न अपना कमाल दिखाया। उसने उगली की अँगूठी निकालकर जेब म रखी और धीरे स उठकर दरवाजे पर गया। फिर फुसफुसाकर बन्द दरवाजे के पास खडे गट कीपर से कहा,—मेरी अँगूठी गिर पडी ह।

ाग टाच ता दो।

ाच लेकर दह अपनी सीट पर आया और झुककर टाच जलाकर उसने अखबार का दस-बारह पक्तियो का वह समाचार पटकर टाच बुझा दी। फिर सीधे उठते हुए उसने आराम की सास ली। उसने जैसा सोचा था, सब वसा ही हुआ था। खरियत की बात यह थी कि अस्पताल मे होश मे आने पर कुसुम ने कोई भी बयान देने स इनकार कर दिया था।

वह सोच रहा था। एक घटा भी उसकी गाडी लेट हो गयी होती, तो कुसुम न उसे स्टेशन पर ही पकड लिया होता। वह बाल-बाल बच गया था। उसने भगवान का इसके लिए ध यवाद दिया। कुसुम के प्रति भी वह कृतज्ञ होना चाहता था जिसने पुलिस के सामने कोई भी बयान दने मे इनकार कर दिया था। वह चाहती तो उसे बडी आसानी स फँसा सकती थी। जहर दने का साफ मामला था। फिर तो उसके लिए बचना मुश्किल हो जाता। फिर स्वभावत प्रश्न उठा, आखिर कुसुम ने उसे क्यो न फँसाया था? रमन के घर स निकलने के बाद कुसुम राजेश को सब याद आने लगा। क्या कुसुम सचमुच बदल गयी थी? काश उस व बात मालूम हो जाती, जो रमन और कुसुम के बीच हुई थी! अगर सचमुच कुसुम बदल गयी है और वह उसके साथ उसी तरह खामोश और उसकी हर बात मानने वाली लडकी की तरह रह सकती है तो उसके साथ रहा जा सकता है।

यह ध्यान उसके दिमाग म आयी ही थी कि उसने फिर अपने दोनो कान पकड लिये। उस विश्वास हो ही न रहा था कि कुसुम बदल सकती थी। वह कुसुम और यह कुसुम एक हो ही नही सकती थी। असम्भव! असम्भव!

गार्ड फिर उससे टाच माँग ले गया। राजेश इस समय कुछ आश्वस्त था। कई बार उसने पर्दे की ओर भी देखा लेकिन उसमे उसे क्या दिलचस्पी हो सकती थी। अभी तो अगले शो म भी उस वही बैठना था। उसे अफसोस हुआ था कि क्यो न उसने ढाई बजे ही जगत को बुला लिया था।

उसे अचानक ही बहुत तेज भूख महसूस हुई, तो उसे अफसोस हुआ था कि उसने इंटरवल में कुछ खा क्यों न लिया। लेकिन उस समय तो उसकी हालत इतनी खस्ता थी कि भूख प्यास क्या लगती ? जगत साला कहीं बैठकर उसके पैसे से पी खा रहा होगा। कुसुम के बारे में जानने के लिए वह कितना उत्सुक था। वह सोचता था कि वह सब उसे बता देगा। साला मुझे सीधा और बेवकूफ समझता है। *कहता था कुसुम का जंगल में ले चला। क्या वह सचमुच वहां हूं ?* मुझे, बैठा चंग पर चढ़ा रहे थे। बड़ी डींग हांकते थे, कुसुम पर जान देते हैं! और यहाँ उसकी जान लेने को कह रहे थे। जान खुद लेते और मुझे छोड़ो इस बात को! कुसुम उसे नहीं मिली, इसी लिए वह उससे चिढ़ा हुआ मालूम देता है। लेकिन कुसुम उसे मिली क्या नहीं, वह तो जाने किस जनम की सेक्स की भूखी है

यहां एक जोर का झटका उसे लगा। कुसुम उसे क्या न मिली ? भूखा क्या यह देखता है कि उसके सामने खाने को क्या आया है ? क्या वह उसने नाली में से झूठे पत्तलों को उठा उठाकर भूखे भिखारियों को चाटते हुए देखा था। फिर कुसुम क्या कुसुम के विषय में उसकी पूरी समझ को ही यह एक बहुत बड़ा धक्का था। उसने अपने दोस्तों में कुसुम के विषय में जो बातें फैलायी थीं, उसने अपनी जान में बिलकुल सच ही फैलायी थीं। लेकिन अब तो लगता है कि वे सारी बातें झूठी थीं। उसे अफसोस हुआ कि उसने जगत से साफ साफ और विस्तार से सब बातें क्यों न पूछी ? लेकिन

इसके बाद जो बात उसके मन में उठी, उससे वह मुस्करा उठा। उस मुस्कराहट में कैसी एक व्यथता थी, फिर भी वह मुस्कराहट उसके होठों पर आ ही गयी थी। एक पति होकर वह कैसे पूछता कि जगत ने उसकी पत्नी के साथ क्या क्या किया था और उसकी पत्नी में क्या प्रतिक्रिया हुई थी ? कितनी अजीब बात है! उसने स्वयं जगत को उसके पास भेजा था और यह सोचकर भेजा था कि वह उसे अकेली पाकर उसके साथ जो जो चाहेगा करेगा। लेकिन वही बातें पूछने और सुनने में कितना सकोच होता है! उस जैसे नाम के पति के

लिए भी, जिसने अपनी पत्नी का चारा ओर बदनाम कर रखा है और उससे हर हालत मे नजात पाने के लिए छटपटा रहा है और भला बुरा सब कुछ करने को तैयार है ! खैर

खैर तो कुसुम अगर वैसी नहीं है तो फिर वह उसके साथ क्या उस तरह पेश आती थी कि जैसे वह सरापा सेक्स की आग हो और उसे वह उस आग म धुलसकर छोड़ देना चाहती हो, जैसे कि वह बिलकुल पागल हो और उसे नाच नाचकर रख देना चाहती हो। उसे याद आ रहा था कि शादी के पहले तो कभी भी वह उसके साथ उस तरह पेश न आयी थी। स्पर्श और चुम्बनों के आगे वह कभी भी न बढ़ी थी। जाने कैसी कैसी प्रेम की पवित्रता और आदर्शों की वह बातें करती थी। और नीला से उसके शादी करने के बाद तो जब भी वह मिलती थी उससे जरा दूर ही बैठती थी और कहती थी, "तुम्हें छूना पाप है। तुम परायी स्त्री के पति हो !" वैसी आदर्शवादी कुसुम रमन ने उस समय कहा था, तुम फिर एक गलती क्यो कर रहे हो ? तुमने कसम खायी थी कि नीला से मुक्त होने के बाद फिर किसी लड़की का नाम न लोगे। और उसने रमन को क्या जवाब दिया था 'रमन नीला और कुसुम में कोई समानता नहीं है। नीला एक लड़की थी केवल लड़की, लेकिन कुसुम तो केवल प्रेम है प्रेम वह नीला की तरह मुझसे कुछ न चाहेगी। वह केवल मुझसे प्रेम करेगी और मेरी पूजा करेगी, केवल पूजा। रमन, तुम क्यों चाहते हो कि मैं जो एक भ्रम बनाये रखना चाहता हूँ, वह हमेशा के लिए टूट जाए। नीला ने जो मेरे बारे में प्रचार कर रखा है उसके सामने मैं सिर चुका दूं, तो जानते हो उसका परिणाम क्या होगा। एक भी लड़की मेरे पास नहीं आएगी और मेरा ऊसर जीवन तब सचमुच ही ऊसर हो जाएगा। उस जीवन की क्या तुम कल्पना कर सकते हो ? नहीं नहीं, यह भ्रम मैं कभी भी न टूटने दूंगा '

लेकिन शादी के बाद ही यह कुसुम को क्या हो गया था ? उसके वे आदर्श क्या हुए उसका वह प्रेम कहाँ गया ? ओफ !

गजेन फिर वहीं आ गया था। नहीं, नहीं उसके विषय में कुछ

भी और सोचना बेकार है। लड़कियाँ सब लड़कियाँ ही हैं। उनके आदर्श और उनके प्रेम तभी तक हैं, जब तक कि उसके लिए यही सबसे अच्छा रहेगा कि उनसे ज़रा दूर से ही आध्यात्मिक प्रेम नाता रखा जाए। उसके आगे कुछ करना अब नहीं, अब कभी भी नहीं! रमन ने विश्वास नहीं किया कैसे करता वह? इस समय तो वह बार-बार कान पकड़ रहा है, लेकिन आगे क्या होगा, कौन जाने? वह भी क्या जानता है! क्या इंसान कभी भी बेवकूफियाँ करना बन्द कर सकेगा?

शो खत्म हुआ, तो वह भीड़ के साथ ही बाहर निकला। अब उसमें इतना साहस आ गया था कि वह रेस्तराँ में जाकर बैठ सके और कुछ खा-पी ले। उसे लग रहा था कि अगर वैसे में कुसुम आ भी जाए, तो वह उसके सामने एक बुत की तरह खड़ी हो जाएगी और उसकी आज्ञा का इंतज़ार करेगी, जैसा कि उसने रमन वाले स्टेशन पर किया था रमन का जादू भी कोई मामूली मालूम नहीं देता। कितना बड़ा आश्चर्य है!

फिर भी वह एक कोने में एक खुली हुई खिड़की की बगल में बैठा दरवाजे की ओर देखता हुआ खा रहा था। जो भी हो, एहतियात बरतना ज़रूरी था। उसने एक बार में सब चीज़ों का आर्डर देकर और बिल मँगाकर पहले ही चुकता कर दिया था। उसने सोच लिया था कि अगर कुसुम दरवाजे पर दिखायी पड़ी तो वह तुरन्त खिड़की से कूदकर एक दो तीन हो जाएगा!

वह जल्दी जल्दी खा रहा था और दरवाजे की ओर देख रहा था। इस समय वह कुछ सोचकर अपना ध्यान बँटाना न चाहता था।

खाकर वह निकला, तो अचानक सोम को फोन करने की बात उसे याद आ गयी। वह तेज़ी से सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर गया था। इस बार वहाँ मैनेजर बैठा था। चपरासी ने उसे रोका नहीं। मैनेजर से इजाजत लेकर उसने फोन किया—

—हलो! मैं सोम ।

—मैं बोल रहा हूँ। आवाज पहचान रहे है न?

—हा हाँ, राजेशजी ! अरे भाई, अभी थोडी देर पहले कुसुम यहा आयी थी । कैसी हो गयी है वह ! सूखा चेहरा, गन्दे कपडे
—क्या कह रही थी ?
—कुछ नही । वह आयी । मेरे कमरे म झाककर देखा और जाने लगी । मैंने बहुत रोका और कहा कि बैठिए, लेकिन वह नही रुकी । कुछ बोली भी नहीं और चली गयी । बडी दुखी मालूम देती है वह आपका मकान का काम हो गया ?
—नही नही । मैंने पार्टी का पूरा इतजाम कर लिया है । सब चीजें लेकर हम लोग गाडी से कहीं दूर चले चलेगे और सडक के किनारे गाडी मे ही आराम से बैठकर पिए खाएगे । आप कोई चिन्ता न करें । आप यह बता दें कि मैं आपको कहा ले लू ।
—ठीक है यह हो सकता है । आप किधर जाएगे ?
—आप जिधर चाहे ।
—जी० टी० पर बस्ती के आगे नुक्कड पर हम मिलेंगे । साढे छै के करीब ।
—ठीक है । म पहले ही वहा पहुच जाऊँगा ।
चोगा रखकर उसने मैनेजर को धन्यवाद दिया और नीचे उतर आया और पहले ही की तरह एक दस रुपये का नोट गेट कीपर के हाथ म थमाकर हाल मे घुस गया । अभी पिक्चर शुरु न हुई थी । उसने सोचा कि अबकी पिक्चर देख लिया जाए तो कैसा ? अब तो यह तय ह कि रमन का जादू नही टूटा है । वर्ना वह सोम से उसके विषय मे जरूर कुछ पूछती । लेकिन वह तो खामोश रही । वह खामोशी अब भी उस पर हावी ह । उसे अफसोस हुआ था कि उसने कुसुम को क्या वह चाय पिलायी थी और क्यो उसे उस तरह गाडी म छोड दिया था ? क्यो न उसके साथ यहाँ आ गया था । एक बार और दप लेता । अगर कुसुम खामोश और फरमाबरदार बनी रहती, तब तो कोई बात ही नही थी । अगर वह फिर पुराने रास्ते पर आ जाती, तो देखा जाता । एक साल म वह मरा नहीं तो क्या दो चार दिन म वह मर जाता ?

रोशनी एक एक कर गुल हुई और पिक्चर शुरू हो गयी। थोड़ी दूर तक उसने उसे देखने की कोशिश की। लेकिन उसका ध्यान केन्द्रित हो ही न रहा था। फिर उसने अपनी आखें पर्दे से हटा लीं और सोचने लगा। काश वे बातें मालूम हो जातीं जो रमन और कुसुम के बीच हुई थीं! तब शायद वह ठीक ठीक समझ लेता और इस तरह की दुविधा उसके मन में न रहती। नीला की तरह कुसुम से छुटकारा पाना आसान मालूम नहीं देता। उसकी योजना अचानक इस तरह टूट फूट जाएगी, ऐसा वह कब सोचता था? लेकिन कुसुम ने बिना कुछ जाने समझे भी कैसे उसे धूल चटा दी। इस लडकी से पार पाना आसान नहीं। लेकिन अब उसके साथ रहना आसान मालूम देता है बशर्ते कि वह इसी तरह खामोश और फरमाबरदार बनी रहे। उसने तय किया था कि वह रमन को फोन करेगा, चिट्ठी लिखेगा और सब बातें मालूम करेगा। उसे दोनों ओर दृष्टि रखनी चाहिए, कुसुम को छोडने की ओर भी और कुसुम के साथ रहने की ओर भी। अगर कुसुम के साथ रहा जा सकता है, तो इससे अच्छा भला क्या होगा। एक नयी जिन्दगी शुरू होगी। उसका भ्रम बना रहेगा और सब कुछ ठीक ठीक चलता रहेगा। आखिर कुसुम जैसी उसकी सेवा करती है, कोई नौकर-नौकरानी क्या करेगी?

उसके दिमाग में अचानक ही एक और बात भी कौंध गयी। उसे हैरानी हो रही थी कि इस समय तक यह बात उसके दिमाग में क्या न आयी थी जिसे कि सबसे पहले आना चाहिए था। आखिर कुसुम से एकदम परेशान होकर ही तो उसने उसे छोड देने का अन्तिम रूप से फैसला लिया था। क्या इसी तरह यह नहीं हो सकता कि अपने व्यवहार का ऐसा अन्तिम परिणाम देखकर कुसुम ने भी यह निर्णय लिया हो कि अब आगे वह उसके साथ हर्गिज वैसा व्यवहार न करेगी और जैसे वह चाहेगा, वैसे ही रहेगी। कितनी तर्कसंगत यह बात है और आश्चर्य है कि अभी तक यह बात उसके दिमाग में आयी ही नहीं थी। हो सकता है कि रमन ने भी कुसुम को यही बात समझायी हो, 'कुसुम तुम्हारे व्यवहारों का यही अन्तिम परिणाम

हानया~। था। अब तुम्हारे लिए इसमें बचा था कोई रास्ता नहीं ह । राजेश ने अंतिम निणय ले लिया है।" इसपर परेशान होकर कुसुम रोने लगी और रमन के सामने यह प्रतिज्ञा की होगी कि अब आगे वह ऐसा व्यवहार न करेगी, वह जैसे चाहेगा, वैसे ही रहेगा। और रमन ने कह दिया होगा, 'जाओ, कोशिश करके देखो। अगर तुम ऐसा कर सकोगी, तो शायद यह संकट टल जाए।' और कुसुम उसी क्षण रमन के पास से आ गयी होगी।

यही बात होगी यही बात! राजेश को अब कोई सन्देह न रहा था। वह जानता था, कुसुम कितनी दृढ़ प्रतिज्ञा लड़की है। उसे याद आया था। नीला से शादी करने के बाद उसने सुना था कि कुसुम ने प्रतिज्ञा की थी कि अब वह केवल सफेद कपड़े पहनेगी और अपने बाल नहीं बाँधेगी। राजेश को बड़ा अजीब लगा था। उसने सोचा था कि कभी मिलेगा, तो उसे समझाएगा। उसने मिलने पर सचमुच समझाया था लेकिन कुसुम टस से मस न हुई थी। उसने कहा था "भारतीय नारी अपने जीवन में एक को ही वरण करती है। मैं अब कुंवारी विधवा हूं और उसी तरह रहती हूं। मेरी प्रतिज्ञा अटल है। दुनिया की कोई भी शक्ति मुझे डिगा नहीं सकती।' और सचमुच ही उसने अपनी इस प्रतिज्ञा का पालन किया था। उसने अपने सफेद वस्त्र शादी के दिन ही उतारे थे और खुले बाल भी उसी दिन बाँधे थे।

राजेश ने अब अपने को काफी आश्वस्त महसूस किया। कुसुम ने स्टेशन पर वह चाय क्यों पी ली थी यह बात भी अब उसकी समझ में आ गयी थी। कुसुम ऐसी ही है। वह जान दे देगी, लेकिन अपने निर्णय से हर्गिज डिगेगी नहीं। चाहे जो हो! कितने ही उदाहरण उसके सामने बिखरे हुए थे! हे भगवान! ऐसा ही हो! राजेश ने हृदय में भगवान से प्रार्थना की थी। उसे अपने मामाजी की बात याद आ गयी थी। उन्होंने लड़कपन में उसे बताया था, आदमी सच्चे मन से जो प्रार्थना करता है भगवान उसे स्वीकार करता है। उसने कई बार आजमा कर देखा था कि मामाजी की वह बात सही निकली

थी । उसने तय किया था कि वह इसके लिए भी शांति से प्रार्थना करेगा।

अब वह सचमुच आश्वस्त हो गया था। वह पिक्चर देखने लगा। उसे लगा कि अब समय जल्दी ही कट जाएगा। ओह! वह कितना हल्कापन महसूस कर रहा था! काश, यह बात पहले उसे सूझ गयी होती! लेकिन पिक्चर देखना उसे व्यर्थ लगा था। क्या देखने को रहता है इन पिक्चरों में उसने यह बेहतर समझा कि जब एक ऐसी महत्त्वपूर्ण बात सामने आयी है तो उसके विषय में क्या करना है, अच्छी तरह सोच लेना चाहिए। इस तरह भाग छिपकर कितने दिन रहा जा सकता है?

वह सोचने लगा और सोचते-सोचते उसने फिर दो नयी योजनाएं बना डाली, एक, उससे मुक्त होने की और दूसरी, उसके साथ रहने की, बशर्ते कि उसे पक्का विश्वास हो जाए कि कुसुम ने अपना रंग ढंग बदल लिया है।

हाल में से वह सबके बाद निकला। सामने जाने और आने वाले दर्शकों की बड़ी भीड़ लगी थी। उसने देखा, एक ओर जगत खड़ा था। उसने उसके पास जाकर पूछा—कहां से आ रहे हो?

—मरने के पास से,—जगत ने कहा—उसके होटल में तुम्हारे लिए कमरा मिल जाएगा। सोम चाहे तो शाम की बैठक भी वहां हो सकती है। चलो, इस समय तुम्हें कहां चलना है?

—टैक्सी से आये हो या अपनी गाड़ी से?

—टैक्सी से, हमारी गाड़ी खाली नहीं थी।

—तो उसे छोड़ दो, हम दूसरी टैक्सी ले लेंगे।

—पैसे दो, उसे दे दूं।

—राजेश ने जेब से निकालकर एक दस रुपये का नोट दे दिया। जगत टैक्सी वाले को किराया देकर राजेश के पास आ गया तो उसने कहा—पीछे से निकलो। आगे कहीं टैक्सी ले लेंगे।

वे चलने लगे। राजेश ने पूछा—कुसुम के पास गये थे?

—हां, चार बजे।

—वह मिली थी?

—हाँ। बैठक का दरवाजा खुला था। वह सामने के ही सोफे पर ही उठगी बैठी थी।

—तुम इस तरह एक बात कहकर चुप क्यों हो जाते हो? जल्दी-जल्दी बता जाओ, क्या क्या बातें हुईं।

—कोई भी बात नहीं हुई,—जगत ने बिना किसी उत्साह के बताया—मैंने अन्दर जाकर नमस्ते किया था। लेकिन वह कोई भी जवाब न देकर वैसे ही बैठी रही थी। मैंने उसके सामने बैठकर पूछा था, 'क्या बात है कुसुम जी? आपकी तबीयत खराब है क्या? आप कहाँ गयी थीं? मैं रोज आपको देखने आता था, लेकिन आपके घर में ताला पड़ा रहता था।"

जगत फिर चुप हो गया, तो राजेश ने पूछा—फिर?

—उसने फिर भी कोई जवाब न दिया। बिलकुल दुबली और काली हो गयी है। पहचानी नहीं जाती। मेरा खयाल है कि तुम उसे छोड़ रहे हो यह जानकर उसे बड़ा धक्का लगा है। जाने कब से एक ही कपड़े पहने हुए है, बड़े गन्दे हो गये हैं

—मेरी अटैची तुमने कहाँ रखी है?—राजेश ने पूछा।

—उसे अपने घर रख दिया है। सुनो, उसमें कुसुम के ही कपड़े हैं क्या? भाभी देखकर बहुत हँसी थी। कहती थी राजेश जी पत्नी को छोड़ रहे हैं लेकिन उसके कपड़े बात अधूरी छोड़कर वह हँसने लगा।

राजेश को उसकी हँसी बहुत बुरी लगी थी। उसने पूछा—फिर क्या हुआ?

—कुछ नहीं। मैं थोड़ी देर बैठा रहा और फिर नमस्ते करके चल पड़ा।

—तुमने देखा था, वह तुम्हारा पीछा तो नहीं कर रही थी?

—नहीं वह तो बन्द घरी और कमजोर दिखायी पड़ रही थी। वह बेचारी अब किसी का पीछा क्या करेगी? मालूम होता है उसने कई दिनों से कुछ खाया भी नहीं है। देखकर मुझे तो बड़ी दया

आयी। मैंने अपन उस दिन के व्यवहार के लिए उससे माफी भी मागी, राजेश।

—सच ?

—हा। खामखाह के लिए मैंने उस दिन उसे छेड दिया था। मुझे कमजोर, सीधी और वेवकूफ लडकियो पर बडा तरस आता है, राजेश !

—लेकिन वह तो तुम पर बलत्कार

—वह नही, शायद तुम चलाओ, तो यह दूसरी बात ह —कह कर जगत हँस पडा था।

—टैक्सी ! टैक्सी !

—वे टैक्सी पर वैठ गय। राजेश ने अपनी घडी देखन हुए कहा—जी०टी० पर चलो।

—सुनो, राजेश।

—कहो।

—मेरी बात माना, अपना इरादा बदल दो। खामखाह के लिए उससे डरकर भागते फिर रह हो। ठीक बताओ, तुमने उसे आखिरी बार कब दखा था ?

—बताऊगा,—राजेश न कहा—तुम उसे नहीं जानते, कोई भी नही जानता।—जैसे पहले कहता रहता था, वैस ही राजेश कह गया, लेकिन स्वय उसे ऐसा लगा कि उसकी आवाज म तल्खी न रह गयी थी। लेकिन अभी वह अपनी जगह से बिलकुल ही टस म मस न होना चाहता था। वह अपनी जगह से ही सब कुछ देखना चाहता था।

—क्या जानना है उसम ?—जगत न कहा—तुम जानते हो मैं बदमाश आदमी हू और मेरा व्यक्तित्व भी ऐसा है कि एसी-वैसी लडकिया को प्यार करते मुझे बिलकुल ग़ैर नहा लगती। साधारण लडकिया तो मेरे आकर्षण से बच ही नहीं सकती। तुम जानत हो कुसुम पर मैं तबीयत रखता था, लेकिन उसे कभी भी अपनी ओर आकर्षित होत हुए नहा देखा था। उसके बारे मे तुम जो कुछ बतात

ये सुनकर आश्चय होता था। मैं सोचता था, एसी गम लड़की तुम्हारे ज से ठड़े मद को पाकर भी मेरी ओर रुजू क्या नही हाता। उस दिन एक सयोग मिला, तो उस अपनी ओर रुजू करने के लिए मैंन वह सब कुछ कहा और किया, जो मैं कर सकता था। लेकिन सब बेसूद हो गया। समझे ? अब भी तुम कहते हो कि मैं उसे नहा जानता। अब तो मैं यह बात मान ही नही सकता कि वह

—छोडो यह बात —राजेश न कहा—तुम एक दिन कि बात करत हो और मैं उम एक साल तक देख चुका हू। मैंने सोम को फोन किया था। वह सारा सामान लेकर जी०टी० पर मिलेगा।

—मैंन तो सरन के यहा तय कर लिया था,—जगत ने कहा—कही वह बुरा न मान जाए।

—चाहो तो सरन को भी फोन कर बुला लो, राजेश न कहा, —फिर एक साथ ही उसके यहा रात मे चले चलेंगे।

8

लेकिन सरन नहीं आया। जी०टी० के किनारे एक जगह कई घटे तक वे पीते खाते और बातें करते रहे थे। उनके साथ एक कमसिन और हसीन लड़की थी। कुसुम की कोई बात नहीं हुई थी। शुरू में ही यह तय हो गया था कि इस समय राजेश की किसी परेशानी की कोई बात न होगी। वैसी बातें तो रात दिन होती ही रहती हैं। इस समय राजेशजी की सहत के लिए जाम लिया जाएगा और लड़की के साथ मजा उडाया जाएगा। जिन्दगी साली यो ही बडी सख्त हो गयी है। कुछ घटे तो मस्ती के मजे लूट जाएँ।

सडक के किनारे दूब पर एक दरी बिछा दी गई थी। चादनी रात थी। जगत जब खा-पीकर, धुत होकर लडकी को लेकर लेटने लगा था, तो सोम ने कहा था—ये तो गये। लेकिन, यहाँ नही, भाई, गाडी में चले जाओ।—और उसने खुद उसे सम्भालकर गाडी के अन्दर कर दिया था।

फिर सोम ने राजेश से कहा—ऐसे लोगों से मुझे नफरत है। आप खामखाह के लिए इसे लाये। ये लोग दूसरों के मजे की कोई परवाह नहीं करते।

—मेरा हाल तो यह है कि जब मैं खुशी मे पीता हूँ तो मेरा मन कविता करने को होने लगता है। और जब परेशानी में पीता हूँ तो

मेरा मन कै करन को होता है

—क्या कहते हैं आप ?—सीटी की सी आवाज म सोम न कहा,—मैंने तो सोचा था कि आप बहुत परेशान हैं

—नहीं, परेशानी म मुझे पीना बिलकुल अच्छा नहीं लगता, वह तो साथ के लिए आ गया था। माफ कीजिएगा, मैंन खामखाह के लिए अपनी परेशानी की बात छेड दी। लेकिन मैं क्या करूँ

—कोई बात नही—साम न कहा,—आपकी बात दूसरी है और आपकी परेशानी भी काई मामूली नहीं है। आप तो जानते हैं, मुझे इसका कितना अफसोस ह। लेकिन मैं तो कह चुका हूँ कि इस मामले म मैं आपकी हर मदद करूँगा।

—आप कुसुम के पास जा सकते हैं ?

—उसके पास मेरे जाने की क्या जरूरत है ?—सोम न जरा परेशान हाकर पूछा।

—देखिए !—राजेश न कहा—जिस काम के लिए मैं आपको कुसुम के पास भेजना चाहता हूँ, वह कोई भी दूसरा नहीं कर सकता।

—लेकिन मुझे ता उसस बडा डर लगता है,—सोम ने साफ-साफ ही कहा—एकाध बार मैं आपके यहा गया हूँ। उनकी आँखें देखकर मुझे तो ऐसा लगता है कि जैसे वे झुलसकर रख देंगी।

—यह मुझे मालूम है,—राजेश न कहा—कुसुम को यह बिलकुल पसन्द नहीं कि कोई भी मेरा या मेरी मित्र मेरे यहा आए। लेकिन शायद अब वैसी बात नहीं है। मुझे अपने एक बडे ही विश्वास पात्र स यह मालूम हुआ कि कुसुम अब प्रायश्चित की मन स्थिति म है, वह बिलकुल खामाश हो गयी है। कमज़ोर, दुबली, काली और बिलकुल मौन हा गयी है। शायद उसने कई दिना स कुछ खाया भी नहीं है।

—उस अपन आफिस म एक दिन एक नजर ही मैंन दखा था,—सोम न बताया—मुझे भी बिलकुल ऐसा ही कुछ लगा था। तो आप क्या चाहते हैं ? मैं उसके पास जाकर क्या करूँगा ?

—तो आप जाएँगे ?

—हिम्मत ता नहीं होती,—साम ने कहा—फिर भी आपका

काम है, खतरा मोल लेकर भी करने की कोशिश करूँगा। आप काम बताइए।

जेब से नोटों की गड्डी निकालकर उसकी ओर बढ़ाते हुए राजेश ने कहा—आप रुपये उसे दीजिएगा और कहिएगा, 'राजेश जी के आदेशानुसार मैं ये रुपये लेकर आया हूँ। आप इन्हें ले लीजिए और जिन्हें देना हो दे दीजिए और उनके लिए कोई सन्देश हो, तो मुझे देने की कृपा कीजिए।

वह रुका था, तो सोम ने पूछा था—बस ?

—हाँ, यही काम है।

—मुझे कब जाना होगा ?

—सुबह बिलकुल तड़के। देर होने पर शायद वह न मिले।

—ठीक है। फिर आप कहाँ मिलेंगे ? मेरे यहाँ आएँगे ?

—नहीं। मैं आपको घर पर या आफिस में फोन करूँगा।

—ठीक है,—सोम ने कहा—अब उठा जाए ?

—क्यों आप उस लड़की के साथ मौज नहीं करेंगे ?

—नहीं। आपकी परेशानी में मूड खराब हो गया है। मुझे तो नशा भी नहीं हुआ।

दोनों उठ खड़े हुए। सोम ने पूछा—अब कहाँ जाएँगे ?

—कहीं भी रात काटूँगा,—राजेश ने कह दिया—जगत मेरे साथ रहेगा।

सोम ने एक टैक्सी रोककर राजेश और जगत को उस पर बैठा दिया और लड़की को अपनी गाड़ी में लेकर चल पड़ा।

सरन के होटल पर वे टैक्सी से उतरे। राजेश ने ड्राइवर को पैसे और बख्शीश देकर कहा—जरा इन्हें सहारा देकर ऊपर पहुँचा दो।

सरन के कमरे का दरवाजा खुला था। मद्धिम नीली रोशनी जल रही थी और अँग्रेजी धुन का कोई रेकार्ड धीमी धीमी आवाज में बज रहा था। वह सोफे पर बैठकर बड़े आराम से पी रहा था। खट पट की कोई आवाज सुनकर उसने दरवाजे की ओर देखा और राजेश को देखकर बैठे-बैठे ही कह दिया—आओ ! यह जगत को क्या

एक जीनियस की

है ?

राजेश ने कहा था—तुम आये क्या नहीं ? हमने तुम्हारा बडा इन्तजार किया था।

जगत को एक सोफे पर लिटाकर, सलाम ठोककर ड्राइवर चला गया।

—बैठो बैठो।—सरन ने कहा—भाई, मुझे जगत की तरह किसी का सहारा लेकर अपने कमरे मे आना पसन्द नहीं है। इसीलिए मैं भरसक कहीं बाहर पीने नहीं जाता। हां, कोई अपने यहां आ गया, तो उसका स्वागत। कहो, कैसा रहा ? तुम्हारे लिए गिलास बनाऊँ ?

—नहीं, शुक्रिया !—राजेश ने बैठकर कहा—मैं पी-खा चुका हूँ।

—तो मुझे इजाजत है ?

—बशौक ! तुम जारी रखो !

सरन ने चुस्की लेकर कहा—सिगरेट लो। तुम्हारे लिए काफी मँगवाऊँ ?

—ले लूंगा —राजेश ने सिगरेट जलाते हुए कहा—यार तुम्हारी जिन्दगी से मुझे रश्क होता है।

घंटी का बटन दबा कर सरन ने कहा—हर शादीशुदा आदमी मुझसे यही कहता है, लेकिन हर कुंवारा मुझे चुगद समझता है। जगत होश में होता तो मेरी बात की ताईद करता।

बेयरा आ खडा हुआ तो सरन ने उससे कहा—साहब के लिए काफी लाओ।

—जो कुंवारा तुम्हें चुगद कहता है, वह खुद ही चुगद होगा—बेयरे के चले जाने के बाद राजेश ने कहा।

—तुम एक बार नहीं, दो बार शादीशुदा हो चुके हो,—सरन ने कहा था—कुंवारा के विषय में तुम्हें कुछ कहने का कोई हक ही नहीं है। हां, यार, जगत बता रहा था

रेकार्ड बजना बन्द हो गया तो सरन ने उठकर दूसरा लगा दिया। फिर उसने कहा—हां वाला !

—अगर तुम इजाजत दो तो मैं दरवाजा बन्द कर दूं ?

—अजीब अहमक हो दरवाजा क्या बन्द करोगे ?—सरन ने कहा—यहां न तो कोई पर्दानशीन रहती है और न किसी की कोई प्राइवेट जिन्दगी है। मैं खुला आदमी हूं और खुली जिन्दगी जीता हूं। बन्द कमरे में बैठकर पीना और किसी मजबूर लड़की के साथ बलात्कार करना बराबर है। तुम आखिर कुसुम से इतना क्यों डरते हो ? मजबूर लड़कियों से कोई मर्द डरे, यह अजीब बात है।

—तुम्हें कोई अनुभव नहीं है इसी कारण ऐसा कह रहे हो —राजेश ने कहा—तुम शादी करो, फिर देखो, ये लड़कियां क्या होती हैं।

—क्या तुम समझते हो कि हमारे समाज में शादी नाम की किसी चीज का सचमुच कोई अस्तित्व है ?

—देखो, यार —राजेश ने कहा—इस समय किसी भी गम्भीर विषय पर कोई बहस करने की मेरी मन स्थिति नहीं है।

—और तुम तो जानते हो —सरन ने कहा—किसी भी हल्के विषय से मुझे नफरत है। मेरे लिए हल्के विषयों पर बात करना जिन्दगी और समय के साथ मजाक करना है, और तुम जानते हो, हमारी तुम्हारी हैसियत के लोगों के लिए जिन्दगी और समय के साथ मजाक करना बड़े और बेकार लोगों की फूहड़ नकल है।

—नहीं, यार, – राजेश ने कहा—मैं तो मजाक करने क्या, किसी हल्के विषय पर भी बहस करने की मन स्थिति में नहीं हूं। मैं तो एक बेहद परेशान आदमी हूं और सिर्फ तुम्हारी सहानुभूति चाहता हूं।

सरन फिर से हँस पड़ा। एक चुस्की लेकर उसने कहा—एक मजबूर, गुलाम कमजोर लड़की के खिलाफ तुम अपने लिए सहानुभूति चाहते हो ? तुम जानते हो, अव्वलन तो मैं सहानुभूति को एक नैतिक बेहूदगी के सिवा कुछ नहीं समझता। दूसरे, यह कि मैं हमेशा कमजोर का पक्ष लेने के हक में हूं। तुम जानते हो, मैं जगत और सोम जैसे लोगों में नहीं हूं। एक दिन सोम आया था। कह रहा था,

'उस लड़की ने राजेशजी जैसे जीनियस को बरबाद करके रख दिया है। क्या हमारा यह फर्ज नहीं है कि राजेशजी को बचाए ? राजेश जी के जीवन के मुकाबिले कुसुम का जीवन क्या है ? राजेशजी की जिन्दगी के लिए तो सैकड़ा लडकियां कुरबान की जा सकती है।''
वाला तुम्हारा भी यही ख्याल है न ?

राजेश कुछ न बोल पाया। उसे आश्चर्य हुआ कि जब सरन का रवैया उसके प्रति ऐसा शत्रुतापूर्ण था, तो जगत ने उससे यहां ठहरने को क्या कहा था। यहां तो वह बिलकुल ही सुरक्षित नहीं था।

—जानते हो, मैंने उसे क्या जवाब दिया था,—सरन ने कहा था, 'मैंने उससे कहा था, केवल बोजुआ विचारों का आदमी ही इस तरह की बेहूदा बातें कह सकता है। राजेश जीनियस है तो क्या इसका यह मतलब है कि उसे लड़कियों की जिन्दगी बरबाद करने का हक है ? अगर वह जीनियस है तो उसकी प्रतिभा का उपयोग समाज और देश की भलाई के लिए होना चाहिए न कि लड़कियों को बरबाद करने के लिए ? किसी को भी जीनियस महान या बड़ा कहकर उस पर साधारण मनुष्यों को कुरबान करने की बात की जो ताईद करता है उसे मैं आदमी नहीं, दरिन्दा समझता हूं। मेरे लिए सब आदमी बराबर हैं, सबकी जिन्दगी बराबर है किसी का किसी की जिन्दगी चाहे वह कोई साधारण ही क्या न हो बरबाद करने का कोई भी हक नहीं है। तुम लोग जो राजेश को जीनियस कहकर उसकी हिफाजत को नैतिकता का जामा पहनाना चाहते हो, वह सिर्फ पाखंड है, गन्दा पाखंड। — कहकर सरन ने चुस्की ली थी और सिगरेट जलाया था।

बेयरा ट्रे में काफी का सामान लेकर आया, तो बड़ी लापरवाही से सरन ने राजेश से कह दिया—लो, काफी पिओ।

राजेश बेहद घबरा उठा था। उसे भय था कि कहीं सरन ने कुसुम को सूचना न दे दी हो कि राजेश उसके होटल में ठहरेगा। दरवाजा चौपट खुला हुआ है। जगत धुत पड़ा हुआ है। और सरन, अब कोई सन्देह नहीं, उसका शत्रु है। हे भगवान ! इस हालत में अगर कुसुम

आ गई तो क्या होगा ? उसके जी म आया कि वह अभी वहा स चल दे। वहाँ रकना बिलकुल ही खतर मे खाली नही था।

—पिओ ! पिओ !—सरन न कहा—तुम यह न सोचो कि मैं तुम लोगा के विचारा और कामा का विरोधी हूँ तो मैं तुम लोगा का शत्रु हूँ। लेकिन, भाई, तुम लोग अपन बेहूदा विचारो आर कामा पर नतिकता का मुलम्मा तो मत चढाओ। मुझे इस वेईमानी से चिढ है। सोम को साफ कहना चाहिए कि वह राजेश का साथ इसलिए देता है, क्योकि उस उसमे अपन लिए पाठय पुस्तकें लिखवानी ह। और जगत को साफ कहना चाहिए कि वह राजेश का साथ इसलिए देता ह क्योकि उस उसमे पीने को शराब मिलती है आर लडकियाँ मिलती ह। यही ईमानदारी की बात होती आर सच माना, तब मैं कोई आपत्ति न करता। अब तुम यह बताओ अगर मैं कुसुम का पक्ष ले रहा हूँ, ता मुझे उससे क्या लेना ह ? नही, मुझे उसस कुछ भी नही लेना है। फिर भी मै उसका पक्ष ले रहा हूँ इसका क्या मत लब ह ? यही किसी भी मामले का एक नैतिक पहलू हमार सामन आता है। एक कमजार और मजलूम का पक्ष लेना, और किसी कारण हो या न हो, कम स कम नैतिकता के कारण तो होना ही चाहिए, यही नैतिकता है प्यार दोस्त समझे ?

राजेश सिर झुकाए हुए काफी पी रहा था। उसन घडी देखी। बारह से अधिक हो गए थे। क्या करे ? उसकी समझ म न आ रहा था। सरन पीता जा रहा था। राजेश की चुप्पी उस बिलकुल नही खल रही थी। कभी कभी ता वह यह भी भूल जाता था कि उसके पास कोई और भी बैठा है। दरअसल वह काफी पी चुका था और अभी उसका आर भी पीन का इरादा था। इतना पीन के बावजूद उसे कोई अधिक नशा न था। वह बहुत धीरे धीरे और बहुत देर तक पीता था और किसी न किसी समस्या म स्वय उलझ जाता था। कोई हो या न हो, वह बाकायदे उस समस्या पर विचार करता था, तर्क करता था, और जब तक किसी परिणाम पर न पहुँच जाता था पीता रहता था। आज जब वह पीने बठा था, ता राजेश आर कुसुम

की ही समस्या उसके सामने थी एक मर्द और एक औरत की। राजेश और जगत के आने के पहले भी वह खुद इस समस्या पर काफी विचार कर चुका था।

—अच्छा, राजेश,—सरन ने फिर कहना शुरू किया था—तुम मुझे एक बात बताओ। तुमने लगातार कुसुम के खिलाफ बेहूदा से बेहूदा बातों का प्रचार किया है। तुमने अपने सभी दोस्तों को, माफ करना, मैं अपने को तुम्हारे दोस्तों में नहीं गिनता, कुसुम का विरोधी बना दिया है। तुम्हें कुसुम के मुकाबले तुम्हारे सभी दोस्तों की सहानुभूति और सहायता प्राप्त है। लेकिन तुम मुझे यह बताओगे कि कुसुम ने तुम्हारे खिलाफ कभी भी किसी से भी क्या कहा है या किया है ?

राजेश फिर भी कुछ न बोल पाया। वह सिगरेट जलाकर यों ही धुआं फेंकता जा रहा था।

—बोलो भाई,—सरन ने फिर पूछा—कुसुम ने तुम्हारे विरुद्ध किसी से एक भी बात कही है तो बताओ। नहीं उस बेचारी ने कुछ भी नहीं कहा है कुछ नहीं किया है। सुनो, कुसुम का पक्ष लेने का यह मेरा एक दूसरा पहलू है। समझे ?

इसी तरह की बहुत सारी बातें करने के बाद, जब एक बज गया तो सरन ने बेयरे को बुलाकर खाना लाने का हुक्म दिया। उस समय वह एक परिणाम पर पहुंच गया था और उसके मन का विषाद उसी तरह समाप्त हो गया था जैसे दिमाग के नशे की भूख।

बेयरा खाना सजा गया तो उसने खाना शुरू करते हुए कहा—सुनो ! सुनो ! यह मेरी आखिरी बात है। लेकिन इस समय मैं चाहता हूँ कि तुम कम से कम हां या ना में जरूर उत्तर दो। बोलो, दोगे ?

—दे सकूंगा तो जरूर दूंगा — राजेश ने यों ही कह दिया।

—तुम कुसुम को छोड़ना चाहते हो ?

—हां।

—तो एक काम करोगे ?

—वाला ?

—तुम उस समय तक उसके खर्चे की पूरी व्यवस्था करोगे, जब तक उसकी और कोई व्यवस्था नहीं हो जाती ?

—करूँगा ।

—तो फिर ठीक है, तुम उसे छोड़ सकते हो ?

अब राजेश को लगा कि वह भी कुछ बातें कर सकता है। उसने कहा—तुम यह काम करा दोगे ?

—देखो काम तो मैं सिर्फ अपने आफिस का करता हूँ—सरन ने कहा—और कोई काम तो मैं करता नहीं। लेकिन अगर तुम इसके लिए तैयार हो, तो मेरी भी सहानुभूति तुम्हें मिल सकती है। समझे ? अब जाओ, उस बिस्तर पर पड़ जाओ। जगत को सोफे पर ही छोड़ दो। उसे उठाने की जहमत बेकार है।

राजेश नहीं उठा। वह सरन को बताना चाहता था कि उसकी नैतिक सहानुभूति का उसके लिए कोई उपयोग नहीं था। उसे तो एक ऐसा आदमी चाहिए, जो कोई भी व्यवस्था करके कुसुम को उससे अलग कर दे।

—तुम बिस्तर पर नहीं गए ?—सरन ने तब जरा तेज होकर कहा—अब कुछ नहीं! खाना खाते समय मैं कोई बात पसन्द नहीं करता, तुम जानते हो!

—सोने से जाने के पहले तुम दरवाजा बन्द कर दोगे न ?

—नहीं।—सरन ने कह दिया—बेड टी लेकर बेयरा आए, दरवाजा खटखटाए और मैं उठकर दरवाजा खोलूँ यह मुझसे कभी भी नहीं हो सकता।

—सुबह खोलने की मेरी जिम्मेदारी रहेगी।

—अजीब अहमक हो!—सरन ने कहा—कुसुम अगर यहाँ आ ही गयी, तो तुम दरवाजा बन्द रहने से कैसे बच सकते हो ? जाओ, पड़ रहो। दरवाजा बन्द नहीं होगा। लेकिन मैं जानता हूँ, तुम्हारी आँखें खुली रहेंगी! जाओ!

राजेश जाकर बिस्तर पर पड़ गया। उसकी आँखें खुली थीं

और सास फूल रही थी। कितनी वडी वेवकूफी उसम हो गई थी! मरन वे थक्कीपन से वह परिचित था, किन्तु वह इस सीमा तक चला जाएगा, इसकी आशा उसे न थी। उस लगा था कि शायद सरन चिढ गया था, क्योकि शाम को उसके यहा न बैठकर, वे लोग जी० टी० चल गए थे।

राजेश मन ही मन भगवान से प्राथना करन लगा कि सुवह तक सकुशल वीत जाए। इस प्राथना के साथ ही उसे अचानक याद आया था कि सिनेमा घर म भी एकाग्र चित्त होकर एक प्राथना करन की सोची थी। लेकिन वह भूल गया था। वह भूला न भी होता, तो भी वह कहाँ और किस तरह प्राथना करता? लेकिन इस समय उसन यह निश्चय किया कि सरन सो जाए, तो वह चुपके से दरवाजा बन्द कर वह बाथ म जाएगा, मह हाथ धोएगा और अपने को स्थिर और एकाग्र करन का प्रयत्न करेगा। सफल हो गया, तो जरूर प्राथना कर डालेगा। उस टालना नही चाहिए। उसका मन कह रहा था कि यदि उसने प्राथना कर ली, तो भगवान जरूर सुन लेगा। उस याद था कि ऐसा कई बार हुआ था।

सरन आराम से खाना खा रहा था। साला कितना ज्यादा खाता है! अट्ठारह सौ रुपया पाता है। होटल के इस कमरे म अकेले रहता है और सब खा पी डालता है। राजेश को लगा था कि आज यह जान बूझकर धीरे धीरे और बहुत ज्यादा खा रहा है।

जगत वैसे ही पडा था। अब सुवह आठ नौ बजे के पहले वह उठन वाला नही था। लेकिन राजेश न सोचा था, वह जगत को सुवह चार-पाच बजे ही जगाएगा और उसके साथ यहा से भाग निकलेगा। सुवह होन तक तो यहा हर्गिज नही रुका जा सकता।

सरन खाकर उठा। वेयरे ने वही उसके हाथ मुह चिलमची म धुलवाए। फिर उस तौलिया दिया उसका विस्तर ठीक किया और वतन उठाकर चला गया। सरन बाथ से लौटकर सिगरेट जलाकर विस्तर पर पड गया। नीली रोशनी उसी तरह जल रही थी। दर-वाजा उसी तरह खुला हुआ था। रेकाड उसी तरह वज रहा था।

राजेश दरवाजे की ओर देख रहा था और सोच रहा था कि बिना दरवाजा बन्द किए उसका मन स्थिर नहीं हो सकता और एकाग्र होकर वह प्रार्थना नहीं कर सकता। सरन साला इस हालत में भी लेटे लेटे सिगरेट पिए जा रहा था। यह कब सोएगा?

राजेश जैसे अब सोचते-सोचते थक गया था। दिमाग की यह हालत हो गई थी कि वह और कुछ सोच ही न पा रहा था। बस एक प्रार्थना करने की बात रह गयी थी। प्रार्थना कर लेता तो शायद उसे नींद भी आ जाती। लेकिन नहीं, वह सोएगा तो जाने नींद कब टूटे।

रिकार्ड बजना बन्द हो गया। सरन ने फिर उठकर दूसरा रिकार्ड न लगाया। राजेश ने तब सोचा, सरन अब सो जाएगा। अचानक नीली रोशनी अब उसे बड़ी अजीब लगने लगी थी। उसमें उसे अब दरवाजा भी बड़े ध्यान से देखने पर ही दिखायी देता था। दरवाजे के बाहर गैलरी की बत्ती शायद अभी बुझी थी, जिसके कारण अन्धकार में दरवाजे के हाथिये खो गये थे। सहसा ही उसे अलीबाबा के गुहा खजाने के दरवाजे की याद आ गयी थी। कितना अच्छा होता कि वह दरवाजा भी वैसा ही होता और यहां से लेटे लेटे ही चुप चुप बोल देता, 'बन्द हो जा समसम!' और दरवाजा बन्द हो जाता और उसके सिवा उसे कोई भी न खोल पाता, क्योंकि उसके सिवा दरवाजा खोलने का गुर किसी को मालूम ही न होता। कुसुम आकर भी क्या करती, दरवाजा खुलता ही नहीं।

जब उसे इतमिनान हो गया था कि सरन सो गया, तो वह धीरे-से उठा। फर्श पर गलीचा बिछा था। आवाज होने का कोई सवाल ही नहीं था। फिर भी वह बड़े ही दबे पांव दरवाजे की ओर बढ़ा। लेकिन अभी दरवाजे के पास वह पहुंचा भी न था कि उसने वहां जो देखा, उससे चौंककर पीछे हट गया। खैरियत हुई थी कि उसके मुंह से कोई चीख न निकली थी, वर्ना सरन की नींद में खलल पड़ जाता और तब क्या दृश्य होता यह सोचकर ही वह कांप उठा।

वह लौटकर हताश बिस्तर पर पड़ गया। ठीक चौखट के पास

ही एक पल्ले की ओर सिर और दूसरे पल्ले की ओर पाँव कर काइ सोया था। राजेश के समझ म ही न आ रहा था कि वह कौन था और कब आकर सो गया था।

अब दरवाजा बन्द करन की बात उसन दिमाग स जाती रही, क्योंकि वह उसे बन्द कर ही न सकता था। अब वह क्या करे ? अब एक ही काम वह कर सकता था। वह था किसी तरह मन का एकाग्र करन का प्रयास करना उसने सोचा किसी तरह मन एकाग्र हो जाए ता वह प्राथना कर डाल। प्राथना करन की अन्त प्रेरणा इतनी प्रबल थी कि वह टालना न चाहता था। और वह अपन को एकाग्र करन का मन-प्राण स प्रयत्न करन लगा।

उसन पलकें मूदी ही थी कि घबराकर फिर चट खाल दी थी। वह डरा था कि कहीं आखें मूदी और वह आ गयी, तो क्या होगा ? वह कभी भी आ सकती है। उसके लिए समय और दूरी को नापना कितना आसान है ! उसके सूघन की शक्ति का मुकाबला जासूसी कुत्ता भी क्या कर सकता है ? लेकिन प्राथना ? उसे लगा कि अगर उसने प्राथना न की, तो सब बना-बनाया खेल बिगड जाएगा। वह अपने को एकाग्र करने की फिर काशिश करन लगा। उसने कई बार आखें मूदी और खोली और अन्त म उसकी स्थिति मृत्यु शय्या पर पडे उस ला इलाज मरीज के अभिभावक की तरह हो गयी, जिसके सामने दुआ करन के अतिरिक्त आर कोइ चारा ही न रह गया हो। उसन किचकिचा कर पलकें मूद ली और तय कर लिया था कि जा हो अब वह पलकें खालेगा ही नहीं। वह बलात पलकें मूँदे रहा था। लेकिन उसका मन ? वह कम्बख्त किसी तरह काबू मे आ ही न रहा था। उस वह कैस बाँधे, उसकी समझ मे ही न आ रहा था। आँखा की तरह उस भी बन्द करन के लिए कोई ढक्कन होते तो कितना अच्छा हाता ! बडी काशिशा क बाद भी उस सफलता न मिली ता उसन फिर आँखें खाल दीं। लेकिन इस बार पलकें खोलन म उस बडा कष्ट हुआ जैसे कि चिपके ढक्कन को उसे खोलना पडा हो।

यह आख मिचौनी काफी दर तक चलती रही थी और इसका

नतीजा यह निकला था कि उसने आँखें खोलने की कोशिश की थी, तो उसे लगा था कि नीली रोशनी के दबाव न उन्हें खुलने ही नहीं दिया था, याने उस नींद ने दबोच लिया था।

9

——उठो, घर चल।

——कुसुम ने राजेश का हाथ पकड़कर बहुत ही धीमी आवाज मे कहा। लेकिन वह आवाज राजेश के अन्तर को झनझना गयी थी, जैसे बिजली छू गयी हो। वह एक मशीनी पुतले की तरह उठा बैठा और एक नजर कुसुम की ओर देखकर उसके आगे-आगे उसी तरह चल पडा, जैसे जेलर के आगे आगे फासी पर चढने मुजरिम जाता है।

वे बाहर आये तो कुसुम को देखते ही ड्राइवर ने पीछे का दरवाजा खोला और पहले राजेश और फिर कुसुम टैक्सी मे घुसकर बैठ गये। टैक्सी चल पडी।

वे अलग-अलग बैठे थे। खामोश, सिर झुकाये। राजेश का सिर तो ऐसे झुका था, जैसे वह गर्दन से टूट गया हो।

सुबह का उजाला घूप रहा था। लेकिन सडक भी अभी उन्ही की तरह खामोश थी। गाडी तेज रफ्तार से चली जा रही थी।

उनके मकान के सामने गाडी रुकी। ड्राइवर ने दरवाजा खोला। दोनो उतरे। कुसुम ने अपना बैग खोलकर ड्राइवर को पैसे दिये। वे ओसारे मे आये। कुसुम ने बैग से चाभी निकालकर दरवाजा खोला। वे अन्दर बैठक मे घुसे और एक ही सोफे पर अगल-बगल बैठ गये। खामोश

आर सिर भुकाये। राजेश का सिर कुछ ज्यादा ही भुका था।

इसी समय उनके मकान के सामने सडक पर कोई गाडी रुकने की आवाज आयी। तब राजेशने चुपके से एक राहत की सांस ली और सिर जरा उठाया। उसे याद आ गया था, साम होगा। ओह! भगवान ने उसे बस बचा लिया!

वह सोम ही था। बठक के दरवाजे पर उसने उगली से धीरे-धीरे ठक ठक की तो राजेश ने कुसुम की ओर धीमे से सिर घुमाकर देखा और उठकर दरवाजे की ओर गया।

साम ने जैसे कोई भूत देखा हो, चौंककर एक कदम पीछे हट गया और दबी हुई सीटी की सी आवाज म बोला था—आप?

—हा—राजेश ने कहा—आइए!

—नहीं-नहीं,—उसी आवाज म सोम ने कहा—फिर तो मैं चलता हूँ।—उसन एक कदम और पीछे हटा लिया।

—नहीं! राजेश न लपककर उसका हाथ पकड लिया। इतनी जान अब उसम आ गयी थी। वह बोला,—आइए! आइए! आप खूब आय!

दोनों अन्दर गये। सोम ने हाथ जोडकर उसी सीटी की सी आवाज म कहा—कुसुमजी नमस्ते!

राजेश ने इतनी देर बाद जरा गौर से कुसुम की ओर देखा और कहा—कुसुम, सबसे पहले तुम जाकर नहाओ धोओ और कपडे बदलो। यह सूरत तुमने बना रखी है।—अब तो राजेश शेर हो गया था। वह कुसुम को आदेश दे सकता था।

कुसुम उठी और अन्दर चली गयी।

वही बिलकुल वैसी ही! राजेश को रमन वाले स्टेशन की बातें याद आ गयीं। खामोश और फरमाबरदार कुसुम। मन ही मन उसे कुछ आशा बधी और वह स्थिर हो गया।

सोम ने जेब से वे नोट निकाल कर राजेश की ओर बढाते हुए कहा—इन्ह अब आप रख लीजिए।

नोट लेकर अपनी जेब में रखते हुए राजेश ने कहा—शुक्रिया!

सोम ने इशारे से पूछा—कहाँ पकड़े गये ?

राजेश ने अन्दर के दरवाजे की ओर देखा। नहीं, वहाँ कुसुम नहीं थी। तब सोम का हाथ पकड़कर, उसकी हथेली पर उसने लिखा 'सरन'।

सोम ने मुँह बिचकाया। फिर संकेत से पूछा—अब ?

बाथ से पानी गिरने की आवाज आ रही थी। राजेश में अब साहस आ गया था। उसे याद आया था, रमन वाले स्टेशन पर वह दवा और फिर चाय लाने गया था और कुसुम ने उसे अकेले ही जाने दिया था। वह फुसफुसाकर बोला,—देख लेना चाहता हूँ शायद उसके साथ एक जिन्दगी और

सोम ने हाथ उठाकर बताया—देख लीजिए, कोई हर्ज नहीं शायद उसके होश ठिकाने आ गये हैं।

राजेश ने फुसफुसाकर कहा—यही मेरा भी खयाल है।—फिर साफ आवाज में कहा—आप क्या मेहरबानी कर इस समय कहीं से कुछ चाय नाश्ते का इन्तजाम कर सकते हैं ?

अब सोम भी अपनी सीटी की सी आवाज में बोला—यहाँ पास में कोई रेस्तराँ है ?

—नहीं, जरा दूर है—राजेश ने कहा—आप जाकर गाड़ी में ले आइये।

—फिर कोई चायदानी दीजिए।

—अब इस समय मैं कहाँ ढूँढ़ू,—राजेश ने जेब की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा—आप पैसे जमा कर दीजिएगा बर्तनों का।

—नहीं नहीं—सोम ने उठते हुए कहा—मेरे पास पैसे हैं। आप रखिए।

—शुक्रिया!—राजेश ने कहा—तीन सेट, काफी क्रीम और काफी नाश्ता। जाने कुसुम कितने दिनों की भूखी है। आपको मालूम है जंगली जानवरों को भूखा रखकर काबू में किया जाता है ?

– ठीक है—कहता हुआ सोम उठा और बाहर चला गया।

कार चालू होने की आवाज आयी, तो राजेश चौंका कि कहीं

कुसुम यह न सोचे कि राजेश फिर भाग गया। इसलिए उसने अन्दर के दरवाजे की ओर देखकर जोर से खास दिया ताकि कुसुम सुन ले और समझ ले कि वह घर में ही था।

नहीं, कुछ नहीं। बम्बे से पानी गिरने की पहले ही की आवाज तरह आती रही। अन्दर के दरवाजे पर उसी तरह पर्दा पड़ा रहा। उसके पीछे कुसुम का साया नहीं था।

इससे राजेश कुछ और आश्वस्त हो गया। उसकी नजर बाहर के खुले दरवाजे पर पड़ी, तो उसने तुरन्त उधर से आँखें हटा लीं। नहीं राजेश अब भागेगा नहीं। भाग-भाग कर उसने देख लिया, भागना-छिपना बेकार है। अब यह भी देख लेना चाहिए। कुसुम उस पर विश्वास करने लगी है, तो उसे भी उस पर विश्वास कर लेना चाहिए। लेकिन बाहर का खुला हुआ दरवाजा उसे उसकी आदत के मुताबिक जैसे उसे दावत देने में बाज न आ रहा था। इसलिए चुपके से उठा और उसने दरवाजे को उठगा दिया। उसे यह भी देख ही लेना चाहिए कि दरवाजा बन्द होने पर कुसुम पहले की तरह उसके साथ करती है कि नहीं। साम को लौटने में कोई बहुत देर न लगनी। अब वह अन्दर के दरवाजे की ओर ही मुंह कर बैठ गया। बाहर के दरवाजे पर फिर एक नजर गयी, तो वह मन ही मन मुस्करा उठा। कुसुम से बचने के लिए वह दरवाजे बन्द करता और करवाता रहा था, लेकिन इस समय कहीं वह कुसुम से बच न निकले, इसलिए खुद दरवाजा बन्द किया था। चीजें किस तरह उलट-पुलट जाती हैं! स्थिति भी क्या चीज है!

वह चुपचाप ऐसे बैठा था, जैसे कोई मेहमान हो। यह घर इसका सब कुछ कभी उसका कितना परिचित था। लेकिन इस समय उसे लग रहा था कि इस घर से उसका सारा सम्बन्ध खत्म हो चुका है और इसका सब कुछ अजनबी हो चुका है। फिर परिचित होने, सम्बन्ध कायम करने में कितना समय लगेगा, कौन जाने! यह नयी कुसुम भी अभी कितनी अपरिचित लग रही है जैसे कोई बिलकुल अपरिचित नयी-नयी आयी दुल्हन हो। इस 'दुल्हन' शब्द से वह चौंक

उठा। एक दिन दुल्हा बनकर कुसुम इस घर मे आयी थी तब तव क्या वह कुसुम से अपरिचित था ?

अचानक बाथ मे पानी गिरने की आवाज आनी बन्द हुई, तो राजेश का विचारो का घोडा ठिठक कर खडा हो गया था। उसने आहट ली। कुसुम के नगे, भीगे पाव चलने की धीमी थप-थप कपडे निकालने के लिए कोई बक्स खुला है—पर्दे के पीछे स जसे कोई तेज गन्ध आयी है ? राजेश ने धीरे से, लेकिन एक लम्बी सास खीची। यह कसी गन्ध ह ? जसे 'धूप म घराऊ कपडा से गन्ध आती हे। क्या कुसुम ने कोई घराऊ कपडा निकाला है ? उसके जी मे आया कि पर्दे से झाककर दखे। लेकिन यह खयाल आना था कि उसके शरीर मे एक गिनगिनाहट दौड गयी। कुसुम कपडे बदल रही होगी उस याद आया था, कुसुम जब गाडी के डिब्बे म बेसुध पडी थी, तो कैसे उसने उसकी छाती उठाकर उसका बैग एक खयाल अचानक ही उसके दिमाग मे कौध उठा, कितना अच्छा होता कि कुसुम हमेशा उसी तरह बेसुध पडी रहती और वह देखता एक एककर उसके सब अगा का दखता और उसे बिलकुल डर न लगता बिलकुल

बाहर स गाडी रुकने की आवाज आयी तो राजेश सहम गया था। क्या जो खयाल अभी अभी उसके दिमाग म कौंधा था, उसका चिह्न उसके चेहरे पर होगा ?

सोम एक बडा ट्रे सभाले दरवाजे पर स बोला—राजेशजी दरवाजा खोलिए।

राजेश ने दरवाजा खोला और कहा—माफ कीजिए, आपको बडी तकलीफ हुई।

—आपकी जिन्दगी सवर जाए मैं तो सब कुछ करने के लिए तैयार हू,—राजेश का मुस्कित पाकर उत्साह म हापते हुए सोम ने कहा।

कमरे म आकर उसने ट्रे मेज पर रख दी और बैठते हुए पूछा —कुसुम जी अभी तैयार नहीं हुई ? और आप आपको भी नहा-

धो लेना चाहिए था। बहुत थके हुए है।

—नहा लूगा,—राजेश न कहा और बड़े प्यार से पुकारा—कुसुम!

उधर स कोई आवाज नहीं आयी। वही गन्ध बडी तेज आ रही थी। राजेश न कई बार नाक सुडके।

राजेश की पुकार का कोई नही जवाब आया, यह देखकर सोम ने सकेत म पूछा—क्या बात है, कोई जवाब नही?

राजेश न सिर हिलाकर बताया—कोई बात नही।

थोडी देर म ही कुसुम आ खडी हुई और वह गन्दी बैठक भी जगमगा उठी। राजेश और सोम चकित उसकी ओर देख रहे थे। वह शादी का जोडा पहने थी और दुलहिन की तरह सजी थी।

राजेश ने अचकचाकर कहा—बैठो, कुसुम!

कुसुम माथे का घूंघट छूती हुई बैठ गई। सोम ने हकबकाकर आखें नीची कर ली। राजेश चकित था कि कितनी अजीब बात हो गयी थी! अभी-अभी उसने जो बात सोची थी, वही सहसा यो सामने आ गया था सचमुच एक नयी जिन्दगी की शुरुआत

उसने कहा—खाओ, कुसुम, अच्छी तरह खाओ!

कुसुम एक सैंडविच का टुकडा उठाकर, आखें झुकाये हुए ही खाने लगी।

—लीजिए सोम जी आप भी,—राजेश न कहा।

—आप लीजए मैं चाय बनाता हूँ,—सोम ने कहा।

—नही, चाय कुसुम बनाएगी,—राजेश ने कहा।

धीरे धीरे काफी देर तक चाय नाश्ता चलता रहा। बातें नही के बराबर हुई थी। कुसुम तो एक शब्द भी नही बोली थी। राजेश जो कहता जाता था, वह करती जाती थी और कभी-कभी जैसे रुकी हुई साँस को धीरे से छोड देती थी। राजेश को रह-रहकर अपनी शक्ल और कपडे खल रहे थे। उसे यह सरासर ज्यादती लग रही थी कि दुलहिन कुसुम के पास वह ऐसी शक्ल लिए ऐसे कपडो मे बैठा हुआ था।

आखिर सिगरेट जलाते हुए उसने कहा—मैं भी अब ज़रा नहा धो लूँ सोम जी आप बैठिए।

—मुझे तो अब आप

—नहीं नहीं! आप अभी बैठिए, कुसुम से कुछ बातें कीजिए, मैं दो मिनट मे आता हूँ, कहते हुए राजेश बाथ की ओर चला गया।

अब राजेश आश्वस्त हो चुका था। जितना उसने सोचा था, बात उसके कहीं आगे तक सही निकली थी। कुसुम ने सब कुछ वैसे ही किया था जैसा कि उसने रमन वाले स्टेशन पर किया था। उसकी हर बात मानी थी, जैसा उसने कहा था, वैसा ही इसने किया था। अपने से कुछ नहीं एक काम नहीं, एक बात नहीं। बिलकुल खामोश, जैसे बोलना ही भूल गयी हो। इसने ऐसा कुछ भी तो नहीं किया, जैसे पहले करती थी। कितनी बदल गयी है! सचमुच बदल गयी है! अब किसी भी सन्देह की कोई गुंजायश नहीं रही। और सबके ऊपर तो इसका यह मधुर सकेत! शादी का जोडा पहनकर दुलहिन बनकर आई और सिर झुकाकर खडी हुई। फिर कहने पर बैठी। कैसे बैठी? सचमुच एक दुलहिन की ही तरह। सहमी, झिझकी, शर्मीली, खामोश। कहने से इसने खाना शुरू किया। कैसे खा रही थी? थोडा थोडा धीरे धीरे और कैसे सास ले रही थी! जैसे एक अजनबी जगह मे खुलकर साँस लेने में भी सकोच हो रहा हो।

उसे याद आया था कि इस तरह दुलहिन बनकर तो यह इस घर मे उतरी भी न थी। उस समय तो दुलहिन की तरह सजी जरूर थी, लेकिन व्यवहार मे इसने एक दुलहिन की तरह कुछ भी न किया था। न सहमी थी न झिझकी थी, न शर्मायी भी। जैसे कि जाने कब मे इस घर से परिचित हो, कहीं कुछ भी अनजाना न हो। जैसे विदा कराके न लायी गई हो, खुद ही चली आयी हो और आते ही सब कुछ अपने हाथ में ले लिया हो

लेकिन आज? आज कितनी जुदा दुलहिन बनी है कुसुम! शायद यह भी एक बारीक इशारा ही है कि अब सचमुच यह एक दुल

हिन, एक फारमाबरदार बीवी की तरह रहने आयी है, उसके हुक्म के बिना कुछ भी न करेगी, यहा तक उठे बठेगी भी नहीं। एक नई, बिलकुल नई ज़िन्दगी की शुरुआत करेगी, जिसमे राजेश को सिर्फ खुशी मिलेगी, कोई परेशानी नहीं, कोई तकलीफ नही।

उसने तय किया कि कुसुम की इन नई भावनाओं की वह कद्र करेगा। उसे उत्साहित करेगा और स्वय ऐसा व्यवहार करेगा, जैसे पूरी तरह वह इसकी भावनाओ का, व्यवहारो का स्नेहपूर्वक, मन से जवाब दे रहा हो।

उसे खुशी हुई कि उसने बैठक से उठते समय सोम से कहा था कि वह कुसुम से बातें करे। उसका मतलब यही था कि दुलहिन अकेली पडकर ऊबे नहीं, उसका मन बहलता रहे। गोकि वह जानता था कि कुसुम सोम से कोई भी बात नहीं करेगी। भला नयी दुलहिन किसी पराये आदमी से कोई बात करती है ?

वह नहा धोकर निकला, तो अफ्सोस हुआ कि उसके पास वह शादी वाला जोडा न रहा था। वह कब का पुराना धुराना हो चुका था। यह कैसा अजीब रिवाज है कि दुलहिन का जोडा तो सँभालकर रख दिया जाता है, लेकिन दूल्हे का जोड़ा नही रखा जाता। पति मरता है, तो उसके क्रिया कर्म के दौरान तरही तक विधवा पत्नी को फिर शादी का जोडा पहनाया जाता है। वह वही जोडा पहनकर रात में सोती है। लोगो का कहना है कि मरने के बाद भी क्रिया कर्म के दौरान पति की आत्मा रात मे अपनी विधवा पत्नी के पास सोने आती है। लेकिन पति का जोडा नही रखा जाता। पत्नी मरती है, तो विधुर पति को वह जोडा पहनने की जरूरत नहीं पडती, क्योंकि मरी हुई पत्नी की आत्मा क्रिया-कर्म के दौरान विधुर पति के पास नही आती विधुर पति के लिए तो कही एक नयी दुलहिन तैयार होती रहती है

फिर भी उसने चुनकर अपना सबसे बढिया सूट निकाला और आज बहुत दिनो के बाद टाई भी निकाली। जूते पर पालिश की। बालो को जाने कितने दिन बाद मन से सँवारा। उसमे रंग भी लगाया

और त्रीम भी।

सजकर वह व ठक म आया, तो सचमुच वडा जम रहा था। सोम उसकी ओर दखता रह गया। राजेश मुस्कराया और व ठत हुए उसने कहा—कुसुम, जाओ, तुम थोडा आराम करो।

कुसुम सिर का घूघट सँभाल उठी, और सिर झुकाए हुए ही अ दर चली गयी।

—वाह!—सोम के मुह मे निकल गया—कितना अच्छा लग रहा ! मैं चाहता था कि आपकी घरेलू जिन्दगी बिल्कुल ऐसी ही हो ख़ामोश खुशगवार

—एक और जिन्दगी ! नयी बिलकुल नयी !—राजेश ने खुश होकर कहा।

— भगवान महान है !

—हा भगवान महान है !—राजेश ने कहा और उसे प्राथना वाली वात याद आ गयी थी। उसे इस समय याद न आ रहा था कि रात म वह प्राथना कर पाया था कि नही। लेकिन उसे लग रहा था कि उसन जरूर प्राथना की थी। फिर सोचा था, न भी कर पाया, तो इसम क्या ? प्राथना की नीयत तो उसने कर ली थी और उसे पूरा करने की पूरी कोशिश भी की थी। कहत है, मन स नीयत करना आधा काम करन क वरावर होता ह। उसन भगवान को मन ही मन वडा-वडा धयवाद दिया कि उस कृपालु ने उसकी सुन ली थी।

—अच्छा—राजेश की ओर खुश खुश हाथ बढाते हुए सोम न कहा—अव आप मुझ इजाजत दें ! विलकुल तडके यहाँ आ गया था। अभी नहाना धोना है। आफिस जाना है।

—नही, आज आपको वहीं भी नही जाना है—राजेश ने बडी गमजोशी म उसका हाथ पकडकर कहा—आज आपकी भी छुट्टी ! आज आप भी मर साथ खुशी मनाएँगे। आज मरी शादी की वषगाँठ है। मैं तो भूल गया था, लेकिन कुसुम न याद दिला दी। आज दोस्तो का यहाँ स्वागत होगा पार्टी होगी हम पिएँग खाएँग

खुशी मनाएँगे ! ओह ! आज मैं कितना खुश हूँ ! जैसे नर्क से स्वर्ग मे आ गया होऊँ ! शायद इसी महान खुशी के लिए इतनी भयंकर यातनाएँ थीं लेकिन अब कुछ नहीं। खुशी, सिर्फ खुशी ! एक नयी जिन्दगी ! भगवान भी कैसा कारसाज है !

—तो शाम को रहेगा न ?—सोम ने पूछा।

—हां, शाम को ही रहूँगा,—राजेश ने कहा—आप सब दोस्तों को खबर करेंगे। सारा इन्तजाम करने की तकलीफ भी आपको ही उठानी होगी।

—सब हो जाएगा —अपना हाथ फिर उसकी ओर बढ़ाते हुए सोम ने कहा—और सब मेरी ही ओर से ! मैं आपके मुँह से कुछ भी सुनना नहीं चाहता। आप नहीं जानते कि आपको खुश देखकर आज मैं कितना खुश हूँ ! हमारे देश का एक महान जीनियस बच गया ! इससे बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती है ?

—ओफ !—राजेश ने उसका हाथ दबाते हुए कहा—आपने तो मेरे ऊपर एहसान का बड़ा भारी बोझ लाद दिया। मैं आपका बेहद शुक्रगुजार हूँ सोम जी। और वादा करता हूँ कि अब सबसे पहले आपकी किताब लिखूँगा, फिर और कुछ करूँगा।

—धन्यवाद ! धन्यवाद !

—सुनिए —राजेश ने कहा—इस घर की हालत देख रहे हैं न।

—मैं अभी अपने चपरासियों को बुलाकर सब ठीक करवा देता हूँ, आप कोई चिन्ता न करें, राजेश जी, सब ठीक हो जाएगा, बिलकुल ठीक !

—शुक्रिया ! शुक्रिया ! आपका बड़ा भरोसा रहा, सोम जी !

—मैं जिन्दगी भर हाजिर रहूँगा, राजेश जी। मैं तो सिर्फ आपको खुश देखना चाहता हूँ।

10

शाम को बिलकुल एक जशन सा हो गया। राजेश के करीब-करीब सभी दोस्त तोहफे ले लेकर आये थे। जो शादी शुदा थे, उनकी पत्नियाँ भी आयी थीं। कुसुम अकेलापन महसूस न करे, इसलिए पत्नियों को खास तौर पर बुलाया गया था। सबसे कहा गया था कि राजेश जी अपनी शादी की वर्षगांठ पर दावत दे रहे हैं, आप अवश्य आने की कृपा करें।

सोम ने दावत का सारा इन्तजाम एक अच्छे होटल वाले के सुपुर्द कर दिया था। अन्दर आंगन में मेजें लगी थीं। कुसुम को घेरकर औरतें बैठी थीं और राजेश को घेरकर मर्द बैठे थे। औरतों को लग रहा था कि कुसुम एक साल पुरानी नहीं, बल्कि बिलकुल नयी दुलहिन है। कुसुम सिर गाड़े खामोश बैठी हुई थी। वह मुस्करा भी न रही थी। औरतें चुहल करती थीं, लेकिन वह कोई जवाब न देती थी। जैसे कि शर्म के मारे उसकी जबान ही न खुल रही हो। इसके उलटा राजेश की हाजिरजवाबी आज अपनी पूरी ऊंचाई पर थी। वह हर दोस्त की बात का ऐसा चुभता और हास्यपूर्ण चुस्त जवाब दे रहा था कि हँसी के फव्वारे छूट पड़ते थे। वह सिर्फ बियर पी रहा था, सिगरेट पी रहा था और कुछ भी खा न रहा था। वह अपने दिल, दिमाग और पेट को हलका और साफ रखना चाहता था, एक हलके

सुरूर की हालत में, ताकि हर चीज का ठीक और खूब मज़ा वह ले सके। उसके जीवन में पहले कभी ऐसा सुंदर, सुखद और सुनहरा अवसर आया था, उसे याद न था। उसके मनमें एक ऐसी खुशी ने जन्म लिया था, जो बिलकुल नयी तरह की थी, जिसका स्वाद बिलकुल नया था, जो एकदम से बिलकुल नयी जिंदगी लगती थी।

सरन नहीं आया था। राजेश ने सरन को खास तौर पर बुलाया था। सोम और जगत दोनों से सरन को जरूर-जरूर बुलाने के लिए कहा था। राजेश को पिछली रात की सरन की सभी बातें याद थीं। वह चाहता था कि सरन आए, तो आज वह उसकी हर बात का जवाब दे। साला अपने को बडा तार्किक, नैतिकता का देवता, मानवता का अलमबरदार और कमजोरों का हिमायती बताता है! जैसे कि इन गुणों को वही समझता जानता और मानता है। आज उसे वह बता देना चाहता था कि सचमुच नैतिकता, मानवता और कमजोरों की हिमायत के क्या मतलब होते हैं! वह उसे बता देना चाहता था कि पाखंडी वह नहीं, खुद सरन है, जो भाषण तो बहुत देता है, लेकिन जब काम करने का अवसर आता है, तो कहता है, "काम तो अपने आफिस का करता हूँ!" साला नैतिक समर्थन को ही अपने कर्तव्य का अंत समझता है! नहीं, जनाब, इस तरह के नैतिक समर्थन की बात करना और जरूरत पडने पर कोई काम न करना सबसे बडा पाखंड है। आप सोम को पाखंडी कहते हैं, मतलबी कहते हैं और अपने को देवता समझते हैं! लेकिन आपको नहीं मालूम कि बात बिल्कुल उलटी है! पाखंडी और मतलबी आप हैं, सोम नहीं, क्योंकि असल चीज काम है बात नहीं। आप बात करते हैं, अपना ज्ञान बघारने के लिए अपना रोब जमाने के लिए! कहिए, क्या इससे भी बढ़कर कोई पाखंड की बात हो सकती है? और एक पाखंडी आदमी से बढकर मतलबी कौन हो सकता है, जो दूसरों को मूर्ख समझता है? वह उनकी क्या सेवा कर सकता है? वह खुद अपनी ही सेवा करता है, जनाब! अपनी ही स्वार्थपूर्ण खुशी के लिए। यह निश्चय है कि ऐसा आदमी आत्मकेंद्रित होता है वह दूसरों को कुछ नहीं समझता और दूसरों के लिए कुछ

करता भी नहीं ह । लेकिन यही बात क्या आप सोम के विषय में कह सकते है ? नही, हर्गिज नही ! सोम बात नही करता, काम करता है, दरअसल वह दूसरो की सहायता करता है, दूसरो से हमदर्दी रखता ह। आपकीवह बात आप क्या समझेंगे, जनाव ? आप इसे या समझिए! मान लीजिए, मैं किसी को काई काम करने के लिए प्रेरित करता हूँ, उत्साहित करना हूँ। ठीक ह उस काम मे मेरा भी कोई हित है। लेकिन काम काम ह जनाव ! और मैं तो कहूँगा कि काम करन से काम कराना कही मुश्किल काम ह ! समझे, जनाव ! अब आप इस रूप म सोम को देखिए ! उसने काम किया ह, जनाव ! समझे आप ? आज की यह रौनक आप देख रह ह ? यह शराव जो आप पी रह है, वह सोम की है, जनाव ! उसन यह सब हमारे लिए, दूसरो के लिए, सबकी खुशी के लिए किया ह, जनाव !

आप मेरे बार म पूछत है ? मैं आप म हजारगुना बेहतर इन्सान हूँ, जनाव ! इन्सान मैं उसे नहीं समझता, जो गलतियो स बचन के लिए अपने को एक कमरे म बन्द कर ले, जसा कि आपने अपने को कर रखा ह। इन्सान वह है, जो एक सामाजिक जीवन जीता है शादी करता है, दूसरो के साथ सम्बन्ध कायम करता है और गलतियाँ करता है। हाँ जनाव ! गलती करना इन्सान का स्वभाव है। लेकिन इसम भी वडी एक और बात है जिसे आप हर्गिज न समझेंगे! वह है अपनी गलती समझना दूसरो की गलती समझना और उसे सुधार देना ! यही असली बात है सरन साहब ! अब आप मुझे देखिए ! मैंन गलती की, कुसुम ने गलती की। हमने बडी तकलीफें उठायी ! लेकिन हमने अन्त म अपनी-अपनी गलती समझ ली और उसे भुला दिया उसे सुधार लिया। हमन एक-दूसरे को क्षमा कर दिया, जनाव ! बिना एक शब्द कहे बिना किए, केवल समझकर, मानकर और एक दूसरे का ख्याल करके। क्या आपकी समझ म ये बातें आ सकती हैं सरन साहब ? हर्गिज नहीं, हर्गिज नहीं ! आप तो समझते हैं, हर मज का इलाज भाषण है। वह भी उसके सामने, जो दुखी है सताया हुआ है वह भी अपने ही कमरे म, शराब का

गिलास हाथ में लेकर। हु ! सरन साहब ! माफ कीजिएगा, आप तो मजमे के सामने, विद्यार्थियों के सामने भाषण भी नहीं दे सकते और मैं मैं विद्यार्थियों के सामने देता हूँ। यहा भी आप मेरा मुकाबला नहीं कर सकते, सरन साहब !

और जगत ? जगत भी आपसे बेहतर इन्सान है सरन साहब ! यह मै सिद्ध कर सकता हूँ ! खैर।

राजेश को लगा कि शायद यही समझकर सरन नहीं आया कि आज राजेश उसे छोडेगा नहीं ! और राजेश मन ही मन हँस पडा।

सोम इस अवसर के लिए दो मोटे-मोटे गुलाब के हार भी लाया था। उसने उन्हे छिपाकर रखा था और अन्त मे अपना प्रस्ताव रखकर सबको चकित और राजेश को खुश कर देनेवाला था।

जगत अपनी आदत के अनुसार पी पाकर धुत हो गया था और उसे बेयरो ने ले जाकर बैठक मे सोफे पर डाल दिया था। उसकी भाभी को उसकी बडी चिन्ता थी और वह थोडी थोडी देर मे जाकर उसे देख आती थी। वह यह भी सोच रही थी कि अगर जगत ठीक तरह से होश मे न आया तो उसकी गाडी कौन चलाएगा ?

खा पीकर सब लोग मस्त हो गये। फिर कुर्सियो पर टेक लगाकर आराम-सा करने लगे। बातें बिलकुल कम हो गयी। तब सोम दौडकर वे हार ले आया और खडे होकर अपनी सीटियो सी आवाज मे बोला,—भाइयो और बहनो ! आप लोग यहाँ से विदा हो, इसके पहले मै राजेशजी और कुसुमजी की ओर से और एक तरह से अपनी ओर से भी आप लोगो को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आप लोगो ने तकलीफ उठाकर इस महफिल को रौनक बख्शी और राजेशजी और कुसुमजी की खुशी मे और एक तरह से मेरी खुशी मे भी, शिरकत की। अब एक और आखिरी प्रोग्राम रह गया है। मेरा प्रस्ताव है कि राजेश जी कुसुमजी को और कुसुमजी राजेशजी को हम-सबकी ओर से ये हार पहना दें।

कहकर उसने एक हार राजेश की ओर बढा दिया था और एक हार कुसुम को देने के लिए औरतो की ओर बढा दिया। सबने तालियां

पीटी।

राजेश खुशी मे दौडता हुआ-सा कुसुम के पास गया। इस बीच दो औरतो ने कुसुम के बाजू पकडकर उसे खडा कर दिया था। उन्होंने कहा—पहले कुसुमजी हार पहनाएँगी।

और एक दो औरतें कुसुम की मदद करने आगे बढ गयी और उसके हाथ उठा दिये। राजेश ने झुककर, कुसुम के हाथ अपने हाथ मे लेकर हार पहन लिया। फिर उसने कुसुम को अपना हार पहना दिया। दोनो बार जोर जोर से तालिया बजी और "मुबारक! मुबारक!" के शब्द गूज उठे।

फिर सोम ने ही सबको विदा किया। जगत की भाभी परेशान थी, क्योंकि जगत उस समय भी उसी तरह धुत पडा हुआ था।

सोम ने कहा,—भाभी जी, आप चलिए, मैं आपको छोड दूगा। जगत कल चला जाएगा। कही भाई साहब जगत को इस हालत मे देखकर बिगड न पड़ें।

इतनी देर बाद जाकर राजेश जैसे अब अपने होश मे आया। वह सोचने लगा, सब लोग चले जाएँगे और वह और कुसुम अकेले रह जाएँगे! फिर? नही-नही, सहसा उसे खयाल आया कि किसी को रोक लेना चाहिए। जगत तो बेकार है इस समय, उसका यहा रहना या न रहना बराबर है। सोम को हाँ, सोम को रोक लेना चाहिए। उसने आगे बढकर कहा—सोमजी, आप जगत और भाभीजी को उनकी गाडी मे छोडकर टैक्सी से लौट आइए।

—हाँ, यही ठीक है,—जगत की भाभी ने कहा—जगत को इस हाल मे छोडना मुझे अच्छा नही लगता। मैं इसे ले जाकर चुपचाप सुला दूगी।

तब सोम उन्हे उनकी गाडी मे लेकर चला गया। उस समय अकेली सोम की बीबी कुसुम के पास सोने के कमरे मे थी। आज की सेज उसी ने सजायी थी बिलकुल सुहाग रात की सेज की तरह।

राजेश बैठक मे अकेला बैठा था। सोम को वह रोक लेगा, यह सोचकर वह आश्वस्त था। लेकिन साथ ही अब वह यह भी सोच

रहा था कि क्या सोम का रोकना ठीक होगा ? इस समय तो किसी का भी अपने बीच रोक रखने का मतलब यही होगा न कि अभी भी उसे कुसुम पर पूरा विश्वास नहीं हो पाया है, अभी भी वह उससे डरता है और अपनी सुरक्षा के लिए किसी को अपने साथ रखे हुए है। कुसुम को यह मालूम होगा, तो शायद वह कुछ कहेगी तो नहीं, लेकिन यह महसूस तो जरूर करेगी न, कि देखो, अब भी राज उसपर विश्वास नहीं करता। इसलिए उसे सोम को भी रोकना ठीक न लगा। अब भी वह कुसुम को यह सोचने का अवसर दे, ऐसा नहीं होना चाहिए। कुसुम कुछ न कहेगी, बिना उसके हुक्म के कुछ न करेगी, क्या अब भी इसमें कोई सन्देह रह गया है ?

लेकिन उसके मन में अब भी वह डर क्या बना हुआ था कि उसे रात में कुसुम उसे लगा कि डरना शायद उसकी आदत ही बन गयी है, लगातार एक साल तक बराबर डरते रहने के कारण अब डरना उसकी जिन्दगी का एक भाग ही बन गया है। इससे धीरे धीरे ही छुटकारा मिलेगा। उसे एक बार फिर आश्चर्य हुआ कि कुसुम ने अचानक अपने को कैसे इस तरह बिलकुल बदल लिया था। लेकिन वह एक नम्बर की जिद्दिन है। जो जिद्द वह ठान लेगी, उससे टस से मस वह हो ही नहीं सकती। लेकिन यही बात उसके विषय में तो नहीं कही जा सकती। उसमें दृढता नाम की तो कोई चीज ही नहीं है। देखो, आज दिन भर वह क्या सोचता और करता रहा और इस समय फिर वही डर ! नहीं नहीं ! इस समय ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए, जिससे कुसुम के विश्वास को चोट पहुचे। वर्ना वह क्या सोचेगी ? कौन जाने, उसमें अचानक कोई प्रतिकूल प्रतिक्रिया हो और फिर नहीं नहीं। आज अपनी ओर से वह कोई ऐसा काम नहीं करेगा, आज वह एक नयी जिन्दगी की शुरुआत करने की पूरी कोशिश करेगा। फिर चाहे जो हो।

वह सिगरेट जलाकर बाहर ओसारे में निकल आया। वह टहल रहा था और सोच रहा था। सड़क पर अन्धकार छाया था। शायद सड़क की बत्ती खराब हो गयी थी। सोने के कमरे से कोई भी आवाज

न आ रही थी। शायद वे कोई बात नहीं कर रही थी। अभी थोड़ी देर पहले यहां कितनी रौनक थी, कितना शोर शराबा था। लेकिन अब अंधेरा और सन्नाटा था। और राजेश को फिर डर लगने लगा। अभी सोम लौटेगा और अगर उसे उसने न रोका, तो वह अपनी बीवी को लेकर चला जाएगा। फिर राजेश सिहर उठा। मन की गहराई में जमा हुआ आतंक यों जाता भी तो कैसे ?

लेकिन सिर झटककर वह फिर सोचने लगा। आज रात चाहे जो हो वह कुसुम को जरूर परखेगा। आज की रात वह किसी भी तरह झेलेगा फिर कल इधर या उधर। यह आखिरी दांव है, हार हो या जीत। हारा तो वह है ही, कहीं जीत गया, तो ? शेष पूंजी उसके पास रह ही क्या गयी है ? उसने मन में ही कहा, 'राजेश, साहस करो ! इस रात को झेल लो, चाहे जैसे हो ! आखिर सबसे बुरा क्या होगा ? तुमने कितनी ही रातें झेली हैं एक रात और सही, बस, एक रात और ! यह दांव तुम्हें लगाना ही होगा, राजेश! एक नयी जिन्दगी की उम्मीद में ! कुसुम ने एक संयोग दिया है तो उसका स्वागत करो, ठुकराओ नहीं राजेश !

अब उसे ऐसा होने लगा कि सोम जल्दी लौट आये और अपनी बीवी को लेकर चला जाए। अब वह एक साहसिक अभिमानी की तरह आंख मूंदकर सीधे और तुरंत अपने को सम्भावित खतरे में झोंक देने के लिए तैयार हो गया था।

तभी एक टैक्सी आकर रुकी और सोम उसमें उतरकर आया। ओसारे में ही राजेश को देखकर उसने कहा,—यहां आप क्या कर रहे हैं ? माफ कीजिएगा, टैक्सी देर से मिली। मुझे बड़ा अफसोस है कि आप लोगों का इतना समय मैंने और ले लिया !—और उसने अपनी बीवी को पुकारा।

उसकी बीवी अकेली ओसारे में आ गयी। उसके साथ उन्हें विदा करने कुसुम नहीं आयी। सोम की बीवी ने मुस्कराते हुए राजेश से कहा —जाइए, राजेशजी, आपका इंतजार हो रहा है। बड़ी देर हो गयी।—कहकर उसने हाथ जोड़ दिये।

साम ने भी जल्दी में हाथ जोड़े और अपनी बीवी का हाथ पकड़कर चलता बना। कार घरघरायी और रवाना हो गयी।

अब अचानक राजेश का दिल धड़क उठा। फिर भी साहस कर वह जल्दी से अन्दर घुस गया, क्योंकि उसे डर लगा था कि कहीं जरा भी देर हो गयी तो... उसने दरवाजा बन्द किया और उसी तरह सोने के कमरे में घुस गया, जैसे घर में आग लगने पर और कोई रास्ता न पाकर आदमी लपटों में ही घुस जाता है।

उसका दिल घड़ घड़ बज रहा था। पांव कांप रहे थे। आंखों के सामने अंधकार छा रहा था। लेकिन अब बच निकलने का कोई रास्ता ही नहीं था। वह जाकर पलंग पर बैठ गया और अपने मन को स्थिर करने का प्रयत्न करने लगा। लेकिन किसी तरह मन स्थिर हो ही न रहा था।

कुसुम पलंग पर से उठी, तो राजेश के दिल की धड़कन जैसे एकदम बन्द हो गयी। हे भगवान! यह क्या उठ खड़ी हुई? उसने तो उसे उठने के लिए नहीं कहा था?

लेकिन नहीं। कुसुम ने वैसा कुछ भी न किया। वह घूंघट में सिर झुकाये उसके सामने नीचे बैठ गयी और आंचल से अपने दोनों हाथ निकालकर उसके पांव छुए। राजेश का साहस लौट आया। उसने मन ही मन खुश होकर, झुककर कुसुम के हाथ अपने हाथों में ले लिये और उन्हें लिये ही उसे पलंग पर धीरे से बैठा दिया।

राजेश के आगे का अन्धकार अब छंट गया था। उसे याद आया कि इस अवसर पर दुलहा दुलहिन को कुछ देता है। उसने जेब में हाथ डाला और उसमें जितने नोट थे सब निकालकर कुसुम के हाथ में धर कर रुंधे गले से कहा—कुसुम! इनसे तुम अपने लिए कोई मनपसन्द चीज खरीद लेना।

राजेश को याद आया था कि कुसुम जब पहले-पहल दुलहिन बन कर आयी थी, तो उसने उसके पांव नहीं छुए थे... वह तो एकदम से उससे लिपट गयी थी। लेकिन इस बार... राजेश फिर आश्वस्त होने की दिशा में मुड़ गया। वह उठा। गुलाब का हार उतारकर

सिरहाने रखा। कोट उतारकर टागा। टाई उतारकर टाँगी। जूते मोजे खोलकर रखे। अब पट कमीज उतारकर सोने के कपडे कैसे पहने? उसने सहमकर कुसुम की ओर देखा, तो वह गुडीमुडी होकर घूघट म सिर झुकाये बुत की तरह बैठी थी और रह रहकर गहरी गहरी सासें ल रही थी। फिर राजेश को लगा कि वह कुसुम के वहा रहते भी कपडे बदल सकता था।

वह कपडे बदलकर पलग पर आ गया और अब जैसे नाटक का अन्तिम पर्दा गिराने की सोचकर उसने बडे प्यार से कुसुम के कधे पर हाथ रखकर कहा—कुसुम, अब लेट जाओ। तुम बहुत थक गयी होगी।

कुसुम पाव थोडा फैलाकर लेट गयी, तो राजेश को अचानक याद आया कि दुलहिन का घूघट उठाकर उसका मुह देखना चाहिए था उसके हाथ सहलाने चाहिए थे उसकी पीठ सहलानी चाहिए थी उसे अपने अक म भरना चाहिए था उसे चूमना चाहिए था कुसुम की ये सब साधें शायद आज हो। लेकिन अब जाने दो, जाने दो, यह अच्छा ही हुआ कि वह यह सब भूल गया

कुसुम चुपचाप लेट गयी, यह बहुत ही अच्छा हुआ। राजेश के जी मे आया कि वह उठकर नीली बत्ती भी गुल कर दे और कुसुम से सो जाने के लिए कह दे। लेकिन फिर बत्ती गुल करना उसे ठीक न लगा। हा उसने कुसुम से यह जरूर कह दिया—अब सो जाओ, कुसुम, तुम्हें आराम करने की बहुत जरूरत है।

और ये देखो! कुसुम गहरी गहरी सासें लेने लगी। उसका मुहँ अब भी घूघट म छिपा था वरना राजेश यह भी देखता कि क्या सच मुच उसकी पलकें भी मुद गयी थी।

थोडी देर बाद राजेश भी धीरे से लेट गया। कुसुम के किसी भी अग से उसके किसी भी अग का स्पर्श न हो, इसका उसने पूरा-पूरा ध्यान रखा था।

यहा आकर दुलह दुलहिन का खेल खत्म हो गया। इसके आगे का खेल राजेश न खेल सकता था। इसका उग इस समय सचमुच

वडा अफसोस हो रहा था। लेकिन वह मजबूर था। कुसुम आज खुद होकर अब कुछ न कहेगी, कुछ न करेगी, उसे यह एक बहुत बडा आश्वासन था, वर्ना राजेश खुद होकर उसके पास इस तरह लेटन का साहस भी न करता। उनका इस तरह लेटना तो जैसे बिल्ली और चूहे का एक साथ लेटना था। उसे याद आया था नीला के जमाने से इस सोने के कमरे मे दो पलग साथ साथ लगे हुए थे। लेकिन कुसुम ने आते ही एक पलग हटवा दिया था। तब से वह पलग अन्दर के औसारे मे पडा-पडा टूट फूट गया था। राजेश न सोचा, कल उस पलग को ठीक ठाक करवाके फिर इस कमरे मे लगवा लेगा और वह उस पर अलग ही सोया करेगा। कुसुम अब कुछ न कहेगी।

कुसुम बिलकुल शान्त पडी थी। उसकी गहरी-गहरी सासें सुनायी पड रही थी। यह वही कुसुम है कौन विश्वास करेगा ? सहसा ही राजेश के मन मे कुसुम के प्रति दया उमड पडी। बेचारी जैसे सब-कुछ करके, हार मानकर पडी हुई थी। यह ऐसी जबरदस्त हार थी जिसन उसके व्यक्तित्व का ही नही, अस्तित्व को भी हमेशा के लिए समाप्त कर दिया था। बेचारी ने आखिर सिर झुकाकर स्थिति को स्वीकार कर ही लिया। अब इसके जीवन मे इसका कुछ भी तो अपना न होगा, आप होकर यह कुछ भी तो न कर पाएगी। यह अपने मन को, इच्छाओ को मार देगी और बिलकुल एक काठ की पुतली की तरह रहेगी और जब वह रस्सी खीचेगा, तो हिले-डुलेगी। वर्ना चुप खडी रहेगी, बैठी रहेगी या सोयी रहेगी। बेचारी कुछ बोलेगी भी नही। बोलना तो इसन उसी दिन म बन्द कर दिया था जिस दिन वह रमन के घर से निकली थी। दो चार शब्द ही तो यह इतने दिना के बीच बोली थी, "चलो हम चलें।" बस और कुछ भी तो नही। आज शाम को भी बेचारी ऐसी खुशी के माके पर कुछ नही बोली थी। औरतें कितनी चुहल कर रही थी, लेकिन यह चुपचाप बैठी रही थी माटी की मूरत की तरह।

राजेश का अपनी जीत पर प्रसन्नता होनी चाहिए थी। वह प्रसन्न था भी। किन्तु क्या वह उस प्रसन्नता को व्यक्त कर सकता

था, इस कुसुम के सामने भी, जो उसके पाँवों से रौंदकर उसके सामने पडी हुई थी ? नही ! और उसे सहसा लगा कि नहीं, कुसुम को उसने नहीं रौंदा है, वह तो बडा ही कमजोर और डरपोक किस्म का आदमी है। वह कुसुम जैसी लडकी को क्या खाकर रौंद सकता है ? फिर ? उसे लगा कि वह कोई और ही शक्ति है, जो एक मर्द के पास, उस जैसे एक नामर्द के पास भी है, जो लडकियों का, कुसुम जैसी जबर-दस्त लडकियों को भी रौंद कर रख देती है ? वह शक्ति क्या है ? राजेश जैसा जीनियस भी साफ साफ न सोच सका था। लेकिन उसने इतना जरूर महसूस किया कि कुसुम इसलिए रौंदी गयी है क्योंकि इसके सामने इसके सिवा कोई चारा न था। राजेश इसे छोड देता छोड तो वह देता ही, तो इसका क्या होता यह कहाँ जाती क्या करती ? एक मर्द के अलावा एक लडकी के लिए कहाँ जगह है, चाहे वह मर्द बाप हो, भाई हो, पति हो या प्रेमी हो या और कुछ नहीं तो सिर्फ उसके साथ मजा उडानेवाला ही हो। मर्द न जाएँ, तो बेचारी रंडियाँ भी भूखी मर जाएँ। उसे आश्चर्य हो रहा था कि कि यह मर्द की महान शक्ति का गुर उसकी समझ में अब तक क्यों न आया था ?

लग रहा था कि कुसुम अब सचमुच सो गयी थी। राजेश ने ध्यान से सुना उसकी व साँसें नींद की ही थीं। तब उसने सोचा, अब उसे भी सो जाना चाहिए। अब तो कुसुम की ओर से डर की कतई कोई बात रह ही नहीं गयी थी। वह कुसुम राजेश इस निर्णय पर आखिर पहुँच ही गया, हमेशा हमेशा के लिए मर गयी और यह कुसुम बिल कुल नयी है जिसे अपनी स्थिति का ठीक ठीक एहसास हो गया है। यह दुलहिन बनकर भी अपने दुलहे से कुछ नहीं चाहती, कुछ नहीं चाहेगी एक कठपुतली की तरह सिर्फ नाचेगी।

अब वह सचमुच बिलकुल ही आश्वस्त होकर सोने की कोशिश करने लगा। नीला या कुसुम के साथ शादी के बाद ऐसी आश्वस्तता उसे कब मिली थी ? सोने की ऐसी आजादी उसे किस रात मिली थी ? आज रात उसने सचमुच एक आजाद आदमी की तरह अँगडाई ली

और पाव फला दिये। कितनी अच्छी नींद आएगी आज की रात ! आह ! कितने दिन हो गये थे उस ठीक से सोये हुए। भगवान ! तेरा लाख लाख धन्यवाद कि तूने यह रात दिखायी ! और वह भगवान की प्रार्थना करने लगा उसका मन इस समय आप ही कितना एकाग्र स्थिर और शान्त हो गया था। मामाजी की ही तरह वह आँख मूद कर, ध्यान लगाकर श्लोक पर श्लोक मन ही मन पढने लगा। उसकी प्रार्थना देर तक चलती रही। अन्त म उसने फिर बार बार भगवान को धन्यवाद दिया और बडी ही इमानदारी, हमदर्दी और कृतज्ञता के साथ भगवान के सामने ही उसने वादा किया कि अब वह कुसुम को कभी भी कोई कष्ट न होने देगा वह उसे कभी कभी स्पर्श भी करेगा, सहलाएगा भी, अपने अक मे दबाएगा भी, चूमेगा भी और चाटेगा भी जसे कि वह बचपन मे कुसुम के साथ पाक मे किया करता था। भगवान ! उसके बस मे जो है वह करेगा, ताकि कुसुम प्रसन्न रहे।

और अब वह सोने लगा। नीली बत्ती जैसे ठडक, खामोशी और सकून की पुडिया उडा रही थी। पलको पर उसका कोमल दबाव कितना भला लग रहा था एक सरन के यहा भी नीली बत्ती थी नहीं-नहीं, अब वह कुछ भी न सोचेगा कुछ भी नहीं, वह अतीत की सारी बातें भूल जाएगा और एक नयी जिन्दगी की शुरुआत करेगा।

सचमुच बडी जल्दी उसे नीद आ गयी, बडी ही गहरी नीद। उसकी नाक घडर घडर बजने लगी।

कुसुम ने करवट बदली, तो उसका दाहिना हाथ आप ही राजेश के गले म पड गया। उतनी गहरी नीद म भी उस हाथ के अपने गले मे पडने से राजेश ऐसे चौंक पडा, जैसे वह किसी लडकी का हाथ न होकर, साँप हो। उसका रोम राम सिहर उठा और मन मे एक सनाका हो गया। लेकिन वह हाथ, उसने जल्दी ही महसूस कर लिया, बडा ही ठडा और बेजान सा था। उसे लगा कि शायद कुसुम के अनजाने ही नीद म उसका यह हाथ उसके गले पर आ पडा था। उसने सोचा कि वह कुसुम को जगा दे, तो जागते ही वह अपना हाथ हटा लेगी।

उसने धीरे से पुकारा, "कुसुम ! कुसुम !" लेकिन कोई जवाब नहीं। कोई हरकत नहीं। कुसुम की सासें वैसे ही चल रही थी। अब राजेश क्या करे ? वह हाथ उसके गले म फन्दे की तरह पडा हुआ था और जैसे उसकी सास घुटने लगी थी। कुसुम जाग जाती और खुद अपना हाथ न हटाती, तो वह उसे वह हाथ हटाने का हुक्म देता। तब तो फरमाबरदार कुसुम जरूर ही अपना हाथ हटा लेती। उसने फिर एक बार जरा जोर म पुकारा कुसुम ! कुसुम !

फिर भी कोइ जवाब नहीं, कोई हरकत नहीं। राजेश अब क्या करे ? कैसी गहरी नीद है कुसुम की ! दो बार वह उसे पुकार चुका था और वह न जगी थी। क्या वह उसे कही से हिलाकर जगाए ? कुसुम के शरीर का स्पश करे ! वह जरा हिचका। लेकिन तभी उसे खयाल आया, इस कुसुम को तो वह स्पश कर सकता है, सहला भी सकता है, अक म भर भी सकता है, चूम भी सकता है। अभी तो उसने भगवान के सामने बडी ही इमानदारी से उसने अपने गले पर पडे कुसुम के हाथ की ओर अपना हाथ बढाया और धीरे से उसे अपनी उगलियो म हटाने लगा। लेकिन वह हाथ हट ही न रहा था, जरा हिल भी नहीं रहा था। तो अब वह उसके हाथ को पकड कर हटाये क्या ? यह कभी नीद है कुसुम की ? अगर उसकी सासो की आवाज वह न सुनता और ऐसा ठडा, बेजान सा हाथ उसके गले पर पडा होता तो वह समझ लेता कि कुसुम मर गयी है। लेकिन कुसुम मरी नहीं है उसकी सासें बता रही है। वह सोयी है बडी गहरी नीद सोयी है, जाने कितने दिनो की न सोयी, थकी, हारी कुसुम को आज रात सोने को मिला है। हाथ पकडकर हटाना उसे ठीक न लगा। इसका तो मतलब होता कि कुसुम का वैसे हाथ रखना भी उसस पसन्द नहीं था। और जोनियस राजेश को वह हटाने की एक बहुत ही अच्छी तरकीब सूझ गयी। वह हैरान था कि इतनी अच्छी तरकीब उसे पहले क्या न सूझी थी ? वह हाथ को ही हटाने की क्यो सोच रहा था वह खुद भी तो अपनी गर्दन उस हाथ से हटा सकता था। वह जरा पीछे हटेगा तो वह हाथ आप ही नीचे गिर जाएगा। और उसने खुद हटने

की कोशिश की, तो उसका शरीर तो हट गया, लेकिन सिर न हट पाया और जब उसने यह महसूस किया कि उस हाथ की फांसी उसकी गर्दन में अब कुछ ज्यादा ही कस गयी थी तो उसकी रूह फना हो गयी। वह अनजान ही चीख सा पड़ा—कुसुम ! कुसुम !

—आज्ञा दीजिए, पति देव !

वह धीमी, शान्त और ठंडी आवाज थी ! लेकिन राजेश को लगा कि जैसे अचानक बिना बादल के आसपास में बिजली कड़क उठी हो। वह हफर-हफर हाँफने लगा। उसकी जान गले में आ गयी जिसपर कुसुम का हाथ जैसे तलवार की तरह आ खड़ा था। फिर राजेश ने अपने को सँभाला और किसी तरह अपने गले से आवाज निकालकर कहा—यह हाथ हटाओ, कुसुम !

—क्या, पति देव ? क्या आज शादी की पहली वर्षगाँठ के अवसर पर भी मैं अपने पति देव के गले में अपनी बाँह नहीं डाल सकती ?

—डाल सकती हो, कुसुम, क्यों नहीं डाल सकती हो ?

—फिर ?

—बात यह है, कुसुम, कि तुम बहुत थकी हुई हो न ! मैं भी बड़ा थका हुआ हूँ, कुसुम। मैंने सोचा था, आज हम आराम से खूब सो लेना चाहिए। गले में हाथ डालने से साँस लेने में तकलीफ होती है न। देखो, मैं कितनी गहरी नींद सो रहा था। लेकिन तुम्हारा हाथ मेरे गले पर पड़ते ही मेरी साँस घुटने लगी थी और मेरी नींद खुल गयी थी। तुम्हारी नींद भी तो खुल गयी न ?

—दुलहिन को नींद कहाँ आती है, पति देव ?

—तो तुम सोयी नहीं थी ?

—नहीं, पतिदेव मैं तो इन्तजार कर रही थी कि आज

—कुसुम !—अब की सचमुच राजेश चीख पड़ा। उसके चौदहो तबक रौशन हो उठे। उसका रोम रोम काँप उठा, जैसे कि साक्षात् मृत्यु उसके सामने आ खड़ा हुई हो।

—सुहागरात को अपनी दुलहिन के पास लेटा दुलहा क्या कभी

इस तरह चीखता ह पति देव ?—कुसुम की वही धीमी, शान्त और ठंडी आवाज आयी,—आइए, हम कुछ मीठी मीठी बातें करें—आज हमारे स्वप्न साकार हुए हैं हम एक दूसरे से कितना प्रेम करते थे

वह पाक वह मुराद का पेड़ लेकिन वह चुडल नीलिमा फिर भी क्या हमारा प्रेम मरा था पति देव ? आपने आखिर उसी प्रेम के कारण नीलिमा को छोडा था वह मेरे प्रेम की परीक्षा थी न, पतिदेव ? पार्वती की तरह कितनी लम्बी तपस्या के बाद मेरे शिव मुझ पर प्रसन्न हुए थे। मेरी मा के शव पर हमारे ब्याह का वह मंडप मैं आप से मिलने में एक क्षण की भी देर बर्दाश्त न कर सकती थी प्रियतम ! मुझे न लाज थी न हया जिसे इतनी कड़ी तपस्या करके पाया था आप समझ ही सकते हैं, प्रियतम मैं कैसी बावली हो गयी थी ! लेकिन आप आप तो जैसे आज की ही रात की तरह सच बताइए प्रियतम ? क्या आपको मुझसे मिलने की बिलकुल उत्कंठा न थी ? ओह ! आप तो कोई जवाब ही नहीं दे रहे हैं। आपकी आखें इस तरह क्या निकली पड रही हैं, पतिदेव! आपको कोई कष्ट हो गया ? आपकी प्रियतमा ने आपके गले में अपनी बाहें डाल रखी हैं और आपकी आखें ऐसी निकली पड रही हैं जैसे आपकी गर्दन में फांसी की रस्सी पड गयी हो ऐसा क्या, प्रियतम ? आप बताइए न ! मैं मैं तो आपको अपने कलेजे में समा लेना चाहती हूं और आप

रानेश ने महसूस किया वह कमरी बराबर कसती जा रही थी। उसकी आखें और भी निकलती जा रही थीं। और उसका मुंह फूल सा गया था।

—आपको यह क्या हो रहा है, पतिदेव ?—आप तो मुझसे कोई बात भी नहीं करते दूसरी लड़कियों से आप कैसी प्यारी प्यारी बातें करते हैं! लेकिन मुझसे मुझसे आप क्या डरते हैं पति देव ? पर मैं हरदम आप 'मौजी मौजी' पुकारते रहते थे। आप मुझे कभी क्यों नहीं पुकारते थे प्रियतम ? आपने अपनी शादी अपनी मौसेरी बहन से की थी कि मुझसे ? ओह आप तो मेरे इस सवाल पर ही बिगड उठे

थे, प्रियतम ! आपने कभी यह नहीं सोचा कि आपके प्रेम में तड़पती एक लड़की ओह ! आप तो मुझे अब ताड ही देना चाहते हैं जो लड़की ऐसी बात माता देवता' के लिए अपने मुंह से निकाले उसे आप अपने साथ कैसे रख सकते थे ? लेकिन जरा आप यह बताने की तो कृपा करें कि आप जैसा मर्द जान बूझकर एक लड़की से प्रेम करे और फिर उसके साथ शादी कर, तो उसे क्या सजा मिलनी चाहिए ? लेकिन आपको कौन सजा दे सकता है प्रियतम ? शक्ल-सूरत में आप भी एक मर्द हैं आपके दोस्त हैं आपके पास पैसा है इज्जत है आपके लिए वकील हैं कचहरी है आपको सजा कौन दे सकता है ? सजा तो मुझे मिलेगी न, पतिदेव, क्योंकि मैं एक ऐसी लड़की हूँ जिसने आप जैसे एक जीनियस के साथ प्रेम किया और जिसके साथ अपने शादी की ? तो आप मुझे सजा दिलाइए प्रियतम ! मुझे आप किसी गुण्डे के हवाले कर दीजिए पतिदेव ! अपने हाथ से ही मुझे जहर पिला दीजिए। मुझे अकेले बेहोश गाडी के डिब्बे में छोड दीजिए फिर भी मैं न मरूँ तो मुझे सडक पर पागल कुत्ते के बीच छोड दीजिए। मैं क्या कर सकती हूँ ? एक लड़की क्या कर सकती है? आप सब कीजिए सब कीजिए पतिदेव ! लेकिन आज मेरे सिर्फ एक सवाल का आप जवाब दे दीजिए ! आपने मुझसे शादी क्यों की ? आपने मुझे धोखा क्यों दिया ? बोलिए ! जवाब दीजिए, जीनियस महाराज !

तभी राजेश को यह एहसास हुआ कि उसके गले में पडी बांह की फसरी एक झटके से एकदम कस गयी हो। उसकी आँखें बाहर निकल आयीं, उसका मुंह खुल गया। पांव कांप उठे। सारे शरीर में जैसे ठंडी लहर दौड पडी हो

—आप क्या नहीं बोल रहे हैं, पतिदेव ? तो क्या आपकी खामोशी को मैं आपका इकरार समझूं ? लेकिन आप खुलेआम भी इकरार कर लें, तो आपको कौन सजा दे सकता है ? क्या रमन भैया आपको सजा दे सकते हैं ? क्या आपके दोस्त आपको सजा दे सकते हैं ? क्या कोई वकील आपको सजा दिला सकता है ! क्या कोई

कचहरी आपको सजा दे सकती है ? नहीं ? क्योंकि आप उनके नहीं एक लड़की के मुजरिम हैं, जिसकी ओर से लड़ने वाला कोई भी नहीं है। मैंने यह समझ लिया था, पतिदेव, अच्छी तरह से समझ लिया था। और इसीलिए रमन भैया का घर छोड़ते समय ही मैंने तय कर लिया था कि और कोई न दे मैं अपने मुजरिम को खुद अपने हाथों से सजा दूंगी।

—कू कू राजेश के घुटते से गले से एक आवाज़ निकली। वह हाथ-पाँव ऐसे पटकने लगा, जैसे उनका, उसके सिर से कोई सम्बन्ध ही न हो।

—बुलाओ अपने दोस्तों को ! अपने गुंडों को ! अपने वकीलों को ! जजों को ! इस समय उन्हें तुम नहीं बुला सकते, लेकिन मैं जानती हूँ, तुम्हारी दोजखी मिट्टी उन्हें बुलाएगी और उनसे कहेगी—'इस कुसुम ने कानून को अपने हाथ में लिया इसने अपने मुजरिम को खुद सजा दी यह कानून के सामने मुजरिम है ! तुम्हारे कानून ! मैं उन पर थूकती हूँ !

कुसुम कूदकर पलंग के नीचे उतर आयी और अपने शरीर के शादी के जोड़े को नोचने लगी।

□

लेखक की कुछ बहुचर्चित रचनाएं

• उपन्यास

धरती	४० ००
अंतिम अध्याय	३०-००
सती मैया का चौरा	५०-००
बांदी	२५-००
शोले	२०-००
आशा	२०-००
कालिंदी	२०-००
रम्भा	२०-००
गंगा मैया	२०-००
मशाल	२०-००
नौजवान	२०-००
उसका मुजरिम	२०-००
विक्षिप्ता	२० ००
सौदा	१०-००
एक आत्मकथा	१०-००
मालवा (गोर्की) अनू०	१०-००
मालती-माधव (भवभूति) रूपा०	२५-००

• कहानी-संग्रह

आंखों का सवाल	२० ००
महफिल	२०-००
सपने का अंत	२० ००
बलिदान की कहानियां	१० ००
मित्रो और अन्य कहानियां सं०	२०-००

• नाटक

चन्द वरदायी	२० ००

शीघ्र प्रकाश्य

मगली की टिकुली (कहानी संग्रह)

जोरावर (वृहद् उपन्यास)